निःशुल्क वितरण हेतु

कृति-1

कला की पाठ्यपुस्तक
कक्षा 6 के लिए

0679

सत्र 2026–27

नाम ____________________

कक्षा ____________________

विद्यालय ____________________

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, राजेंद्र सिंह ठाकुर, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ____________________

प्राक्कथन

कला शिक्षा भारतीय संस्कृति की अनुपम पहचान है। इसके सतत् शिक्षण से बच्चों के आंतरिक एवं बाह्य कौशलों का उत्कृष्ट विकास एवं सकारात्मक अभिव्यक्ति संभव है। कला शिक्षा जीवन के विविध पक्षों में कलात्मकता को पोषित करती है। यह भारतीय दर्शन में उल्लेखित पंचकोषों को पोषित कर मानव जीवन के प्रत्येक कार्य में आनंदानुभूति कराती है। जिससे बच्चों में उत्साह, जिज्ञासा, कल्पना, तर्क, विवेचनात्मक चिंतन और समालोचनात्मक चिंतन भी विकसित होता है। भारतीय संस्कृति के आधारित स्तंभ पंचकोष- अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञान मय कोष और आनंदमय कोष हैं, जो परस्पर दुगुने एवं तीव्र गति से पोषित होकर बच्चों के समग्र विकास का सुदृढ़ आधार बनते हैं।

स्कूली पाठ्यक्रम में कला शिक्षा में बच्चे "क्या और कैसे" सीखेंगे के उद्देश्य की पूर्ति हेतु NEP 2020, NCF-SE (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-स्कूली शिक्षा) एवं SCF-SE (राज्यीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-स्कूली शिक्षा) में दिशा निर्देश एवं सुझाव प्रस्तुत हैं | NEP 2020 के अनुसार कला शिक्षा को स्कूली शिक्षा में शामिल कर सभी बच्चों में कलात्मक अभिव्यक्ति विकसित करना, स्थानीय कलाओं को प्रोत्साहित करना एवं कला के विभिन्न रूपों की सराहना करने में सक्षम बनाना है।

कला शिक्षा के प्रभावी शिक्षण के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न आयु समूह में बच्चे कला कैसे सीखते हैं, बच्चों की विविधताओं, क्षमताओं के अनुरूप उन्हें कला गतिविधियों में संलग्न होने और सौंदर्य विकास के विकासात्मक चरण विकसित करने हेतु कला विषय वस्तु को अच्छी तरह से डिजाइन कर पाठ्यपुस्तक '**कृति-1**' का विकास किया गया है, जिसके माध्यम से बच्चों एवं शिक्षकों में कलात्मक कौशलों के प्रति दृष्टिकोण - विषय वस्तु का चयन, सामग्री संगठन की तकनीकें, कलात्मक अभ्यास, कला शिष्टाचार और नैतिकता, अंतः विषय अभ्यास को प्रोत्साहित किया जा सकता है। कला शिक्षा शास्त्र विभिन्न कला रूपों को जोड़ता है। बच्चों को स्थानीय संसाधनों, कलाकारों, कला और संस्कृति के सम्मान के साथ-साथ पूछताछ विश्लेषण, आलोचनात्मक चिंतन और सौंदर्य की सराहना करने के लिए भी सक्षम बनाता है।

सभी बच्चों में कला शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता, सौंदर्य एवं कला के विविध रूपों में सतत प्रवीणता विकसित करने हेतु कक्षा 6 की यह पाठ्यपुस्तक '**कृति-1**', NCERT की कला शिक्षा की पाठ्यपुस्तक '**कृति-1**' को आधार मानकर सर्वसमावेशी कक्षा व्यवस्था तथा आंशिक स्थानीय अनुकूलन के साथ विकसित की गई है। इस विषय को राज्य में औपचारिक रूप से शिक्षण के लिए पहली बार सम्मिलित किया गया है। जिसके कारण इसके शिक्षण में कुछ चुनौतियाँ शिक्षकों के समक्ष आ सकती हैं। परंतु उन्हें इसे अवसर के रूप में मानकर शिक्षकों एवं बच्चों में कलात्मक प्रवीणता को प्राप्त किया जा सकता है, जिसके लिए मैं सभी शिक्षकों को उनके बेहतर कार्य के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ।

यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में संगीत, दृश्यकला, नाटक और नृत्य की रसानुभूति के साथ कला के विषय क्षेत्रों की परिचयात्मक समझ भी विकसित करेगी, साथ ही विद्यार्थी कलात्मक प्रवीणता और स्थानीय कला संस्कृति के प्रति गौरवान्वित होंगे। इसी विश्वास के साथ यह पाठ्यपुस्तक '**कृति-1**' कक्षा 6 के सभी बच्चों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करती हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित SECRT, राज्य एवं स्थायी समिति के अध्यक्ष एवं सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इसे साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आशा करती हूँ कि यह पुस्तक कला शिक्षण की सभी अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

इसको परिष्कृत करने तथा भावी संशोधनों के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर सदैव आपके सुझावों को स्वीकृत करेगी।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है, जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं शताब्दी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। नई शिक्षा नीति में निहित चुनौतियों और सुझावों को आधार बनाते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में सभी स्तरों के पाठ्यचर्या क्षेत्रों को तैयार किया गया है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का उद्देश्य बुनियादी और आरंभिक स्तर पर बच्चों के पंचकोशीय विकास को सुनिश्चित करते हुए मध्य स्तर पर उनके विकासात्मक स्वरूप की ओर अग्रसर करना है। इस प्रकार, तीन वर्षों को समाहित करते हुए मध्य स्तर (कक्षा 6 से कक्षा 8 तक) आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो उनकी विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करें और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करें। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषयों को सम्मिलित किया गया है, जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं आरोग्य और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के बीच इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। यह निर्णायक भूमिका बच्चों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति के मध्य एक विवेकपूर्ण संतुलन स्थापित करेगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के मध्य उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों की तैयारी भी आवश्यक है।

कृति-1 की विषयवस्तु में, दृश्य कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच के कला रूप सम्मिलित हैं। कृति-1 विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता का पता लगाने, कौशल विकसित करने, स्वयं को गढ़ने और अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री में दृश्य और अन्य घटकों सहित समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली, हमारी संस्कृति में रची-बसी भारत की कलात्मक और सांस्कृतिक परंपराओं एवं मूल्यों को सम्मिलित किया गया है। सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिले, इसके लिए कलाओं में सभी जेंडर एवं विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों की प्रतिभागिता सुनिश्चित की गई है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी एकीकरण का उचित उपयोग करते हुए क्यू.आर. कोड के माध्यम से अतिरिक्त शिक्षण-अधिगम संसाधनों को पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है।

मेरे विचार से, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए कृति-1 पाठ्यचर्या के लक्ष्यों में सफल रही है— सर्वप्रथम, विषय और विषयवस्तु के उचित चयन के माध्यम से विद्यार्थियों में स्वाभाविक जिज्ञासा को बढ़ावा देना तथा रचनात्मकता, अन्वेषण और विभिन्न कला रूपों के अनुभवों हेतु विद्यालयी शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में परिकल्पित इस स्तर पर उनमें मुख्य दक्षताओं का विकास करने में यह पुस्तक सफल रही है। पाठ्यपुस्तक की इकाइयाँ और अध्याय सभी विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में समायोजित करने के उद्देश्य से तैयार किए गए हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और अभिव्यक्ति अभिप्रेरित होती है। यहाँ सुझाई गई प्रत्येक गतिविधि विद्यार्थियों को और अधिक सीखने के लिए उन्हें प्राकृतिक परिवेश, दिन-प्रतिदिन के कार्य या मानवीय गतिविधियों जैसे संसाधनों की खोज करने की यात्रा पर ले जाएगी। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी अमूल्य होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं, जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
जुलाई 2024

पुस्तक के बारे में

कृति-1, कला की पाठ्यपुस्तक है, जो आपको दृश्य और प्रदर्शन कलाओं के विशाल और रोमांचक संसार से परिचित कराएगी, जिसका उद्देश्य रचनात्मकता को विकसित करना, कला की विभिन्न विधाओं से विद्यार्थियों का परिचय करवाना और उनके कलात्मक कौशल को विकसित करना है। छठी कक्षा की इस पाठ्यपुस्तक में दृश्य कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच के विभिन्न कलात्मक पक्षों को समाहित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में निहित शिक्षा के लक्ष्यों, दक्षताओं एवं अधिगम के परिणामों पर आधारित कृति-1 विभिन्न कलाओं में सृजनशीलता को समझने की पुस्तक है। इसमें अनेक व्यावहारिक गतिविधियाँ और प्रेरक परियोजनाएँ दी गई हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी अपने आस-पास की गतिविधियों में कला की भूमिका को समझने और उसकी सराहना करने में समर्थ होंगे। विद्यार्थी प्रसिद्ध कलाकारों के बारे में और उनकी रचनाओं, शैलियों और विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हुए स्वयं रचनाएँ करेंगे। प्रत्येक गतिविधि विद्यार्थियों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करेगी।

इस पुस्तक में दी गई पाठ्यसामग्री के अतिरिक्त विभिन्न गतिविधियों और अतिरिक्त संसाधनों को डिजिटल रूप में भी दिया गया हैं। इसके माध्यम से पाठ्यपुस्तक के आरंभ में, प्रत्येक अध्याय के आरंभ में एवं आवश्यकतानुसार अनेक स्थानों पर क्यू.आर. कोड दिए गए हैं। कला की विशेषता है कि यह विभिन्न रुचियों और वर्गों के लोगों से जुड़ सकती है। कोई सामान्य व्यक्ति भी कला के माध्यम से आनंद प्राप्त कर सकता है। हमारे देश की धरोहर, संस्कृति और परंपरा का एक लंबा इतिहास है, जहाँ विभिन्न कलाओं का अभ्यास किया जाता रहा है।

"कला मानवीय सौंदर्य एवं संवेदनशीलता पर केंद्रित होती है। सौंदर्यात्मक अनुभूति का तात्पर्य है, अपनी सौंदर्यबोध की क्षमता एवं विवेक के माध्यम से कला निर्माण की प्रक्रिया को परिष्कृत करना। कला व्यक्तिगत रूप से सौंदर्य, आकार, समरूपता, प्रारूप एवं संचालन द्वारा हमारी भावनाओं को जागृत कर अभिव्यक्त करने का माध्यम है। कलात्मक क्रिया में वैचारिक ज्ञान एवं प्रक्रियात्मक ज्ञान दोनों समाहित हैं जिसमें मनुष्य के सन्निहित संवेदनात्मक एवं भावनात्मक अनुभव सम्मिलित हैं।" (विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पृष्ठ 294)। इस प्रकार पुस्तक निर्माण प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में यह मूल विचार है कि विद्यार्थी कला की सभी विधाओं का आनंदित होकर अध्ययन करेंगे। इस पुस्तक के निर्माण

में यह ध्यान में रखा गया है कि पुस्तक का कोई भी अंश विद्यार्थियों के लिए बोझिल न हो और वे नए-नए प्रयोग करें। प्रत्येक विद्यार्थी कला के साथ अलग प्रकार से जुड़ता है। इसलिए विद्यार्थियों की कलात्मक गतिविधियों में शिक्षकों का भाग लेना लाभप्रद सिद्ध होगा।

कृति-1 की चार इकाइयाँ विशिष्ट रंगों के माध्यम से दर्शाई गई हैं—

☞ **दृश्य कला** के लिए पीला,

☞ **संगीत** के लिए नीला,

☞ **नृत्य** के लिए गुलाबी, और

☞ **रंगमंच** के लिए बैंगनी।

सभी इकाइयों को आनंददायी बनाने का विशेष प्रयत्न किया गया है।

'दृश्य कला' इकाई विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति को विकसित करने के लिए बनाई गई है, जिससे वे अपने दैनिक जीवन एवं स्थानीय परिवेश के अनुभवों के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करेंगे। इस इकाई में वे विभिन्न तकनीक और सामग्रियों के माध्यम से द्वि-आयामी एवं त्रि-आयामी गतिविधियों के कौशल से परिचित होंगे। सभी अध्यायों में, जहाँ विद्यार्थियों को सैकड़ों वर्षों से उपयोग में लाई गई विभिन्न सामग्रियों, सतहों और तकनीकों से परिचित कराया गया है वहीं उन्हें स्वयं खोजने और बनाने के लिए भी प्रेरित किया गया है।

प्रारंभिक अध्यायों में चित्रण के विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से विद्यार्थियों की अवलोकन क्षमता के विकास पर बल दिया गया है। इस पुस्तक में प्राकृतिक रंग बनाने की तकनीक, रंग-मिश्रण एवं रंग आभा और शेड के निर्माण, जैसी कुछ रमणीय गतिविधियाँ भी दी गई हैं। विद्यार्थी स्वयं की मुहर, चित्र, कागज की कला एवं फ्लिप बुक बनाने की प्रक्रिया के माध्यम से नए अनुभव प्राप्त करेंगे।

इस इकाई में कुछ भारतीय कलाकारों और कला परंपराओं की झलक भी सम्मिलित है, जिसे पुस्तक में उल्लिखित उदाहरणों के अतिरिक्त भी अन्य कलाकारों और कला परंपरा के विषय को समझाकर और भी समृद्ध किया जा सकता है। विद्यार्थी अनिवार्य रूप से अपने क्षेत्र की विभिन्न कला-विधाओं, परंपराओं और कलाकारों के बारे में विचार-विमर्श और अध्ययन करें। इस प्रकार की ज्ञान वृद्धि से विद्यार्थी प्रत्येक कार्य सौंदर्यबोध, रचनात्मकता एवं आलोचनात्मक विचार के साथ कर पाएँगे।

इस पाठयपुस्तक में 'संगीत' इकाई में ऐसी अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं, जिनसे विद्यार्थी अपनी कलात्मक यात्रा में संगीत के विभिन्न सिद्धांतों को सीखेंगे। यद्यपि खोज की इस यात्रा में कुछ तत्व सहज और परिचित और कुछ पूर्णतया नवीन होंगे।

इस पुस्तक का उद्देश्य सभी पाठकों को भारतीय संगीत की देशव्यापी और विविधतापूर्ण धरोहर से परिचित कराना है जिसको स्थानीय लोग व्यवहार में लाते हैं। हमारे जीवन में संगीत का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रतिवर्ष विभिन्न प्रकार के उत्सवों जैसे— राष्ट्रीय त्योहार, सामाजिक उत्सव, कोई धार्मिक आयोजन, फसल कटाई आदि में संगीत उनका एक अभिन्न अंग है। इन उत्सवों पर गाए जाने वाले गीत और बजाए जाने वाले वाद्ययंत्र पारंपरिक होते हैं एवं मनुष्य की भावनाओं और समाज से जुड़े होते हैं। नृत्य-संगीत प्रत्येक व्यक्ति को उनके दैनिक जीवन के विभिन्न अनुष्ठानों और संस्कारों से जोड़ता है।

प्रत्येक व्यक्ति गीत और नृत्य का आनंद लेता है। विद्यार्थियों द्वारा संगीत के अनुभव को और भी आकर्षक और विविधतापूर्ण बनाने के लिए इस पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त माता-पिता, दादा-दादी और सामाजिक सदस्यों द्वारा गाए जाने वाले अन्य गीत भी सीखे जा सकते हैं। विद्यार्थियों के सूक्ष्म एवं स्थूल कला कौशल को निखारने हेतु संगीत में काव्य एवं लय, वाद्ययंत्रों की ध्वनि, अंग संचालन, संगीत पर अभिनय और नृत्य के लिए पद संचालन आदि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। संगीत का आनंद विद्यार्थियों को एक तनावमुक्त परिवेश प्रदान करता है। संगीत की आत्मा लोरियों, दादी-नानी के गुनगुनाने, खेतों में गाते किसानों के गीतों, चिड़ियों की चहचहाहट, भवरों की गुंजन या बारिश की बूँदों के खिड़की पर टिप-टिप कर बरसने में बसती है। आइए, अब हम संगीत के उन रत्नों की खोज करने चलें, जो समस्त भारत में फैले हुए हैं।

'नृत्य' की इकाई विद्यार्थियों को भारतीय नृत्य के विभिन्न स्वरूपों की विस्तृत झलक देगी। यह इकाई भारतीय लोकनृत्य का ज्ञानवर्धन करते हुए, विद्यार्थियों को छऊ अथवा यक्षगान, जैसे पारंपरिक नृत्यों से अवगत कराती है। यह इकाई विद्यार्थियों को धीरे-धीरे शास्त्रीय नृत्य के मूलभूत सिद्धांतों एवं तकनीकों से भी परिचित कराएगी। यह इकाई नवरसों के माध्यम से विद्यार्थियों को भावाभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करेगी।

हस्तमुद्राओं को भी सांकेतिक भाषा के लिए उपयोग में लाया गया है जिससे विद्यार्थियों को अवगत कराया जाएगा। यह इकाई नृत्य के माध्यम से जेंडर समानता पर भी ध्यान केंद्रित करती है तथा पाठ्यचर्या के एकीकृत पहलुओं पर भी विद्यार्थियों को अतिरिक्त जानकारी स्वयं प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

इस पाठ्यपुस्तक की 'रंगमंच' इकाई में रंगमंच के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक अध्याय रचनात्मक कौशल के विकास, कलात्मक अभिव्यक्ति के निखार एवं कला की समझ पर केंद्रित है। भाव की समझ एवं अभिव्यक्ति केवल कला के स्वरूपों के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में उचित भावनात्मक संतुलन बनाने के लिए भी अनिवार्य है।

इस इकाई के अध्याय, रूपसज्जा, वस्त्रसज्जा, रंगमंच, नाट्य लेखन एवं कठपुतली कला के तकनीकी सिद्धांतों से विद्यार्थियों को प्रायोगिक गतिविधियों के माध्यम से अवगत कराते हैं, जो प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी क्षमता को पहचानने एवं अपनी रुचि के क्षेत्र का चयन करने में सहयोग करते हैं। भारत की परंपरागत नाटक मंडली पर आधारित अध्याय निश्चय ही विद्यार्थियों को आकर्षित करेगा।

यह इकाई रंगमंच को एक सर्वांगीण दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए निर्मित की गई है, जो विद्यार्थियों को अन्वेषण, निर्माण और अभिव्यक्ति में उत्तरोत्तर संवर्द्धन का मार्गदर्शन करता है। रुचिकर अध्यायों एवं प्रायोगिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी अवश्य ही महत्वपूर्ण कौशल सीखेंगे और उनमें रंगमंच की विविधता की समझ का विकास होगा।

कृति-1 का अंतिम अध्याय सभी कला रूपों के एकीकरण पर आधारित है जिसका विषय है— पंचतत्व। इसमें दी गई गतिविधियाँ पंचतत्वों पर केंद्रित हैं, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न कला स्वरूपों में अंतर-अनुशासनिक दृष्टिकोण से परिचित कराया जा सके। पुस्तक के अंत में मूल्यांकन का प्रारूप दिया गया है, जिसमें सभी कलाओं के मूल्यांकन हेतु एक रूब्रिक दिया गया है।

कला कक्षा की संरचना

कला की कक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें विद्यार्थी खुलकर कला की विभिन्न गतिविधियाँ कर सकें, जैसे— नृत्य, नाटक, चित्रण, गायन आदि। भौतिक परिवेश में ये स्वतंत्रता एवं सादगी के तत्व अवचेतन मस्तिष्क के विचारों में स्वतंत्रता एवं सादगी उत्पन्न करते हैं। कला कक्षा उपयुक्त उपकरणों से सुसज्जित एवं सूचनाप्रद प्रदर्शन सामग्रियों से समृद्ध होनी चाहिए। शिक्षक, विद्यार्थी एवं सहपाठियों में पारस्परिक विचार-विमर्श अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कला समय सारिणी

सभी कलाओं को सीखने के लिए संपूर्ण अकादमिक सत्र में प्रति सप्ताह 40 मिनट के पाँच कालांश आवंटित करने की आवश्यकता है। 40–40 मिनट के दो कालांश या एक संयुक्त कालांश भी कला के लिए आवंटित किए जा सकते हैं, जिससे विभिन्न कला गतिविधियों को पूरा करने में सुविधा होगी।

ज्योत्स्ना तिवारी
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

1. महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(अध्यक्ष)**
2. मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी **(सह-अध्यक्ष)**
3. सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका* एवं *शिक्षाविद*
4. बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
5. शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर,* सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
6. सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा
7. शंकर महादेवन, *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई
8. यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू
9. मिशेल डैनिनो, *विजिटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर
10. सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.
11. चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
12. संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
13. एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई
14. गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.
15. रोबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम
16. प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17. दिनेश कुमार, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष,* योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18. कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19. रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य-सचिव)**

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

शंकर महादेवन, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई

योगदान

आराधना गुप्ता, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

चिंथु साची, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

ज्योति भट्ट, *भरतनाट्यम शिक्षक*, पूर्णपरामति, बेंगलुरू

दीपा श्रीधर, *विशेषज्ञ*, संगीत शिक्षा

प्रियदर्शिनी घोष, *विशेषज्ञ,* नृत्य कला

बिंदु सुब्रमण्यम, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

बिदिशा हाजरा, *सहायक आचार्य*, संगीत, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

मधुसूदनन पी.वी., *सहायक आचार्य*, कला शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

मालविका राजनारायण, *विशेषज्ञ,* दृश्य कला शिक्षा

राजश्री एस.आर., *वरिष्ठ परामर्शदाता*, कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

शर्बरी बैनर्जी, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *सहायक आचार्य*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्रीधर रंगनाथन, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

सिद्धि गुप्ता, *संकाय सदस्य*, सृष्टि मनीपाल इंस्टिट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नॉलाजी, बेंगलुरू

सुधनवा ए.के., *सहायक आचार्य*, रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरू

अनुवादक

कपिल शर्मा, *सहायक आचार्य*, नाट्यशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

पंडित विजय शंकर मिश्र, *लेखक*, संगीत एवं नृत्य विशेषज्ञ

रामनाथ झा, *आचार्य*, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

समीक्षक

अनुतोष देब, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *टी.जी.टी.*, आर्ट्स, (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय, गुवाहाटी

अनुराग बेहर, *सदस्य*, एन.सी.एफ.ओ.सी.

गोविंदराजु भारद्वाज, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और *निदेशक* एवं *आचार्य,* स्कूल ऑफ परफॉरमिंग एंड विजुअल आर्ट्स, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मञ्जुल भार्गव, *सह-अध्यक्ष*, एन.एस.टी.सी

रिम्सी खन्ना, *सहायक आचार्य*, कॉलेज ऑफ आर्ट्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

सदस्य समन्वयक

ज्योत्स्ना तिवारी, *सदस्य समन्वयक*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुकूलन समूह

संयोजक- व्ही.के तिवारी, कौस्तुभ चटर्जी, डॉ.ललित साहू

संपादन सहयोग- दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य), डॉ.ओ.पी.मिश्रा (सचिव, राज्य शिक्षा आयोग), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

विषय समन्वयक- श्रीमती प्रीति सिंह

सहयोग- श्रीमती मधुदानी, लखेश्वर साहू, द्रोण कुमार सार्वा, दिव्या सिंह परिहार, रुद्रप्रताप सिंह राजपूत डॉ.पुरुषोत्तम चंद्राकर, डॉ.पीसीलाल यादव,अशोक तिवारी, राकेश तिवारी

राज्य शिक्षा स्थायी समिति

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति, गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निरीक्षण समिति (एन.सी.एफ.ओ.सी.) के सम्मानीय अध्यक्ष एवं सदस्यों, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) कला के अध्यक्ष एवं सदस्यों और अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह के उन सभी सदस्यों का आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण तथा इसके विभिन्न विषयों को अंतिम रूप देने में अपना मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया है।

इस पाठ्यपुस्तक में जेंडर एकीकरण, समावेशन, मूल्यांकन आदि की समीक्षा के लिए परिषद् अपने संकाय के वरिष्ठ सदस्यों, सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; इंद्राणी भादुड़ी, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग और मिली रॉय, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग के प्रति आभारी है।

हम उन संस्थानों, संगठनों, व्यक्तियों को भी आभार ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने हमें इस पुस्तक के लिए उपयोगी लिखित सामग्री, चित्र, तस्वीरें, ऑडियो-वीडियो सामग्री आदि संसाधन प्रदान किए। इनमें संगीत नाटक अकादमी; कला उत्सव, रा.शै.अ.प्र.प.; सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र; भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्; बेंगलुरू के संस्थान- व्योम आर्टस्पेस एंड स्टूडियो थिएटर, अभिनय तरंग नाटकशाला, सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफोरमिंग आर्ट्स (सा.पा.), शंकर महादेवन संगीत अकादमी, सुनाद, बेंगलुरू; सुरभि थिएटर, हैदराबाद; नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली; राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय, नई दिल्ली; अजीम प्रेमजी फाउंडेशन; चिल्ड्रंस लिटल थिएटर, कोलकाता; एक तारा; दी मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (दी क्रॉसबी ब्रॉउन कलेक्शन ऑफ म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट्स), न्यूयॉर्क; 'बैक टू स्कूल' प्रोजेक्ट 2023–24 ऑफ यूरोपियन यूनियन डेलीगेशन इन इंडिया बाय दिल्ली स्ट्रीट आर्ट; इंडियन म्यूजिक एक्सपीरीयन्स, , बेंगलुरू; श्रीधर रंगनाथन, सी.ई.ओ. एवं सह-संस्थापक, शंकर महादेवन संगीत अकादमी, वाणी हेमीज; सा.पा. से अनुषा चेलअप्पा एवं क्षितिज कश्यप; अलोका कानुनगो; अर्पिता वेंकटेश; संजना घोष; देबांजलि बंदोपाध्याय; अनुपमा होस्केरे (पद्म श्री); धातु कठपुतली थिएटर, बेंगलुरू; शतावधानी आर. गणेश (प्रसिद्ध विद्वान) सम्मिलित हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् अंबि सुब्रमण्यम, *वायलीन प्रतिपादक*, *संगीतकार*, शिक्षक एवं सह-संस्थापक, सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफोरमिंग आर्ट्स (सा.पा.); जयंती कुमारेश, *वीणा प्रतिपादक*, शोधकर्ता एवं

शिक्षक; विदुषी तारा कीनी, सलाहकार, शंकर महादेवन संगीत अकादमी, पाठ्यक्रम निर्माण, संगीत शिक्षा एवं भारतीय धरोहर संचार की विशेषज्ञ; शिवांगी पुरोहित, *नृत्य शिक्षिका*, केंद्रीय विद्यालय, आर.के. पुरम, सेक्टर 2, नई दिल्ली के सहयोग की सराहना करती है। परिषद् *प्रधानाचार्या*, मॉर्डन स्कूल, बाराहखंबा रोड, नई दिल्ली को कार्य में संलग्न विद्यार्थियों के फोटो लेने की अनुमति देने के लिए आभार व्यक्त करती है।

हम कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग में कार्यरत *वरिष्ठ अनुसंधान सहचारि* प्रतीक रंजन झा (संविदा), विवेक कुमार, अजय कुमार; *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* पुष्पिता मित्रा, ऋचा शर्मा, नेहा सिंह, दीपक कुमार ठाकुर, शैलेन्द्र कुमार; *टंकणकर्ता,* शिवम गौतम के सराहनीय योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं।

परिषद् इस पुस्तक के संपादन के लिए प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); अनुपमा भारद्वाज, *सहायक संपादक* (संविदा); संविदा पर कार्यरत *प्रूफ रीडर* आफरीन; राहिल अंसारी; सियाराम मीणा के प्रति आभार व्यक्त करती है। पुस्तक को अंतिम स्वरूप प्रदान करने के लिए परिषद् पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी प्रकोष्ठ एवं पूनम डोबरियाल *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), प्रकाशन विभाग के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

प्यारे बच्चो

आपके हाथ में कक्षा 6 की कला की पाठ्यपुस्तक 'कृति – 1' है। कृति – 1, आप सभी के अंदर रचनात्मकता की जिज्ञासा जाग्रत कराने के उद्देश्य से बनाई गई है। आप जीवन के गत वर्षों में भी रचनात्मक रहे हैं। अब आप अपनी विद्यालयी शिक्षा के अगले स्तर में प्रवेश कर रहे हैं, जहाँ सीखने और प्रयोग करने के लिए बहुत कुछ है। यह पुस्तक आपको अपने आस-पास के परिवेश, पर्यावरण, लोगों और समाज के प्रति अधिक संवेदनशील बनाएगी।

जैसा कि आपने पिछली कक्षाओं में अनुभव किया है, कला के अनेक रूप हैं; आपको नृत्य करने, वाद्ययंत्र बजाने अथवा सुनने, लिखने, चित्र बनाने, पेंटिंग करने, मिट्टी और कागज के मॉडल बनाने, गाना गाने, नाटक, नकल करने और एनीमेशन आदि जैसी सृजनशील गतिविधियों में निश्चित रूप से आनंद आया होगा जिन्हें आप अपने दैनिक जीवन में, विद्यालय में, घर पर या यात्रा करते समय पसंद करते होंगे। आप अपने आस-पास कुछ देखते और अनुभव करते हैं, जैसे — अलग-अलग मौसम, प्रकृति बदलाव, पत्तों का सरसराना, फूलों में अनेक रंग और बनावट, मधुमखियों का भिन्नभिनाना, बगीचे में घूमती रंग-बिरंगी तितलियाँ, रेलगाड़ियाँ, हवाई जहाज, घर के दैनिक कार्य करते लोग इत्यादि, और इन पर आप विचार करने लगते हैं। ये आकर्षक घटनाएँ हैं, जो हमें सृजन करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। ये हमें यह सोचने के लिए भी बाध्य करती हैं कि यह सब क्या, कब, कैसे, क्यों होता है!

भारत की धरती हजारों वर्षों की मानव सभ्यता और शिक्षा-संस्कृति की साक्षी रही है। कला हमारे आस-पास चारों ओर है और हमें आंनदित करती है, चाहे हम सृजन कर रहे हों या उसका अनुभव, कला हमारे जीवन को और भी सुंदर बना देती है।

आप सभी के अंदर एक कलाकार है, जो बाहर आकर कुछ करने और बनने के लिए उत्सुक है। रचनात्मक बनने और कलात्मक सृजन के लिए आपको अवलोकनशील, काल्पनिक और संरचनात्मक होना होगा।

'कृति – 1' में आप उत्साह और आनंद से परिपूर्ण, चार कला रूपों का अनुभव करेगें और सीखेंगे। आप अपने मित्रों, शिक्षकों और परिवार के साथ प्रतिदिन कुछ नया सृजन करेंगे।

कला की कक्षा आरंभ करने से पहले प्रार्थना

प्रायः कलाकार प्रदर्शन शुरू करने से पहले निम्न श्लोक का उच्चारण करते हैं। कला की कक्षा आरंभ होने पर इसे ऊँचे स्वर और अंग संचालन के साथ गा सकते हैं —

आङ्गिकं भुवनं यस्य, वाचिकं सर्व वाङ्मयम्।
आहार्यं चन्द्र तारादि, तं वन्दे सात्त्विकं शिवम्॥

अर्थ

जहाँ भौतिक शरीर ब्रह्मांड है,
वाणी या गीत सभी ध्वनियों का सार है,
अलंकार चंद्रमा और सितारे हैं,
मैं उस परम दिव्य परमेश्वर को नमन करता हूँ।

आप जिन चार कला रूपों का अध्ययन कर रहे हैं वे सभी एक-दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हैं —

आंगिक — शरीर के अंगों का संचलन, मुख और शारीरिक अंगों से किसी भाव को प्रकट करना।

वाचिक — संवाद, पाठ, गान और गीत आदि।

आहार्य — रंग, वेशभूषा, अलंकरण आदि।

सात्विक — कलाकार और प्रेक्षकों के लिए भाव स्थितियों और आध्यात्मिक अनुभवों को व्यक्त करना।

यह लगभग हजार वर्ष पूर्व आचार्य नंदिकेश्वर द्वारा लिखित ग्रंथ अभिनय दर्पण में उल्लेखित एक श्लोक है। आप क्यू.आर. कोड को स्कैन करके वीडियो के माध्यम से इसके विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

विषय-सूची

आमुख .... *v*

पुस्तक के बारे में .... *vii*

प्यारे बच्चो .... *xviii*

दृश्य कला

1. वस्तु-चित्रण 3
2. प्रारूपी चित्र में बदलाव 10
3. व्यक्ति-चित्रण 20
4. कागज के शिल्प 25
5. मुहर से छपाई तक 29

संगीत

6. संगीत एवं भाव 36
7. वाद्ययंत्र 47
8. ताल या तालम और राग या रागम 53
9. भारतीय संगीत में विविधता 61

10. गीत लेखन 70

11. संगीत और समाज 74

नृत्य

12. मेरा शारीरिक संचलन 79

13. नृत्य के माध्यम से अवरोधकों को तोड़ना 91

14. संचलन में सामंजस्य 97

15. भारतीय नृत्य 104

रंगमंच

16. भावों का अनावरण! 116

17. आइए, डिजाइन बनाएँ 129

18. 'कंपनी थिएटर' में 143

19. छाया और कठपुतलियों की कहानियाँ 147

20. भव्य समापन 156

21. कला रूपों का एकीकरण 159

22. मूल्यांकन 163

दृश्य कला

"रूपभेद: प्रमाणानि भाव लावण्य योजनम्।
सादृश्यं वर्णिकाभंगः इति चित्र षडंगकम्॥"

अर्थ

कला के छह अंग इस प्रकार हैं—

- रूप भेद
- प्रमाण
- भाव
- सौंदर्यबोध
- कलाकार की दृष्टि से समानता
- साधन एवं रंग का कुशल उपयोग

श्लोक स्रोत— वात्स्यायन रचित कामसूत्र की टीका जयमंगला (टीकाकार— यशोधर पण्डित)

शिक्षकों के लिए

कक्षा एवं संसाधन

1. विद्यार्थियों को आराम से बैठने और कार्य करने के लिए पर्याप्त स्थान दें।
2. कक्षा में पर्याप्त प्रकाश एवं वायु का आवागमन सुनिश्चित करें।
3. यदि मौसम उपयुक्त हो, तो बाहर बैठने का विकल्प प्रदान करें।
4. सामान्य कला सामग्री एवं उपकरणों की व्यवस्था करें।
5. कला सामग्री एवं विद्यार्थियों की कलाकृतियों को व्यवस्थित एवं सुरक्षित ढंग से संग्रहित करें।
6. कला प्रदर्शन के लिए प्रदर्शन-पट्ट या बोर्ड लगाया जाए जिस पर कलाकृतियाँ नियमित रूप से बदली जा सकें।
7. कला की समझ बनाने के लिए विद्यार्थियों को विशेष स्थलों तथा संग्रहालयों तक ले जाने की सुविधा प्रदान कीजिए। साथ ही विद्यालय में कला-कार्यशालाओं का भी आयोजन कीजिए।
8. प्रासंगिक कलाकृतियों, चलचित्रों (फिल्मों) एवं अन्य कला स्रोतों को दिखाने हेतु प्रोजेक्टर, कंप्यूटर, स्पीकर एवं अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ।

शिक्षण विधि

1. विद्यार्थियों को अपने विचार, भावना एवं जिज्ञासा व्यक्त करने हेतु प्रोत्साहित कीजिए। विद्यार्थियों की स्वाभाविक मौलिकता को उनकी कला में प्रतिबिम्बित होने दें।
2. ऐसी गतिविधियों को प्राथमिकता दें, जो विद्यार्थियों को कक्षा में अन्वेषण, परीक्षण, प्रयोग एवं संवाद करने का अवसर प्रदान करती हों।
3. विद्यार्थियों को बाहरी गतिविधियों, जैसे— संग्रहालय, कला दीर्घाओं,कला स्टूडियो, स्थानीय बाग-बगीचे, मेलों, त्योहारों या पर्वों, बाजारों इत्यादि का भ्रमण करने का अवसर प्रदान कीजिए। इससे विद्यार्थी अपने आस-पास के जीवन एवं संस्कृति का अनुभव ले पाएँगे।
4. विद्यार्थियों के कार्य करके सीखने हेतु स्थानीय कलाकारों एवं शिल्पकारों को साक्षात्कार अथवा कार्यशाला (वर्कशॉप) के लिए आमंत्रित करें।
5. विद्यार्थियों को कार्य की समाप्ति के पश्चात सफाई करने, उपयोग की गई सामग्री उचित स्थान में वापस रखने, उनकी देखभाल एवं रख-रखाव करने की सरल आदतें अपनाने के लिए प्रेरित करें।
6. बनाई हुई कलाकृतियों के चयन एवं प्रदर्शन में विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करें।
7. विद्यार्थियों की स्वत: अभिव्यक्ति के विकास हेतु श्याम पट्ट (ब्लैक बोर्ड) अथवा पुस्तिका में किसी भी आकार को पहले से चित्रित ना करें।
8. चित्रों को बनाते समय विद्यार्थी कला के विभिन्न तत्वों— आकार, स्वरूप, रंग, मूल्य, बनावट, स्थान इत्यादि का निरीक्षण करते हुए संज्ञान लें।
9. 'अभ्यास करें' शीर्षक के अंतर्गत, जो गतिविधियाँ दी गई हैं वे अभ्यास का ही विस्तृत रूप हैं और उन्हें विद्यालय के पश्चात, घर जाकर भी किया जा सकता है।

अध्याय 1

वस्तु-चित्रण

प्रथम अध्याय में आपका स्वागत है, जहाँ आपकी कलात्मक दृष्टि, वस्तुओं एवं वस्तु-चित्रण के माध्यम से एक कहानी व्यक्त करती है। इस अध्याय में आप वस्तु-चित्रण में जीवंतता प्रदान करना सीखेंगे।

कैसे?

- उनसे जुड़ना सीखकर
- उनसे संबंधित कहानियों की रचना करके
- रचनात्मक सृष्टि का अवलोकन करके
- उन पर पड़ने वाले प्रकाश और उससे उत्पन्न होने वाले रंग और छाया का अवलोकन करके
- भले ही वे किसी बिंदु से अलग दिखाई दें, परंतु अन्य दृष्टिकोण से वे कैसे आपस में लीन हो जाते हैं।

प्रत्येक चित्र आपके अवलोकन को अधिक गहन बनाएगा और आप अपने आस-पास की वस्तुओं को जैसा देखते हैं, उन्हें वैसा ही चित्रित कर पाएँगे।

प्रत्येक गतिविधि आपके द्वि-आयामी आकार पहचानने के कौशल को निखारेगी।

वस्तु-चित्रण

0679CH01

विभिन्न वस्तुओं को दर्शाती हुई एक विद्यार्थी की कलाकृति

आप समझ पाएँगे कि त्रि-आयामी आकृति बनाने के लिए वस्तुओं में किस प्रकार गहराई का आभास उत्पन्न किया जाता है।

आपको यहाँ 'फ्लिपबुक' बनाने जैसी रोमांचक गतिविधियाँ भी मिलेंगी। इसलिए आप अपनी रचनात्मकता को जागृत करने और कलात्मक प्रतिभाओं को निखारने के लिए तैयार हो जाइए।

वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से चित्रित करते हुए विद्यार्थी

गतिविधि 1— अपने परिवेश की विभिन्न वस्तुओं का अन्वेषण कर उन्हें चित्रित कीजिए

अपने आस-पास देखकर विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन कीजिए। प्रत्येक वस्तु किस सामग्री से बनी है? रुकें और विचार कीजिए कि वे एक विशेष आकार की ही क्यों हैं? क्या उनके आकार और रूप के पीछे कोई कारण है? वस्तुओं के आस-पास के स्थान का भी अवलोकन कीजिए। इधर-उधर घूमें और वस्तुओं को अलग-अलग दृष्ट कोणों से देखिए। कुछ समय के अवलोकन के उपरांत दो या तीन वस्तुएँ चुनिए, जिन्हें आप चित्रित करना चाहते हैं।

गतिविधि 2— वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से चित्रित कीजिए

प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग ढंग से चित्रण करता है। यह उनके भावों को एक अनोखा स्वरूप देता है। यहाँ कुछ विचार दिए गए हैं, जिनकी सहायता से आप प्रयास कर सकते हैं—

1. एक निरंतर रेखा का उपयोग करके कोई वस्तु बनाएँ। इसका अर्थ है कि आप वस्तु का चित्रण करते समय कागज से अपनी पेंसिल नहीं उठा सकते। अपने सहपाठियों से पूछें कि क्या वे इस चित्र से वस्तु को पहचान सकते हैं?
2. आप वस्तु के अलग-अलग भागों को चित्रित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, पानी की बोतल बनाते समय प्रत्येक भाग (ढक्कन, बोतल, इत्यादि) को अलग-अलग प्रकार से चित्रित कीजिए। उनके अनुपातों में अंतर पर ध्यान दीजिए।
3. एक ही वस्तु को तीन अलग-अलग कोणों से चित्रित करने का प्रयत्न कीजिए। अपनी जगह बदलें या वस्तु की जगह में बदलाव कीजिए। आप वस्तु को धरातल पर रख सकते हैं या उसे लटका भी सकते हैं। तीनों कोणों से तीन चित्र बनाने के बाद, उन्हें अपने सहपाठियों के साथ साझा कीजिए। उनसे पूछिए कि तीनों कोणों में से उन्हें कौन-सा कोण सबसे रोचक लगता है?

पहेली

बताओ मैं कौन हूँ?
जहाँ तुम जाओ, वहाँ मुझे पाओ।
न मेरा कोई आकार, न ही कोई रूप।
आप मुझे देख तो सकते, किंतु छू नहीं सकते।
बताओ मैं कौन हूँ?

पहेली का उत्तर— छाया

अभ्यास करें— अलग-अलग पदार्थों (लकड़ी, धातु, मिट्टी, प्लास्टिक, कपड़ा इत्यादि) से बनी कुछ घरेलू वस्तुओं के चित्र बनाएँ। इन्हें किसी प्रकाशित स्थान में रखें। उनके आकार का बाह्य रेखाचित्र बनाने के पश्चात छाया और प्रकाश वाले क्षेत्रों पर ध्यान दें। छाया के रंग एवं आकार पर ध्यान दीजिए और उन्हें भी अपने चित्र में सम्मिलित कीजिए।

छाया-प्रकाश प्रदर्शित करती हुई विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई कलाकृति

गतिविधि 3— प्रकाश और छाया

अपने सामने भिन्न-भिन्न वस्तुओं को रख लीजिए।

- प्रत्येक वस्तु के आकार, रंग, छाया और उन पर पड़ने वाले प्रकाश का अवलोकन कीजिए।
- उनकी छाया की आकृति क्या है?
- वस्तु के किस ओर छाया दिखाई दे रही है?

आइए, एक पेंसिल से कुछ प्रयोग करके देखिए। अपनी पेंसिल से एक लयबद्ध रेखा खींचें। रेखा बनाते हुए पेंसिल पर दिए गए दबाव को घटा-बढ़ा कर देखिए। क्या आप हल्के और गहरे रंग बना पाते हैं?

अभ्यास के पश्चात, एक नए कागज पर अपने समक्ष रखी वस्तुओं को चित्रित कीजिए। पेंसिल के माध्यम से वस्तुओं की रूपरेखा के भीतर हल्के से मध्यम और मध्यम से गहरा करते हुए रेखांकन कीजिए। वस्तु की छाया का निरीक्षण करें और इसे अपने चित्र में प्रदर्शित कीजिए।

क्या आप जानते हैं?

अमृता शेरगिल एक प्रसिद्ध आधुनिक भारतीय महिला कलाकार थी। उनका जन्म 1913 में हुआ था। उनकी माँ हंगरी से थीं और उनके पिता भारतीय थे। उन्होंने पेरिस में कला का अध्ययन किया। जब वह 21 वर्ष की थीं, तो वह भारत लौट आईं। उन्होंने अपने कैनवस, तेल रंग और ब्रश के साथ छोटे नगरों और गाँवों का भ्रमण किया। उनकी कलाकृतियों में गहरे मटमैले रंग हैं। वह भारतीय लोगों के साधारण जन-जीवन और स्थितियों को देखकर बहुत प्रभावित हुईं और इन विषयों पर आधारित कलाकृतियाँ बनाईं।

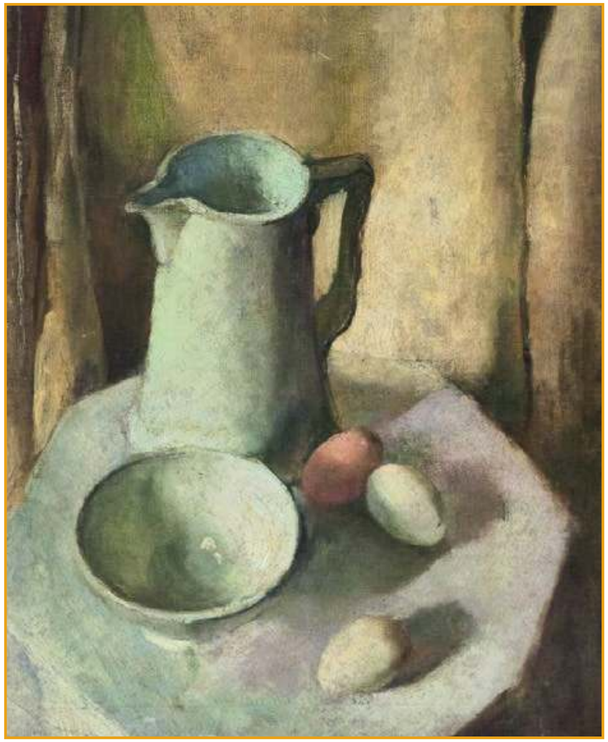

अमृता शेरगिल की चित्रकला में वस्तु-चित्रण

इन चित्रों में दिखाई देने वाली वस्तु, उनकी व्यवस्था, उन पर पड़ रहे प्रकाश और उससे उत्पन्न होने वाले रंग एवं छाया के बारे में विचार-विमर्श कीजिए।

गतिविधि 4— एक कलाकार की दृष्टि से

कलाकारों को वस्तुओं का अध्ययन करने का अभ्यास होता है। वे उन्हें एक समूह में व्यवस्थित करके रंग-चित्र, मूर्तियाँ और छाया-चित्रों के माध्यम से स्थिर वस्तु-चित्र (फोटोग्राफ) बनाते हैं। ऐसी कलाकृतियों को वस्तु-चित्रण (स्टिल लाइफ) कहा जाता है। वस्तु-चित्रण में, वस्तुओं के चयन और उन्हें कैसे व्यवस्थित किया जाए, इस पर बहुत विचार किया जाता है।

फूल, पौधे, सब्जियाँ, फल, खाद्य पदार्थ, कपड़े, उपकरण और अन्य घरेलू वस्तुएँ भी वस्तु-चित्रण में सम्मिलित हैं।

आप सोचते होंगे कि इसे 'स्टिल लाइफ' क्यों कहा जाता है? यदि किसी वस्तु में जीवन नहीं है, तो क्या वह 'स्टिल लाइफ' होगी?

'स्टिल लाइफ' या वस्तु-चित्रण कलाकृतियाँ ऐसी वस्तुओं को दर्शाती हैं जो 'स्थिर' हैं और हिलती नहीं हैं। कलाकृति बनाने की प्रक्रिया में, वस्तुओं को एक नया 'जीवन' मिलता है। सुप्रसिद्ध कलाकारों के बनाए गए 'स्टिल-लाइफ' अथवा वस्तु-चित्रण को देखिए और अपनी कक्षा में उन पर चर्चा कीजिए।

गतिविधि 5— स्वयं एक वस्तु-चित्र बनाएँ

चार से पाँच विद्यार्थियों का समूह बनाएँ और एक गोलाई में बैठें। परिधि के केंद्र में दो से तीन वस्तुएँ रखिए। बोतल, फल, धातु का ज्यामितिय प्रकार (कंपास), लकड़ी का फुटा (रूलर), कपड़े का टुकड़ा या कोई भी ऐसी वस्तु जो भी आपको रुचिकर लगे, उन्हें आप चुन सकते हैं। अपने समूह में चर्चा कीजिए कि वस्तुओं को किस तरह भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है। वस्तुएँ एक-दूसरे को स्पर्श कर सकती हैं या आप उन्हें पृथक-पृथक भी रख सकते हैं। सुनिश्चित कीजिए कि घेरे में बैठा प्रत्येक विद्यार्थी वस्तुओं की व्यवस्था को स्पष्ट रूप से देख सके।

जिन वस्तुओं का आप चित्रण कर रहे हैं उन पर ध्यान दें। उन्हें रेखांकित कर उनका वस्तु-चित्र बनाएँ।

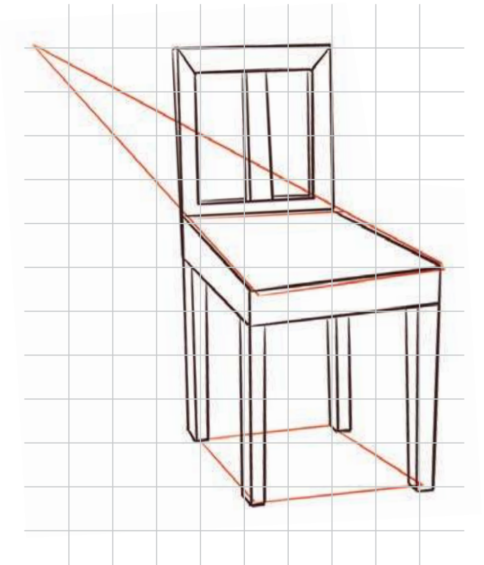

गतिविधि 6— फर्नीचर का चित्रांकन

विद्यालय और घर में आप किस प्रकार के फर्नीचर देखते हैं? फर्नीचर की कोई भी दो या तीन वस्तुओं को देखिए और उनका चित्र बनाएँ। अपने चित्रों की तुलना वास्तविक वस्तुओं से कीजिए। आपके द्वारा खींची गई सीधी रेखाओं, कोणों और आकृतियों की तुलना वास्तविक वस्तु में उपस्थित सीधी रेखाओं, कोणों और आकृतियों से कीजिए।

अपने बनाए वस्तु-चित्र में गहराई और त्रि-आयामी आभास लाने हेतु उनमें आवश्यक परिवर्तन कीजिए। इसे परिप्रेक्ष्य (Perspective) कहा जाता है। परिप्रेक्ष्य से वस्तु-चित्रण में एक त्रि-आयामी आभास उत्पन्न होता है और वस्तु चित्र ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह हमारे सामने हो।

छोटे-छोटे समूहों में अपने सहपाठियों के कार्यों को देखें और विश्लेषण करें कि किसके कार्य में परिप्रेक्ष्य है। उन रेखाओं, आकृतियों और रूपों की पहचान करें, जो परिप्रेक्ष्य को दर्शाने में सहायक हों।

अभ्यास कीजिए— भवन के विभिन्न भागों, जैसे— दरवाजे, खिड़कियाँ, पाइप, नलके, पंखे, बत्तियाँ इत्यादि का अवलोकन कीजिए और उनका चित्र बनाएँ।

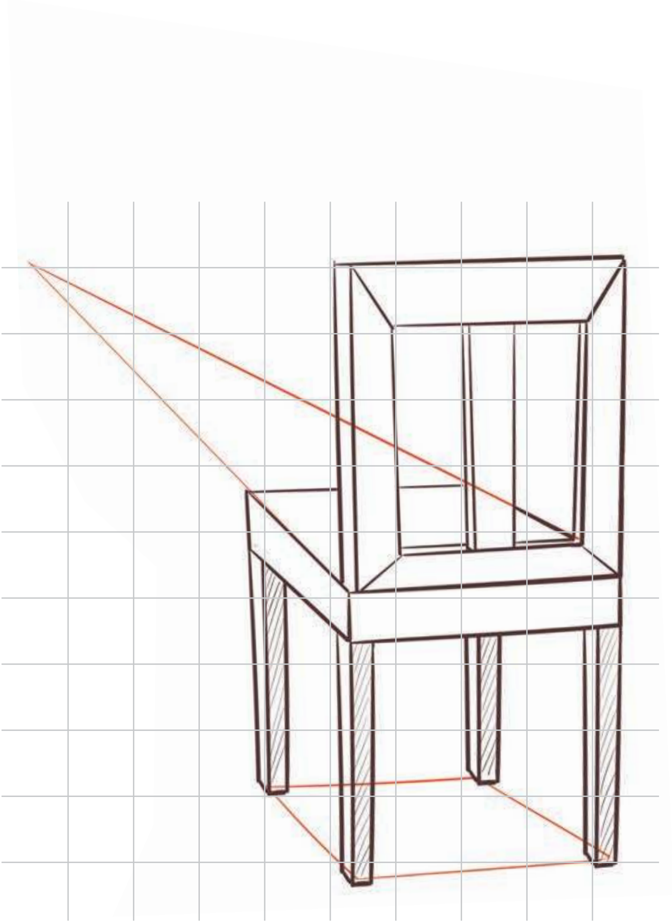

गतिविधि 7— फ्लिप-बुक बनाएँ

कितना रोचक होगा, यदि आप अपने चित्रों में वस्तुओं को गतिशीलता प्रदान कर सकें? हम एक फ्लिप-बुक की सहायता से ऐसा कर सकते हैं। फ्लिप-बुक बनाने के लिए निम्नलिखित निर्देशों का पालन कीजिए —

चरण 1

चरण 1— एक A4 कागज को 8 समान भागों में बाँट लीजिए। इन सभी को छोटी ओर से स्टेपलर का उपयोग करके एक साथ चिपका दीजिए। अब आपकी फ्लिप-बुक तैयार हो गई है।

चरण 2— फ्लिप-बुक के अंतिम पृष्ठ के दाहिने किनारे के पास कोई एक वस्तु बनाएँ। पेंसिल की सहायता से अपनी इच्छानुसार उसमें अन्य विवरण जोड़िए। जब आप अपने चित्र से संतुष्ट हों, तो उसे कलम से रेखांकित कर लीजिए।

चरण 2

चरण 3

चरण 4

चरण 5

चरण 6

चरण 7

चरण 3 – 6— अब आपके चित्र को गतिशीलता प्रदान करने का समय आ गया है। अंतिम पृष्ठ छोड़कर पहले वाले पृष्ठों पर रेखाचित्र दोहराएँ और चित्र की स्थिति में थोड़ा-सा परिवर्तन अवश्य कर लीजिए। इस चरण को तब तक दोहराएँ, जब तक की सभी पन्नों पर थोड़े से अंतर के साथ चित्र न बन जाए।

चरण 7— अपने अँगूठे की सहायता से फ्लिप-बुक को शीघ्रतापूर्वक पलटें। आप अपनी बनाई वस्तु को हिलते हुए देख पाएँगे।

अधिक गतिशीलता के लिए फ्लिप-बुक के पृष्ठों की संख्या बढ़ाएँ।

अध्याय 2

प्रारूपी चित्र में बदलाव

यह अध्याय आपको प्रकृति के चमत्कारों में लीन कर देगा। आप जीवन के विविध रूपों में सुंदर आकार, रूप, रंग, समानाकृति और संरचना के अन्वेषण के लिए घर से बाहर निकलेंगे। आप रेखांकन एवं चित्रों की गतिविधियों के माध्यम से इन विवरणों का अभिलेखन करना सीखेंगे।

आप स्वयं के लिए प्राकृतिक रंग बनाने की आकर्षक प्रक्रिया के साथ-साथ रंग-आभा (Tint) बनाने की तकनीक भी सीखेंगे। यह अध्याय आपको रचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रेरित करेगा और सृष्टि को देखने के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाएगा।

0679CH02

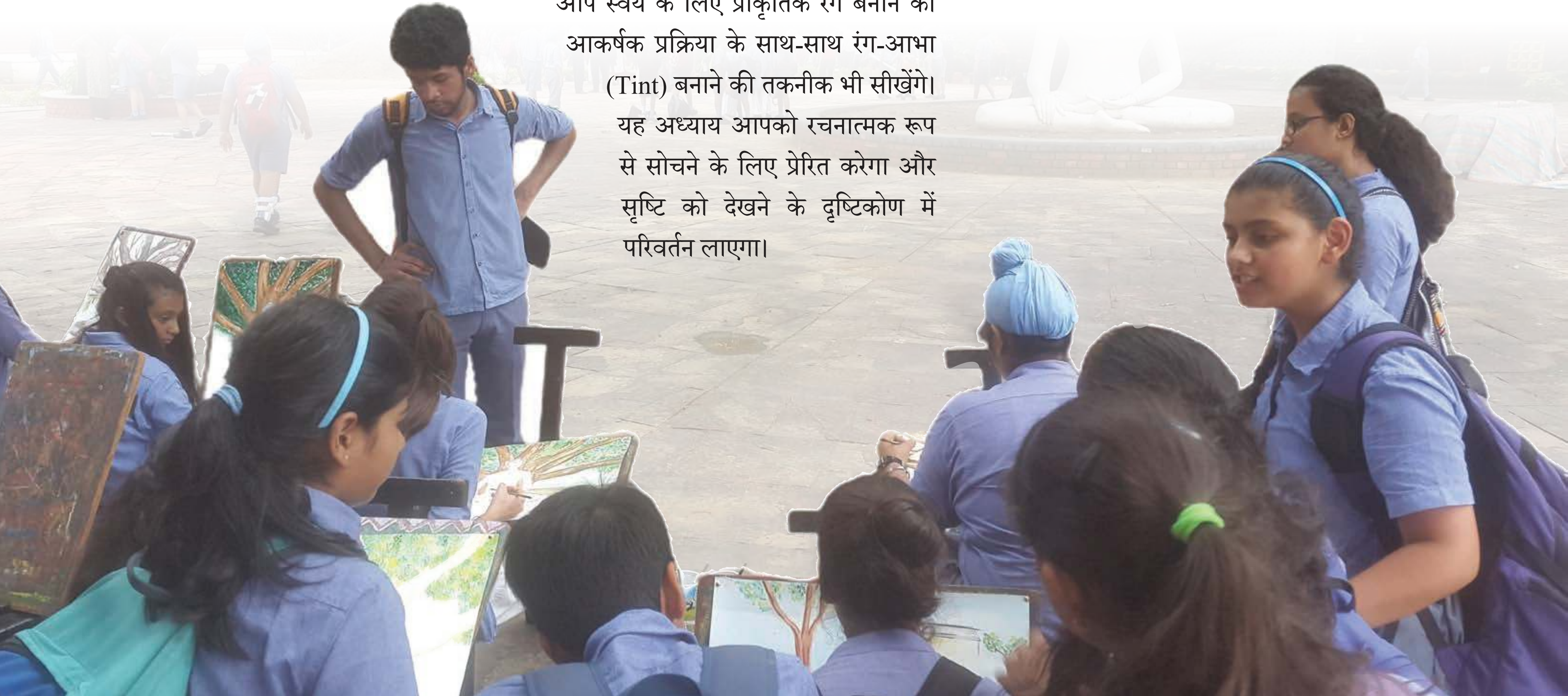

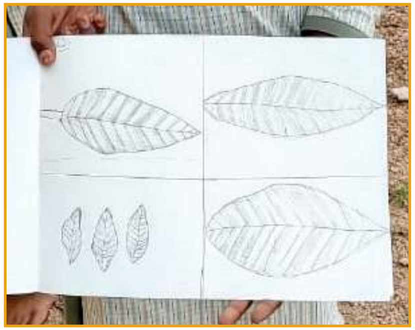

गतिविधि 1— प्रकृति भ्रमण

आप जब पेड़ों, पौधों, पहाड़ियों, नदियों, समुद्र और रेत से घिरे होते हैं, तो आपको कैसा लगता है? दो से तीन मिनट तक कल्पना कीजिए कि आप प्रकृति से घिरे हुए हैं। आप क्या-क्या देखते हैं? आप जब विभिन्न वस्तुओं का स्पर्श करते हैं, तो आपको कैसा अनुभव होता है? आप अपने पैरों के नीचे क्या अनुभव करते हैं? आप कितनी दूर तक देख सकते हैं? क्या कहीं कुछ है, जो हिल-डुल रहा है? आप किन ध्वनियों को सुन रहे हैं?

चार से पाँच विद्यार्थियों का छोटा-सा एक समूह बना लीजिए। अपनी कल्पनाओं को आपस में साझा कीजिए।

अपनी चित्र-पुस्तिका व पेंसिल लेकर आस-पास की वस्तुओं का अवलोकन करने घर से बाहर जाएँ।

1. आकाश की ओर देखें और इसकी विशालता का अनुभव कीजिए। आप जो भी रंग अथवा बादलों का आकार देख पा रहे हों, उन्हें एक जगह नोट कर लीजिए।
2. धरती को देखें। मिट्टी के रंग, विभिन्न प्रकार के पत्थर, कंकड़ और छोटी-बड़ी चट्टानों को देखें। उन्हें स्पर्श कीजिए और उनकी संरचना का अवलोकन करें। क्या वे चिकने, खुरदरे, ऊबड़-खाबड़, दानेदार या किसी अन्य बनावट के हैं?
3. एक ऐसी जगह खोजें, जहाँ कुछ पेड़-पौधे हों। पौधे को सौम्यता से स्पर्श करें और उसकी पत्तियों, तनों, छालों, फूलों, बीजों की फलियों और जो कुछ भी आप देखते हैं, उसकी संरचना का अनुभव कीजिए। उन संरचनाओं को चित्रित करने का प्रयास कीजिए या शब्दों के माध्यम से उन्हें लिखिए।
4. पत्तियों के आकार और दिखाई देने वाली सभी रेखाओं और समानाकृतियों को ध्यान से देखिए। ऐसी तीन पत्तियों का रेखांकन कीजिए, जिनके भिन्न-भिन्न आकार, रेखाएँ और समानाकृतियाँ हों। उनके रंगों को शब्दों के माध्यम से लिखिए।
5. किसी भी पशु, पक्षी या कीड़े को ध्यानपूर्वक देखिए। क्या वे बैठे हैं, सो रहे हैं, खड़े हैं या हिल-डुल रहे हैं? उनके उस स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास कीजिए।

एक समूह में एकत्र हों और अपने रेखांकन तथा अवलोकनों को साझा कीजिए।

अभ्यास कीजिए— एक पत्रिका (विज़ुअल जर्नल) आरंभ कीजिए। आप प्रतिदिन देखी जाने वाली विभिन्न वस्तुओं के चित्र बनाएँ।

गतिविधि 2— अध्ययन यात्रा

किसी संग्रहालय, कलाकार की शिल्पशाला या किसी ऐसे स्थान पर जाएँ, जहाँ कलाकार कार्य कर रहे हों। निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर अपनी टिप्पणियाँ लिखिए—

1. आप किस प्रकार की दृश्य-कलाकृतियाँ देखते हैं?
2. कलाकृति निर्माण में किन-किन सामग्रियों का उपयोग किया जाता है?
3. क्या ये कलाकार हैं? वे कौन-से उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करते हैं?
4. कलाकृतियों की रचना और उन्हें प्रदर्शित करने हेतु किसी स्थान की व्यवस्था किस प्रकार की जाती है?
5. आपने कौन-से नए विचार व अनुभव प्राप्त किए?

अपने अनुभवों के आधार पर चित्र बनाएँ। आप इन चित्रों का संदर्भ के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

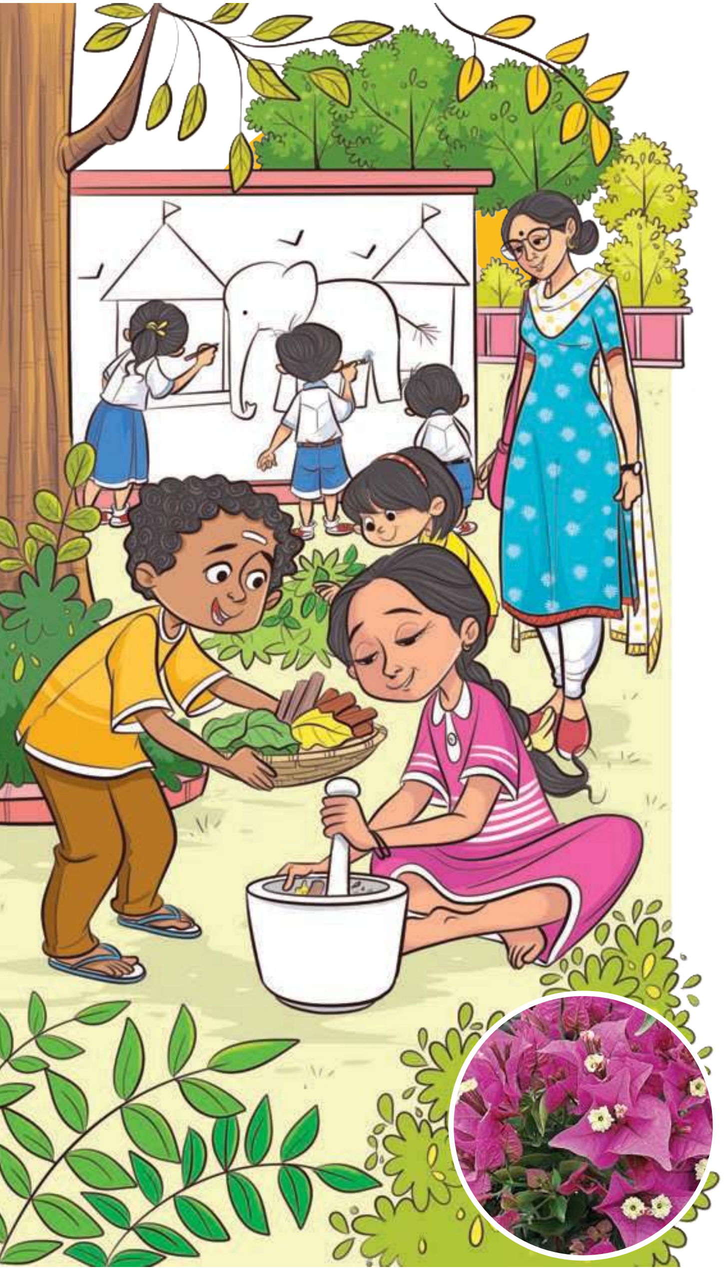

गतिविधि 3— प्राकृतिक रंग बनाएँ

क्या आपने कभी सोचा है कि रंग कहाँ से मिलते हैं? वे कैसे बनाए जाते हैं? आज हमारे पास तैयार डिब्बों में रंगीन पेंसिल, क्रेयोन और जल-रंग उपलब्ध हैं, किंतु पहले कलाकार किन माध्यमों का उपयोग करते होंगे?

आप जो भोजन करते हैं, उस पर विचार कीजिए। जब घर में दाल बनती है, तो उसे अधिक पीला बनाने के लिए कौन-सी सामग्री मिलाई जाती है?

हल्दी! आप घर पर इसे अपनी भाषा में क्या कहते हैं?

अब, उन अन्य खाद्य पदार्थों पर विचार कीजिए, जिन्हें आपने खाया है। उनमें से कुछ का रंग आपकी अँगुलियों, आपकी जीभ और यहाँ तक कि आपके कपड़ों पर भी दाग छोड़ सकता है।

इसी प्रकार फूलों का उपयोग भी रंग निकालने और बनाने के लिए किया जा सकता है।

पौधों के अतिरिक्त मिट्टी, पत्थर और खनिज भंडार से भी रंग बनाए जा सकते हैं। कलाकार रंग बनाने की इन प्रक्रियाओं का उपयोग विभिन्न कलात्मक उद्देश्यों के लिए करते हैं।

अपने भोजन में पाए जाने वाले कुछ ऐसे फलों, सब्जियों, पत्तियों और जड़ों की सूची बनाएँ, जिन्हें पीसने अथवा पकाने से रंग बनाए जा सकते हैं।

1. ____________________
2. ____________________
3. ____________________
4. ____________________
5. ____________________

आइए, स्वयं के लिए प्राकृतिक रंग बनाना सीखें

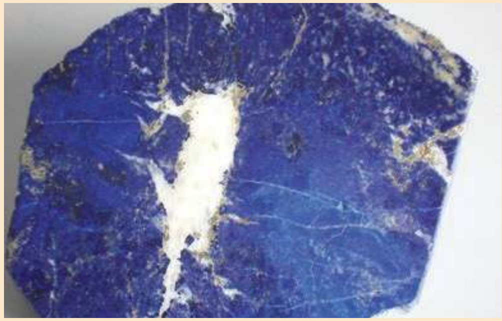

चरण 1— मिट्टी, खनिज, सब्जी, फूल, फल, जड़ें, कोयला इत्यादि से कच्ची सामग्रियाँ प्राप्त कर लीजिए। (चित्र में दिए गए कोयले व नीले 'लैपिस लजुली' के पत्थर को देखें)

चरण 2— अशुद्धियों को दूर करने के लिए प्राप्त किए गए रंगद्रव्य को बारीकी से पीसकर छान लीजिए।

चरण 3— इसमें सही अनुपात में एक बंधक पदार्थ अथवा बाइंडर मिलाएँ। इससे रंगों को उस सतह पर चिपकने में सहयोग मिलता है, जहाँ चित्रण किया गया है। अरबी गोंद (बबूल की छाल का रस), तेल, दूध, अंडे की सफेदी और अंडे की जर्दी इत्यादि कुछ प्राकृतिक बंधक पदार्थ हैं।

चरण 4— कलाकृति पर तैयार किए गए रंग लगाएँ।

गतिविधि 4— प्राकृतिक रंगों से कलाकृति बनाएँ

चरण 1— धरती अथवा पौधों से कुछ सामग्री प्राप्त कर लीजिए।

चरण 2— अपने शिक्षक और सहपाठियों के संग रंग तैयार करने की विधि पर चर्चा कीजिए तथा मिलकर रंग तैयार कीजिए।

चरण 3— बनाए गए रंगों के कितने प्रकार हो सकते हैं, इस पर प्रयोग कीजिए।

चरण 4— किसी एक रंग पर विचार कीजिए, जिसका आपकी कलाकृति में उपयोग किया जा सकता है?

चरण 5— प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके अपनी कलाकृति बनाएँ।

जब प्रत्येक विद्यार्थी की कलाकृति पूर्ण हो जाए, तब उन्हें कक्षा में प्रदर्शित कीजिए। अपनी-अपनी कलाकृतियों को शीर्षक प्रदान कीजिए और आपके द्वारा उपयोग की गई सामग्रियों का विवरण अंकित कीजिए।

आप अपनी कार्य-प्रक्रिया को दर्शाने वाले कुछ प्रारंभिक रेखाचित्रों या प्रयोगों को प्रदर्शित और साझा कर सकते हैं। प्रत्येक सहपाठी की कलाकृति में दिखाई दे रही प्रक्रिया और रंगों पर एक चर्चा कीजिए।

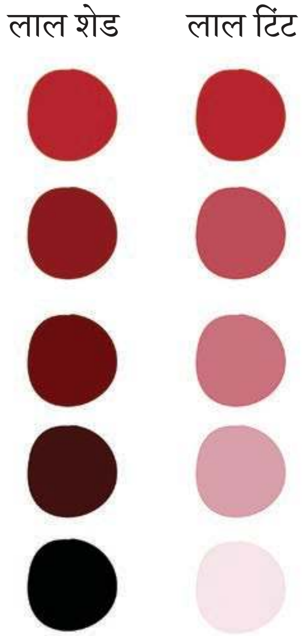

गतिविधि 5— रंग-आभा अथवा 'टिंट-शेड' का निर्माण

क्या रंग भी हमारी बदलती मनोदशा की भाँति बदल सकते हैं?

क्या आपने अनुभव किया है कि दिनभर में आपकी मनोदशा किस प्रकार परिवर्तित होती है? आप अपनी मनोदशा का स्मरण करते हुए उस पर पाँच मिनट चर्चा कीजिए—

1. जब आप विद्यालय के उपरांत घर जाते हैं तब आपकी मनोदशा कैसी रहती है?
2. रात्रि भोजन के समय आपकी मनोदशा कैसी रहती है?
3. सोने से पहले आपकी मनोदशा कैसी रहती है?
4. जब आप सुबह उठते हैं, तब आपकी मनोदशा कैसी रहती है?
5. अभी इस समय आपकी मनोदशा कैसी है?

मनोदशाएँ और अनुभूतियाँ क्षणिक होती हैं। वे समय के साथ परिवर्तित होती रहती हैं। किसी का अनुभव कठोर, तीव्र या कोमल हो सकता है।

रंग भी ऐसे ही होते हैं। हम उन्हें जीवंत, तीव्र, गहरा, हल्का, मृदु आदि बना सकते हैं।

रद्दी कपड़ों से बनाया गया एक कोलाज

विचार कीजिए! सूर्योदय व सूर्यास्त के समय आकाश में रंग किस प्रकार बदलते हैं?

धूप एवं नियमित धुलाई के कारण क्या आपने अपने कपड़ों के रंगों को क्षीण होते हुए देखा है? कुछ समय के बाद वे उजले से फीके या फिर गहरे से हल्के रंगों के हो जाते हैं।

चित्रकला में रंगों के इन अंतरों को टिंट और शेड कहा जाता है। हम किसी रंग का टिंट उसमें सफेद रंग मिलाकर बना सकते हैं। उसी प्रकार किसी रंग में काला रंग मिलाकर उसका शेड बनाया जा सकता है।

रंग + सफेद = रंग टिंट

रंग + काला = रंग शेड

रंगों से टिंट और शेड बनाना

आइए, अभ्यास कीजिए!

सामग्री— चित्र बनाने और उसे रंगने के लिए सादा कागज, जल-रंग, पोस्टर रंग, चूर्ण या पाउडर रंग — काला, सफेद तथा दो-तीन अन्य रंग।

विकल्प— पुराने समाचार पत्रों या पत्रिकाओं से रंगीन पन्ने निकाल लें और पन्ने की पच्चिकारी या मोजाइक बनाने के लिए विभिन्न शेड और टिंट ढूँढ़ें।

प्रकृति की रंग-पट्टिका अथवा पैलेट

प्रकृति में रंगों की विविधता को देखकर क्या आपको कभी आश्चर्य हुआ है?

बाहर निकलें और तीन ऐसी पत्तियाँ लाएँ, जो विभिन्न रंगों या शेड्स की हों।

आपको, जो भी निकटतम शेड दिखाई दे, उसे प्राप्त करने के लिए विभिन्न रंगों को मिलाने का प्रयास कीजिए।

विस्तार — टिंट और शेड का संयोजन

आपके द्वारा बनाई गई रंग-आभाओं और शेड्स को संदर्भ के रूप में उपयोग कीजिए। किसी संग्रहालय की वेबसाइट या सचित्र पुस्तकों से ऐसी कुछ कलाकृतियों के चित्र ढूँढ़ें जिनमें आपके द्वारा बनाई रंग-आभाएँ अथवा शेड्स उपस्थित हों। अवलोकन करें कि कलाकृतियों की रंग-आभा या शेड्स किस प्रकार हमारी भावनाओं और मनोदशाओं में बदलाव लाती हैं। इस अभ्यास को 4 से 5 भिन्न-भिन्न रंगों और उनकी रंग-आभाओं और शेड्स के साथ दोहराएँ। आपने मनोदशाओं और भावनाओं का अनुभव, रंग-आभाओं और शेड्स के साथ किया है, उनका एक संक्षिप्त विवरण लिखिए।

गतिविधि 6— कलाकारों के द्वारा उपयोग की जाने वाली सतहें और सामग्रियाँ

आप जानते हैं कि प्रकृति से रंग बनाए जाते हैं। कागज के आविष्कार से पहले कलाकार प्राकृतिक सतहों, जैसे— चट्टानों, गुफाओं की दीवारों, मिट्टी के पलस्तरों, ताड़ के पत्तों, लकड़ियों और कपड़ों पर चित्र बनाते थे।

विभिन्न त्रि-आयामी वस्तुओं और मूर्तियों को तैयार करने के लिए टेराकोटा, पत्थर, पशु की हड्डी और चमड़ी, लकड़ी, धातु और प्राकृतिक तंतुओं का उपयोग किया जाता था।

प्रत्येक सामग्री और विभिन्न सतहों के साथ कार्य करने के लिए विशेष उपकरणों एवं तकनीकों का विकास किया गया।

यदि आपके पास कागज उपलब्ध न हो, तो आप अपनी कलाकृति बनाने के लिए किस सामग्री और सतह का चयन करेंगे? स्वयं प्रयोग कीजिए और अपनी कलाकृति बनाएँ।

निम्नलिखित उदाहरणों को देखें। आप प्रागैतिहासिक काल से कलाकारों के द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और सतहों के विषय में जान सकते हैं।

चट्टान
की
सतह

भूमि के रंग

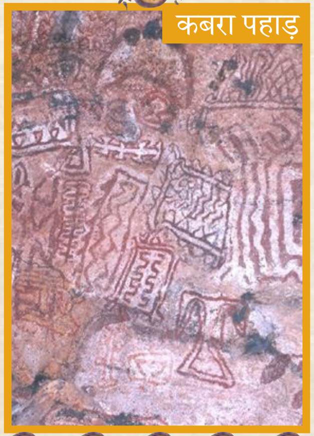

कबरा पहाड़

भित्ति
चित्र
की सतह
(फ्रेस्को)

भूमि और खनिज
के रंग

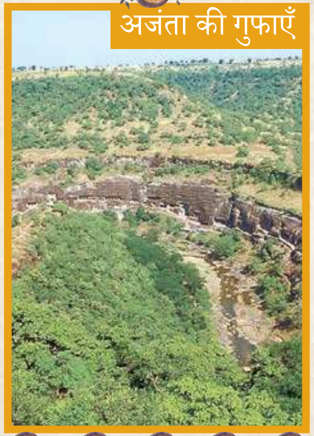

अजंता की गुफाएँ

पत्तों
की सतह

प्राकृतिक रंग

ताड़ का सूखा पत्ता

दीवार,
तल की
सतह

चावल का आटा,
भूमि के रंग

छत्तीसगढ़ी चौक

वस्त्र
की
सतह

प्राकृतिक रंगद्रव्य

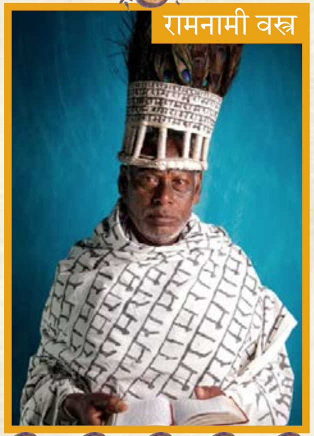

रामनामी वस्त्र

गतिविधि 7— प्रकृति से प्रेरणा

आप जानते हैं कि कलाकार अपने परिवेश का सूक्ष्मता से अवलोकन करते हैं और सूक्ष्म विवरणों का अंकन करते हैं। प्रत्येक कलाकार की अपनी एक कल्पना होती है। वे व्यक्तिगत रूप से स्वयं उपयोग की जाने वाली सामग्रियों, उपकरणों और तकनीकों का चयन करते हैं। यही बात उनके कार्य को अनोखा बनाती है।

एक कलाकार के समान आप भी अपनी कल्पना का उपयोग कर कलाकृति बना सकते हैं। आप ऐसी सामग्री और उपकरण चुनें, जो आपके अपने विचारों के लिए उपयुक्त हो। प्रकृति आपकी प्रेरणा है और आप निर्माता हैं। अपनी कलाकृति में स्वयं के अनुभव और अवलोकन सम्मिलित कीजिए।

इनमें पर्वत, नदी या सूर्य होना आवश्यक नहीं है। आप तय कीजिए कि वह क्या है, जो आपके लिए प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह आपके निकटतम परिवेश की वस्तु हो सकती है। याद रखिए, चित्र आपकी दृष्टि और अभिव्यक्ति पर आधारित होना चाहिए!

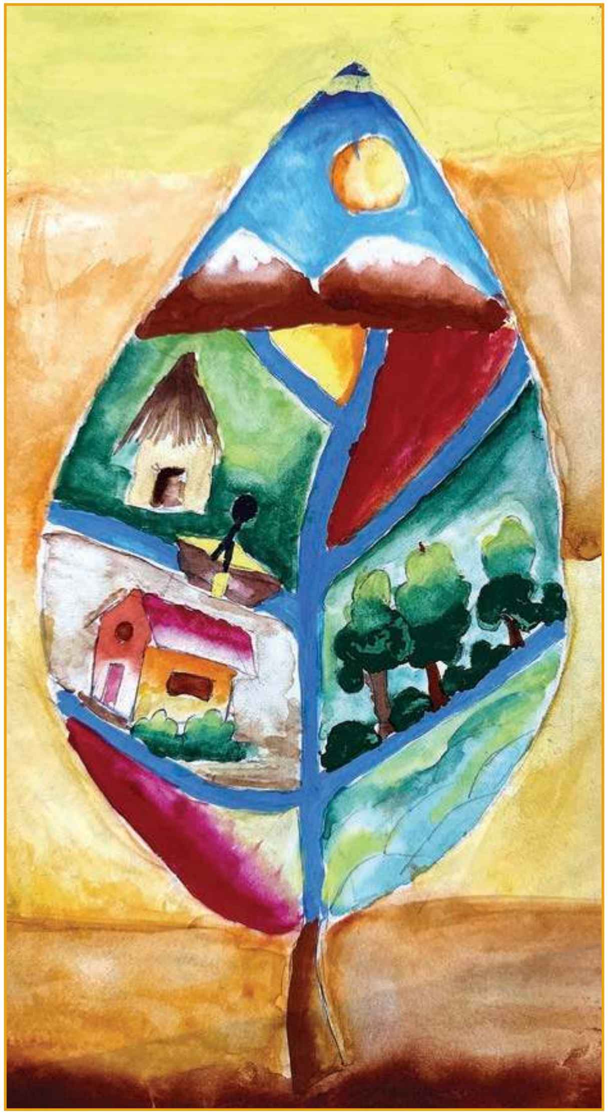

अध्याय 3

व्यक्ति-चित्रण

0679CH03

इस अध्याय में आप व्यक्ति-चित्रण करने की विभिन्न विधियों को जान पाएँगे। आप अपने मित्रों की शारीरिक विशेषताओं को ध्यानपूर्वक देखकर उनका चित्रण करेंगे। इसके बाद आप सभी के चित्रों को एक साथ संयोजित करके एक समूह चित्र (ग्रुप पोर्ट्रेट) का निर्माण करेंगे।

आप उन ऐतिहासिक कलाकृतियों का अध्ययन करेंगे, जिनमें लोगों को विभिन्न प्रकार से चित्रित किया गया है।

आपने देखा होगा कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग भूमिका होती है। उन सबके वस्त्र चयन एवं पहनावे के पीछे अपने कारण होते हैं। आइए, इन कारणों की खोज करते हैं और भविष्य में आप क्या बनना चाहते हैं, इसकी कल्पना करके एक कलाकृति की रचना करते हैं।

गतिविधि 1— व्यक्ति-चित्र बनाएँ

क्या आपने कभी विचार किया है कि हम सभी अलग-अलग क्यों दिखते हैं, जबकि हमारे चहरे के विभिन्न भाग समान ही होते हैं, जैसे— आँखें, भौंहें, नाक, मुँह, कान और बाल?

अपने सहपाठियों की मुखाकृति पर ध्यान दीजिए। क्या आप पहचान सकते हैं कि उनकी मुखाकृति आपकी मुखाकृति से किस प्रकार भिन्न है? क्या उनकी आँखें छोटी हैं या उनका माथा (मस्तक) बड़ा है? क्या वे चश्मा लगाते हैं? वे अपने बालों में कंघी कैसे करते हैं?

इस गतिविधि के लिए आप जोड़े बनाएँ और A4 आकार के कागज पर अपने सहपाठी का चित्र बनाएँ।

आपके चित्रों का उत्कृष्ट होना आवश्यक नहीं है। आप उनमें अपने ढंग से विशिष्टताएँ दर्शा सकते हैं।

चरण 1— मुख का आकार बनाएँ। क्या यह वृत्ताकार, दीर्घवृत्ताकार या अंडाकार है या यह एक गोलाकार आयत है?

चरण 2— उनकी मुखाकृति की अन्य विशेषताओं को चित्रित कीजिए। आँखों, नाक, भौंहों, होंठों, ठुड्डी और कानों के माप एवं आकार पर ध्यान दीजिए। आँखों के बीच का स्थान, बालों की रेखाओं और भौंहों के बीच की दूरी और कानों की लंबाई पर ध्यान दीजिए।

चरण 3— आपका रेखाचित्र जब तैयार हो जाए, तो उन रंगों के बारे में विचार कीजिए जिन्हें आप व्यक्ति-चित्रण में प्रयोग करना चाहते हैं।

चरण 4— अपना चित्र पूरा कीजिए और इसे अपने साथियों के साथ साझा कीजिए। मुखाकृति की विशेषताओं में दिखाई देने वाली समानताओं और अंतरों पर चर्चा कीजिए।

चरण 5— अपने चित्रों को उनके किनारों के पास से काटें।

चरण 6— कागज के कुछ पन्नों या किसी अन्य सामग्री को जोड़कर एक बड़ी सतह तैयार कीजिए।

चरण 7— सभी चित्रों को एकत्र कीजिए। पूरी कक्षा के समूह चित्र के लिए एक व्यवस्था निर्धारित कीजिए।

चरण 8— निर्धारित की गई व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक चित्र को चिपकाएँ। आपका कक्षा-चित्र तैयार है!

गतिविधि 2— कलाकारों की दृष्टि से

व्यक्ति-चित्र, व्यक्तियों को दर्शाने का एक माध्यम है। व्यक्ति-चित्र में किसी व्यक्ति की मुखाकृति, गर्दन, और कंधों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, तथापि इसमें शरीर के अन्य भाग भी सम्मिलित हो सकते हैं। कलाकार कई अन्य विधियों से भी लोगों का चित्रण करते हैं।

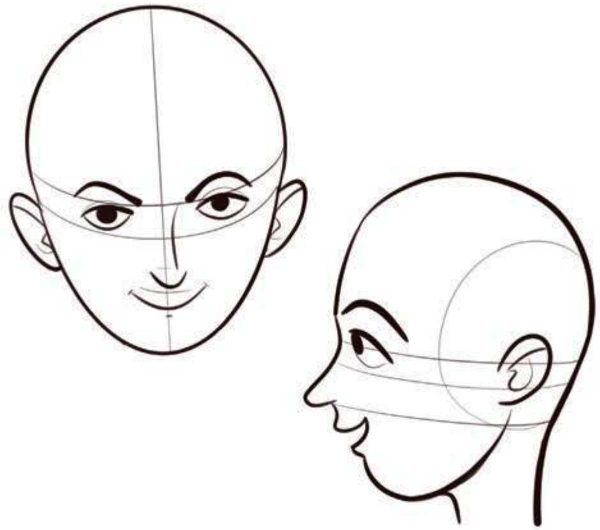

विभिन्न काल-खंडों में निर्मित बुद्ध की कुछ छवियों को देखें। इनकी शैलियों और मुखाकृतियों की विशेषताओं की तुलना कीजिए और उनकी विशिष्टताओं में दिखाई देने वाली समानताओं तथा अंतरों पर चर्चा कीजिए।

विभिन्न काल-खंडों एवं शैलियों में बनाई गई बुद्ध की कलाकृतियाँ।

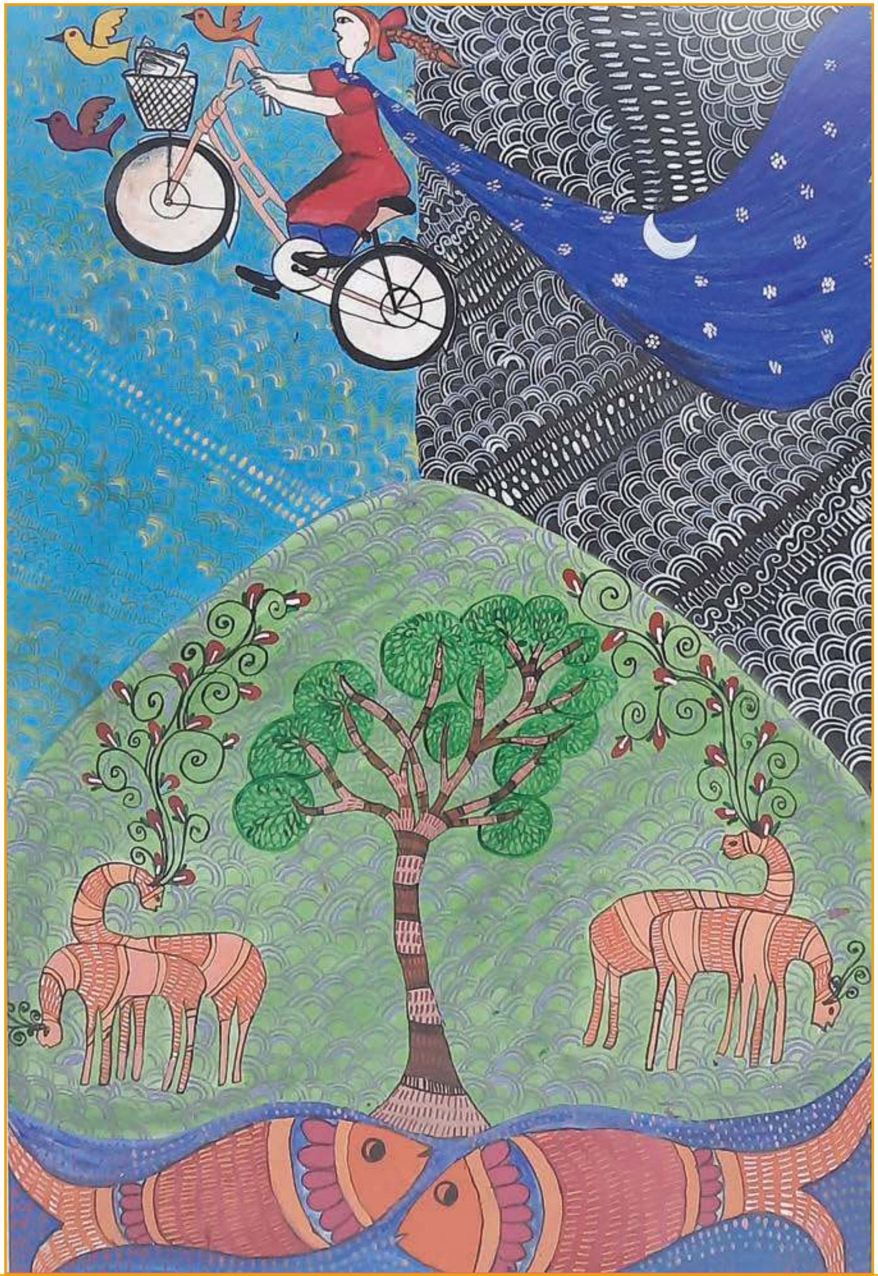

गतिविधि 3— मैं बनना चाहता हूँ ...

आप बड़े हो जाने के बाद अन्य लोगों के जीवन में क्या भूमिका निभाना चाहेंगे?

क्या आप लोगों को उनके बल्ब ठीक करने में मदद करना चाहेंगे? या आप यह सुनिश्चित करना चाहेंगे कि लोग स्वस्थ रहें?

इन भूमिकाओं को निभाते हुए स्वयं का चित्र बनाएँ। अगर आपको नहीं पता कि आपको कौन-सी भूमिकाएँ निभानी हैं, तो कोई बात नहीं। आप स्वतंत्र रूप से स्वयं की अनेक भूमिकाओं में कल्पना कर सकते हैं।

आपके मस्तिष्क में जितने भी विकल्प आ रहे हैं, उनमें से किन्हीं तीन से पाँच भूमिकाओं का चित्रण करें।

कक्षा में सभी के द्वारा बनाए गए चित्रों को देखें। क्या आपको इन चित्रों में कुछ विशेष दिखाई देता है? या कुछ ऐसा जो असामान्य है? आपको कौन-से चित्र रोचक लगे और क्यों?

गतिविधि 4— वस्त्र और उनकी भूमिकाएँ

कोई व्यक्ति कलाकार या किसान है, यह हमें कैसे पता चल सकता है? क्या हम सभी किसानों की कल्पना एक ही प्रकार से करते हैं या फिर इनमें कोई अंतर है? समानताएँ और अंतर क्या हैं? आइए, जानें!

अपनी कल्पना से किसान का एक चित्र बनाएँ। अपनी कक्षा में बनाए गए सभी चित्रों को देखें। बनाए गए चित्रों में किसानों का जेंडर क्या है? वे किस कद-काठी के हैं? उन्होंने किस प्रकार के वस्त्र पहने हुए हैं?

आइए, इस विषय पर चर्चा कीजिए—

1. आपने अपने चित्रों के लिए ये निर्णय कैसे लिए?
2. क्या आपको सभी जेंडर के किसान मिलते हैं?
3. आपने किसानों के चित्र कहाँ-कहाँ देखे हैं?
4. यदि वे अपने कपड़े परिवर्तित कर लें, तो क्या वे किसान होंगे?

दिए गए चित्र में आपको कौन-से संगीत वाद्ययंत्र दिखाई दे रहे हैं?

आप जिस प्रकार अपने प्राकृतिक वातावरण का अवलोकन करते हैं, उसी प्रकार लोगों का भी ध्यानपूर्वक अवलोकन कीजिए। ध्यान दें कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति का स्वरूप एवं वेशभूषा अनोखी होती है।

अपने आस-पास भिन्न-भिन्न भूमिकाओं वाले किन्हीं तीन लोगों का अवलोकन कीजिए और उनका चित्र बनाएँ। उनकी अन्य संभावित भूमिकाओं की कल्पना कीजिए।

अब अपने सहपाठियों के बनाए गए चित्रों को देखें। चित्रों में आपको कौन-से भिन्न-भिन्न लोग दिखाई दे रहे हैं? क्या सभी जेंडर के लोगों को भिन्न-भिन्न भूमिकाओं में दर्शाया गया है?

इन चित्रों की तुलना किसान के चित्र से कीजिए। क्या आपके विचारों को प्रस्तुत करने की विधि में कुछ परिवर्तन आया?

अभ्यास कीजिए— अपने आस-पास परिवार और पड़ोस में लोगों का अवलोकन करें। ध्यान दें कि उन्होंने क्या पहना हुआ है। आप जिस भूमिका में उन्हें देखते हैं, उनका एक चित्र बनाएँ। अब उन्हीं वस्त्रों में, लेकिन एक बहुत ही अलग भूमिका निभाते हुए उनका एक और चित्र बनाएँ। प्रयास कीजिए कि आपका चित्र विलक्षण हो और दर्शकों को प्रेरित करे।

अध्याय 4

कागज के शिल्प

0679CH04

इस अध्याय में, आप सभी कागज को एक आकर्षक और कलात्मक माध्यम के रूप में जान पाएँगे। आप कागज को मोड़ने, काटने और सूत्रात्मक रूप में प्रस्तुत करने (बुनाई) जैसी विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करेंगे। इसके साथ ही, आप कागज काटने की 'सांझी' जैसी भारतीय कला परंपराओं के बारे में भी जानेंगे और सीखेंगे। आपको इस बहुमुखी सामग्री के साथ प्रयोग करने की कई रचनात्मक विधियाँ भी जानेंगे।

गतिविधि 1— कागज मोड़ना

कागज को मोड़ने की कला को 'ओरिगामी' के नाम से जाना जाता है। यह एक कला है, जिसकी उत्पत्ति जापान में हुई और अब यह पूरे विश्व में फैल चुकी है।

हो सकता है कि आपने कागज को मोड़कर कुछ वस्तुओं को बनाना सीख लिया हो।

क्या आप 'सदाको और हजार कागजी सारस' की कहानी जानते हैं? सदाको 11 साल की एक छोटी जापानी लड़की थी। 1945 में हिरोशिमा पर परमाणु बम गिरने के नकारात्मक प्रभाव से उसे एक असाध्य रोग हो गया था। जब सदाको की अस्पताल में चिकित्सा चल रही थी, तब उसकी सहेली ने उसे कागज के सारस बनाने की किंवदंती (पुरानी कहानी) सुनाई। सदाको ने अपने जीवन को आगे बढ़ाने की आशा मे हजार कागज के सारस बनाने आरंभ कर दिए। लेकिन 644 सारस बनाने के कुछ समय बाद ही सदाको की मृत्यु हो गई। लेकिन वह स्वयं पूरे विश्व में एक किंवदंती के रूप में प्रसिद्ध हो गई। आज भी विश्वभर से लोग कागज के सारस बनाकर, जापान में बच्चों के शांति स्मारक पर भेजते हैं। इस प्रकार कागज के सारस शांति के प्रतीक बन गए।

आप कागज को मोड़कर कई प्रकार की वस्तुएँ बना सकते हैं। अपने शिक्षक, माता-पिता और मित्रों से सीखें कि कागज को मोड़कर विभिन्न प्रकार की आकर्षक वस्तुएँ कैसे बनाई जाती हैं।

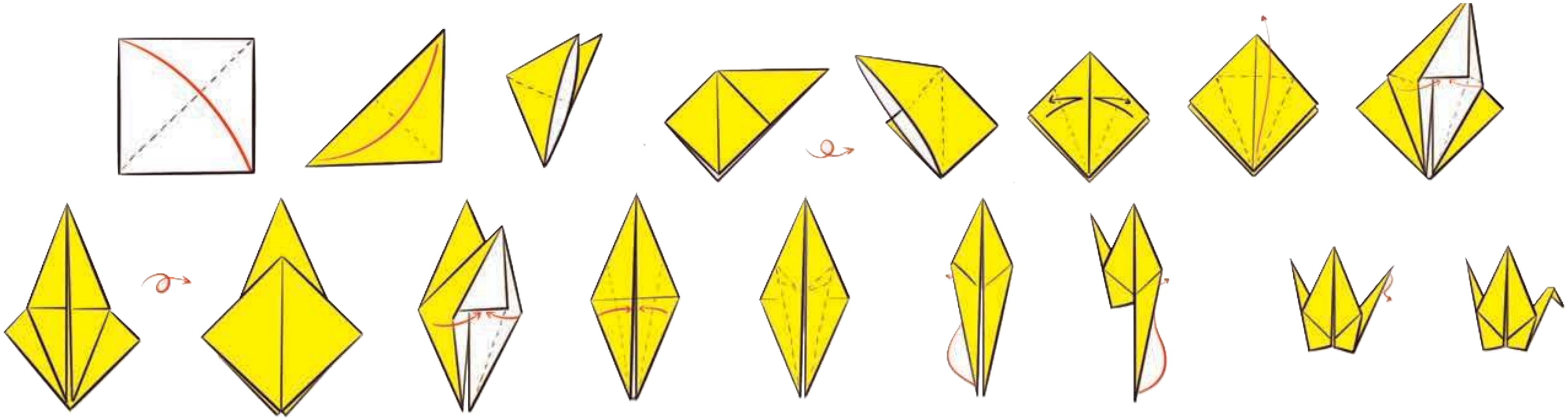

कागज से सारस बनाने के निर्देश

कागज से सांझी काटना

गतिविधि 2— कागज काटना

'सांझी' एक ऐसी पारंपरिक कला है, जो उत्तर प्रदेश के मथुरा और उसके आस-पास के क्षेत्रों में प्रचलित है। ऐसा माना जाता है कि इस कला का उपयोग मूल रूप से रंगोली के साँचों के रूप में किया जाता था। आजकल, यह साँचे कागज से बने होते हैं और बहुत ही जटिल तरीके से विभिन्न प्रकार की संरचना और छवियों में काटे जाते हैं।

आप विन्यास की कल्पना करके स्वयं के सरल साँचे और चित्र बना सकते हैं। आप इन कटे हुए कागजों का उपयोग लालटेन और अन्य सजावट की वस्तुएँ बनाने के लिए भी कर सकते हैं।

यहाँ कुछ विचार दिए गए हैं। स्वयं प्रयोग कीजिए और आपस में नए विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

कागज काटने के लिए कैंची और तीक्ष्ण उपकरणों का उपयोग करते समय सभी सुरक्षा सावधानियों का ध्यान अवश्य रखें!

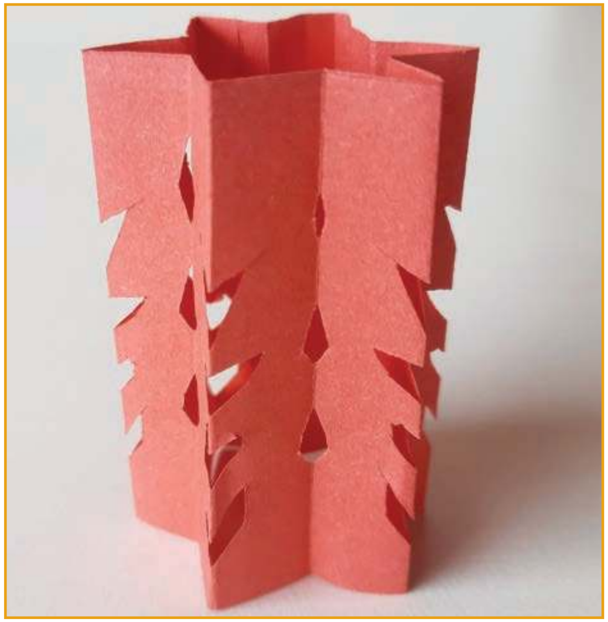

क्या आप जानते हैं?

त्योहारों और अन्य अवसरों के समय धागों पर लटकाए जाने वाले कागज, कपड़े या प्लास्टिक की सजावट को ध्वज पताका (बंटिंग) कहा जाता है। ये बहुत रंगीन होते हैं। इनमें से विभिन्न प्रकार के आकारों और समानाकृतियों (पैटर्न) को काटकर इन्हें और अधिक सुंदर बनाया जा सकता है!

गतिविधि 3— कागज की बुनाई

कागज एक जादुई सामग्री है। जैसा कि आपने पिछली गतिविधि में देखा, कागज सरलतापूर्वक अपना रूप परिवर्तित कर सकता है। कुछ काट-छाँट और मोड़ के साथ यह जीवों और वस्तुओं का आकार ले सकता है!

आइए, कागजी शिल्प की एक और विधि या बुनाई के साथ प्रयोग करें। यदि आप अपने आस-पास किसी भी वस्त्र को ध्यान से देखें, तो आप देख पाएँगे कि यह दृढ़तापूर्वक तथा एक-दूसरे से आड़े-तिरछे लिपटे धागों से बना है। इस आड़ी-तिरछी बुनावट को ताना-बाना भी कहा जाता है। आइए, कागज के साथ ऐसा करने का प्रयास कीजिए। चित्रों को देखिए और अपनी स्वयं की चटाई बुनने का प्रयास कीजिए।

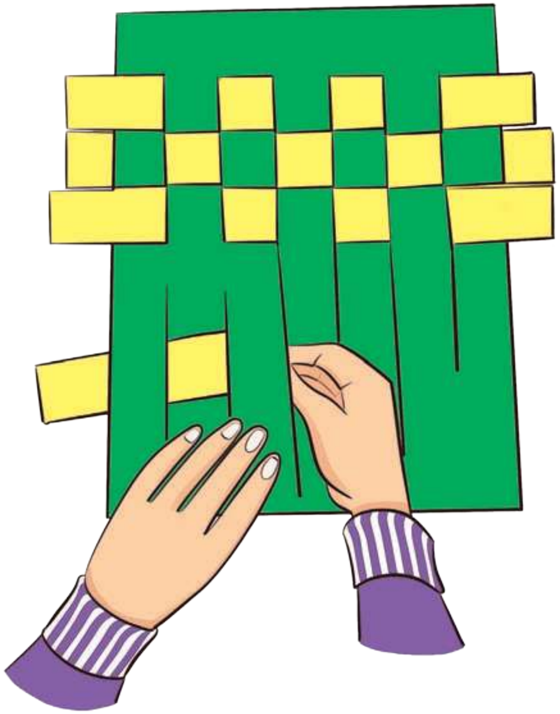

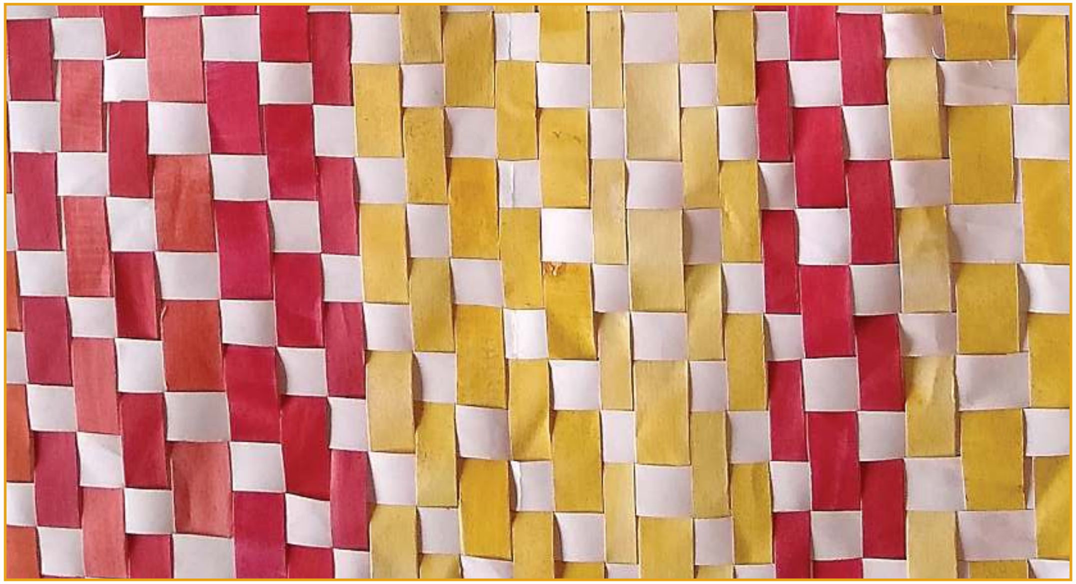

अभ्यास कीजिए— बुनाई के लिए अन्य माध्यमों, जैसे—प्राकृतिक तन्तु, कागज, कपास, ऊन, बाँस, अखबार, जूट, ताड़, वस्त्र की बेकार पड़ी पट्टियाँ आदि का प्रयोग कीजिए।

अध्याय 5

मुहर से छपाई तक

0679CH05

इस अध्याय में आप मुहर या सील की रूपरेखा, उनके उद्देश्य और कलात्मक गुणों के बारे में जानेंगे। इतिहास की मुहर के उदाहरणों से प्रेरणा लेते हुए, आप अपनी स्वयं की मुहर बनाएँ तथा उसे बनाने के लिए विभिन्न सामग्रियों का प्रयोग कीजिए। इस प्रक्रिया में आप अपनी मुहर, कागज और वस्त्र दोनों पर परीक्षण करेंगे। आप इस प्रक्रिया को ‘अजरख’ ठप्पा छपाई (ब्लॉक प्रिंट) की वस्त्र परंपरा से भी जोड़कर देख पाएँगे। अपनी स्वयं की मुहर का उपयोग करके आप कागज, वस्त्र और अन्य सतहों पर अपने प्रिंट बनाने के लिए रुचिकर समानाकृति बना सकते हैं!

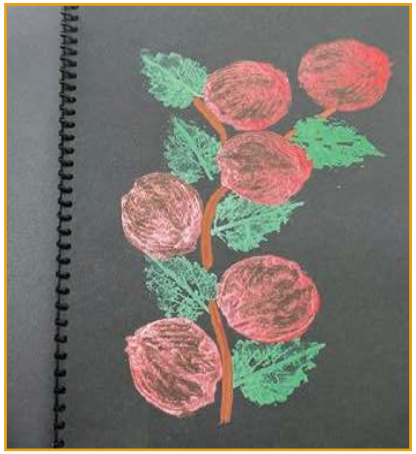

गतिविधि 1— आइए, मुहरों को देखें

क्या आपने अपने शिक्षकों, विद्यालय के प्रधानाचार्य या अपने विद्यालय के कार्यालय में किसी को मुहर और रबर स्टैंप का उपयोग करते देखा है?

मुहर लगे हुए किसी भी कागज या दस्तावेज देखने के लिए अपने शिक्षक की सहायता लीजिए। इन प्रश्नों पर चर्चा कीजिए—

1. मुहर पर छवि या लिखावट क्या है?
2. मुहर क्या दर्शाती है?
3. मुहर का उपयोग किस लिए किया जाता है?

मुहर पर चित्र, चिह्न और लिखावट आदि हो सकते हैं। वे हमें समाज, व्यक्ति, राज्य, संस्था और संगठन के जीवन, दिनचर्या, सामाजिक स्थिति और विश्वास के बारे में संकेत देते हैं।

मुहरों पर बने चित्र और प्रतीक को देखें। उनका अवलोकन कीजिए। उनकी तुलना करें। चर्चा करें कि मुहरों के प्रतीक क्या दर्शा रहे हैं?

ध्यान दें कि इन सभी मुहरों पर भिन्न-भिन्न लिपियों में कुछ लिखाई के साथ एक चित्र चिह्न भी उपस्थित है।

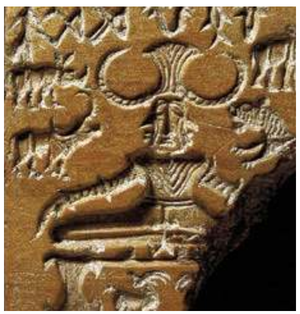

विभिन्न ऐतिहासिक काल-खंडों की मुहरें

गतिविधि 2— अध्ययन यात्रा

अपने स्थानीय डाकघर में जाएँ। वहाँ पोस्टमास्टर या किसी अन्य ऐसे डाक अधिकारी से मिलें, जो आपको डाक सेवाओं में प्रयोग की जाने वाली मुहरें और टिकटें दिखा सके। निम्नलिखित का पता लगाएँ और टिप्पणी (नोट) लिखें—

1. स्टैंप या मुहर में प्रयोग की जाने वाली सामग्री।
2. डाक सेवा का प्रतीक चिह्न।
3. मुहर में दी गई अन्य कोई जानकारी।

अभ्यास कीजिए— अपने परिवार के वृद्ध सदस्यों से बात कीजिए और उनसे ऐसे दस्तावेज या डाक लिफाफे माँगें जिन पर कोई मुहर लगी हो। मुहर के विवरण पर ध्यान दीजिए और जो प्रतीक और लिखावट आपको मिले, उसके बारे में टिप्पणी लिखें या उनका रेखाचित्र बनाएँ।

प्रयोग— कोई भी सिक्का लीजिए। उस पर एक कागज रखें। पेंसिल का उपयोग करके, सिक्के के ऊपर रखी कागज की सतह पर तब तक रेखाएँ बनाएँ जब तक कि सिक्के की छवि दिखाई न देने लगे।

गतिविधि 3— अपनी मुहर स्वयं बनाएँ

अब तक आप मुहरों की विशेषताओं और उद्देश्यों से परिचित हो गए हैं। क्या अब आप अपनी मुहर बनाना चाहेंगे?

सबसे पहले आप मुहर के विन्यास या संरचना से शुरुआत कीजिए। एक कागज और पेंसिल लें और अपने विचारों के अनुसार प्रारंभिक रेखाचित्र बनाएँ।

चरण 1—प्राप्त की गई वस्तुओं के साथ प्रयोग कीजिए

- थोड़ी-सी मिट्टी या आटा तैयार कीजिए।
- कुछ छोटी वस्तु, जैसे—बटन, बोतल के ढक्कन, छड़ें, पत्ते, सिक्के आदि इकट्ठा कीजिए।
- अपनी मिट्टी की सतह को गीला करके समतल कीजिए।
- आपके द्वारा इकट्ठा की गई वस्तुओं को तैयार की गई सतह पर रखकर दबाएँ और देखें कि क्या वे चिह्न छोड़ते हैं?
- पता कीजिए कि कौन-सी वस्तु स्पष्ट चिह्न बनाती हैं और क्यों?

मूल लोगो का एक उदाहरण

चरण 2 — मुहर की बनावट

- सबसे पहले अपना व्यक्तिगत प्रतीक तैयार कीजिए। यह एक साधारण चित्र हो सकता है जो आपका प्रतिनिधित्व करता हो — एक मुखाकृति, पत्ती, फूल, फल, वस्तु, पशु, अक्षर, चिह्न, आदि। यह आपके मूल्यों को दर्शा सके अथवा आपके गुणों को परिलक्षित करने वाला होना चाहिए।
- अपने संरचना (डिजाइन) को सरल रखिए।

चरण 3 — अपनी मुहर बनाएँ

- मुहरें बनाने के लिए प्रयोग में आने वाली आवश्यक सामग्री को एकत्रित कीजिए जैसा कि आपने कुछ मुहरों में देखा है।
- विद्यालय में सहजता से उपलब्ध विकल्पों के बारे में सोचें। उदाहरण के लिए, मिट्टी, कार्डबोर्ड, जूट की रस्सी, स्पंज, रबर आदि का प्रयोग किया जा सकता है।
- आप जिस सामग्री का प्रयोग करेंगे उसकी सतह को समतल कीजिए। याद रखें कि मुहर का चिह्न तभी स्पष्ट होगा जब उसके डिजाइन (विन्यास) के सभी भाग समतल होंगे।
- ऐसे उपकरण चुनें, जिन्हें आप काटने, तराशने और अपने डिजाइन (विन्यास) को आकार देने के लिए सुरक्षित रूप से प्रयोग में ला सकें।
- अगर आपको लगता है कि आपके डिजाइन (विन्यास) को तराशना कठिन है, तो इसे सरल बनाएँ और अपने डिजाइन को पूरा कीजिए।

विद्यार्थियों का मुहरें बनाने और उन्हें छापने का प्रयोग

चरण 4— अपनी मुहर का परीक्षण कीजिए

- अपनी मुहर लगाने के लिए सामग्री या सतह चुनें जिस पर मुहर लगाई जानी है। यदि आपकी मुहर गोल है और सपाट नहीं है, तो आप इसे गीली मिट्टी या आटे पर दबा सकते हैं, जैसा कि आपने पहले परीक्षण में वस्तुओं के साथ किया था।
- यदि आपकी मुहर सपाट है, तो उस पर रंग या स्याही लगाकर किसी भी कागज पर छापें।
- परिणाम के आधार पर, आप अपनी मुहर के विन्यास में तब तक परिवर्तन और सुधार कर सकते हैं, जब तक कि आप वांछित प्रभाव प्राप्त न कर लें।

गतिविधि 4— छपाई

अब आपके पास एक ऐसी मुहर है, जिसका प्रयोग बार-बार किया जा सकता है! स्टैंप पैड में स्याही लगी होती है। जब हम मुहर को स्टैंप पैड में दबाते हैं, तो उस पर स्याही लग जाती है, जिसे दबाकर कागज पर चिह्नित किया जाता है।

यही प्रक्रिया छपाई की कई पृथक-पृथक पारंपरिक प्रक्रियाओं में देखी जा सकती है। आइए, हाथ से की जाने वाली छपाई की प्रक्रिया देखें, क्योंकि यह रबर स्टैंप और आपके द्वारा बनाई गई मुहरों से काफी मिलती-जुलती है।

यह एक नक्काशीदार लकड़ी का ठप्पा या ब्लॉक है। अब उन भागों पर ध्यान दीजिए, जहाँ समानाकृति (पैटर्न) उभरी हुई है। इस ब्लॉक को लकड़ी की नक्काशी में पारंगत एक कलाकार ने सावधानीपूर्वक तराशा है। क्या आपके आस-पास बढ़ई और लकड़ी की नक्काशी बनाने वाले कलाकार हैं?

उनसे मिलें, यह चित्र दिखाएँ और उनसे पूछें कि इस तरह के विन्यास को कैसे उकेरा जाता है। उनसे पूछें कि कौन-से उपकरण प्रयोग में लाएँ जाते हैं और इसे हाथों से उकेरने में कितना समय लगेगा। इस लकड़ी के ठप्पे का प्रयोग, वस्त्रों पर छपाई के लिए किया जाता है। इन वस्त्रों को 'हैंड ब्लॉक प्रिंटेड टेक्सटाइल' कहा जाता है।

हाथ से ठप्पे की छपाई करने वाले चित्र को देखिए और स्याही वाले ठप्पे को कपड़े पर सावधानी से रखें। एक ही ठप्पे का प्रयोग निरंतर समानाकृति (पैटर्न) बनाने के लिए बार-बार किया जाता है। वह 'अजरख' नामक एक विशेष वस्त्र बना रहा है, जो गुजरात के कच्छ में प्रचलित है।

क्या आपको लगता है कि आप अपनी मुहर से कोई समानाकृति (पैटर्न) बना सकते हैं? आप एक और मुहर भी बना सकते हैं, जो निरंतर समानाकृति (पैटर्न) के लिए उपयुक्त हो। कुछ डिजाइन बनाएँ और उन्हें प्रयोग में लाकर देखें।

संगीत

"गीतं, वाद्यं च नृत्यं
त्रयं संगीतमुच्यते।"

अर्थ

गायन वादन एवं नृत्य तीनों के सम्मिश्रण को संगीत कहते हैं।
जब किसी गीत को स्वर सहित गाया जाता है, वाद्ययंत्रों द्वारा उसकी संगति की जाती है और अभिनय द्वारा उसके भावों को प्रकट किया जाता है तो उसे संगीत कहा जाता है।

श्लोक स्रोत— संगीत रत्नाकर,
श्लोक 21 स्वराध्याय

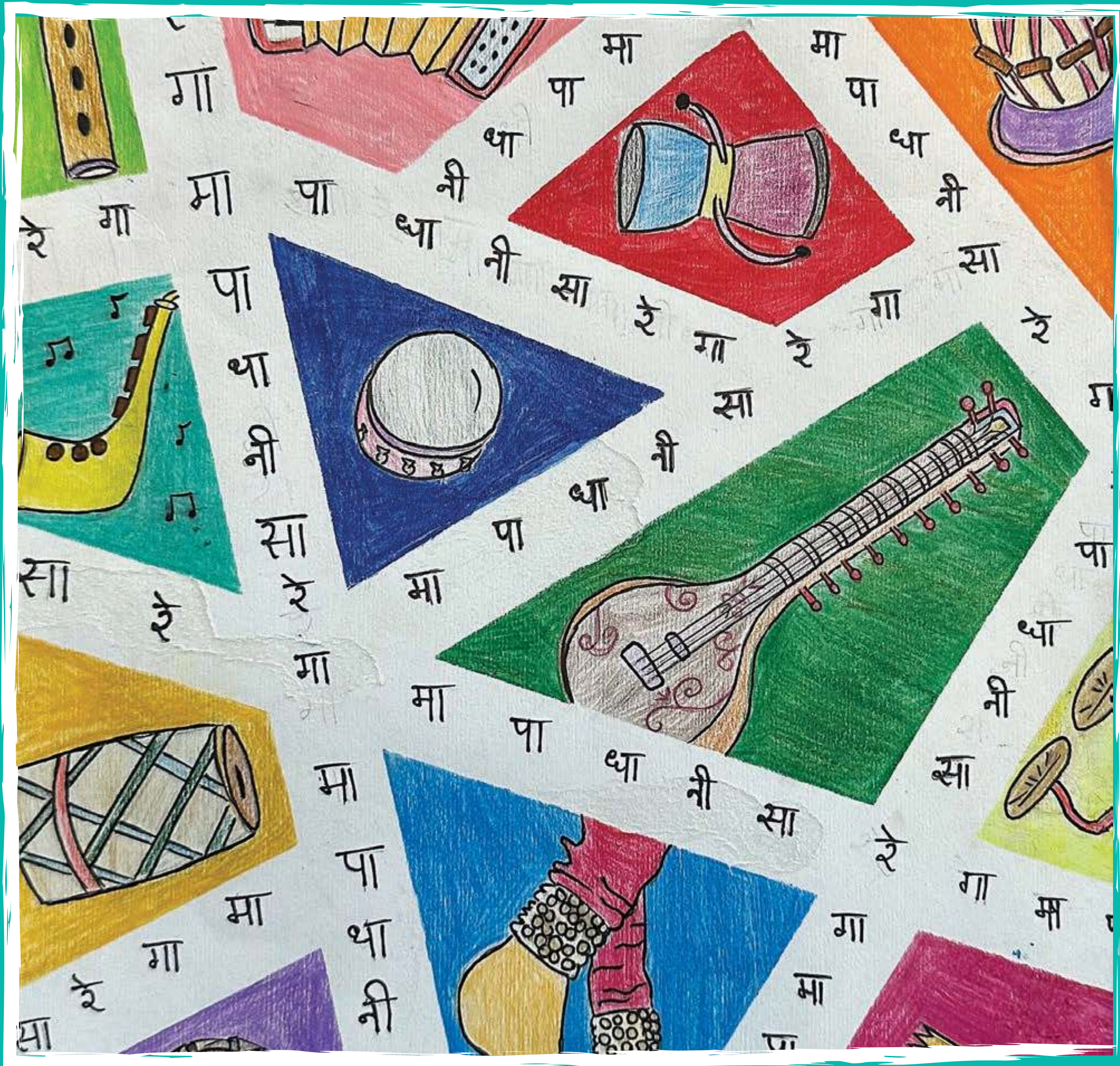

शिक्षकों के लिए

संगीत में भावनाओं को व्यक्त करने, सहयोग एवं आत्म अभिव्यक्ति के गुण प्रचुर मात्रा में हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि को बढ़ाना और उनको मौलिक कौशल सिखाना है। पुस्तक में दिए गए गीतों और गतिविधियों को प्रस्तुत करना रोचक होगा, जिससे हमारे विद्यार्थी, विशेष रूप से प्रारंभिक चरणों में, केवल परिणाम पर ध्यान केंद्रित न करके उत्साहपूर्वक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए भी सक्षम होंगे।

1. घर पर अभ्यास करने से गायन, वाद्य बजाने, संगीत सुनने एवं रचना करने आदि की क्षमता का विकास होता है। उनमें तुरंत अनुकरण करने की क्षमता भी विकसित होती है।
2. विद्यार्थियों को संगीत समारोह में ले जाकर अथवा किन्हीं माध्यमों से प्रसारित हो रहे संगीत को सुनाना चाहिए।
3. किसी संगीत कलाकार को विद्यालय में आमंत्रित कीजिए और विद्यार्थियों को कलाकार से प्रश्न पूछने और चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
4. त्योहारों और सांस्कृतिक अनुष्ठानों से बच्चों को विशेष लगाव होता है। इसी कारण उनको अपने घर-परिवार में गाए जाने वाले किसी भी गीत को प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
5. हमें अपने दैनिक जीवन में अलग-अलग जगहों से अलग-अलग तरह के संगीत सुनने के अवसर मिलते हैं। विद्यालयों में प्रत्येक कक्षा के समय को विभाजित करने के लिए घंटी बजाने के प्रावधान के विपरीत किसी धुन को बजाकर उनका ध्यान आकर्षित करना चाहिए।
6. इस इकाई में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ दी गई हैं। आप अपने अनुसार इनमें विविधताएँ ला सकते हैं और नई चीजें जोड़ सकते हैं।
7. पुस्तक में दिए गए कई गीत और गतिविधियों को पूर्ण रूप से समझने के लिए एक ऑडियो और वीडियो का संसाधन दिया गया है, जिसको आप साथ में दिए गए क्यू.आर. कोड को स्कैन करके देख सकते हैं।

इस संगीत पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, आप और आपके विद्यार्थियों को संगीत की आनंददायी यात्रा का अनुभव कराना है। हमारा लक्ष्य है कि हम प्रत्येक बच्चे के अंदर संगीत के प्रति आजीवन प्रेम को जगा पाएँ, ताकि भविष्य में वे एक अच्छे श्रोता बन सकें और अच्छे संगीत को सराहने की क्षमता उनमें उत्पन्न हों। इस तरह संगीत के इस प्रयोग को कक्षाओं के बाहर भी किया जा सकता है।

कक्षा के लिए संसाधन

1. कक्षा एक ऐसे स्थान पर होनी चाहिए, जहाँ संगीत शिक्षा मनोरंजक और सुविधाजनक हो। विद्यार्थियों एवं शिक्षक दोनों को ही बैठने और साथ में गाने की सुविधा हो। भूमि पर बैठकर संगीत का अभ्यास करना सबसे श्रेष्ठ होता है। इससे बच्चों में बैठने का सही ढंग विकसित होता है और वे श्वास लेने की प्रक्रिया को समझ पाते हैं, जो योग से जुड़ा महत्वपूर्ण व्यायाम है। शिक्षक इस बैठक प्रक्रिया को किसी गीत के विषय के अनुसार बदल भी सकते हैं। इससे कक्षा में रोमांचकता और रचनात्मकता बढ़ेगी, जिससे विद्यार्थियों में भी विविधता के कौशल का विकास होगा।
2. कंप्यूटर के साथ इंटरनेट की व्यवस्था, ई-तानपूरा और ऑडियो संसाधनों के लिए स्पीकर का प्रावधान होना चाहिए।
3. कक्षा में सरल वाद्ययंत्र बनाने की सामग्री की व्यवस्था होनी चाहिए।
4. विद्यालय में प्रदर्शन के लिए माइक्रोफोन, संगीत प्रस्तुतीकरण के लिए ध्वनि-प्रणाली की व्यवस्था होनी चाहिए।
5. हारमोनियम, ढोलक, मंजीरा, शेकर्स (झुनझुना), तैमबोरीन, माउथ-ऑर्गन, ई-तानपूरा, तबला इत्यादि जैसे वाद्यों का प्रावधान होना चाहिए।
6. भारत का मानचित्र विद्यार्थियों को उन राज्यों का वह स्थान दिखाने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, जहाँ से विभिन्न भाषाओं की विभिन्न रचनाएँ सृजित और प्रचलित हुई हैं।

अध्याय 6

संगीत एवं भाव

उद्देश्य— संगीत के किसी अंश को सुनकर यह समझना कि वे किस प्रकार मनोदशा और भावना को प्रभावित करते हैं और संगीत के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं का प्रकट करना सीखना।

0679CH06

गतिविधि 1— इस गीत को सुनें

भाषा— छत्तीसगढ़ी (छेरछेरा गीत)

छेरीक छेरा, छेर छेरा, छेर छेरा
माई कोठी के धान ल हेर हेरा
अरन-बरन कोदो दरन,
जभे देबे तभे टरन,
छेरीके छेरा, छेर छेरा, छेर छेरा

एक बोझा राहेर काड़ी,
दू बोझा कासी।
पिंजरा ले मैना बोले
मन हे उदासी। छेर छेरा..................
माई कोठी के धान ल हेर हेरा।
हाट गेंव बजार गेंव
उहाँ ले लाने तारा।
जल्दी-जल्दी बिदा करो,
जाबो दूसर पारा। छेर छेरा..................
माई कोठी के धान ल हेर हेरा।
छोटे ला केरी कथे,
बड़े ला केरा।
राम-राम लेव संगी
जाए के बेरा। छेर छेरा..................
माई कोठी के धान ल हेर हेरा।

- जो गीत बजाया गया उससे आप किन भावनाओं को जोड़ते हैं?
- आपके पास कोई ऐसा गीत है, जो पुरानी यादें ताजा कर देता है? उस गीत को गाएँ।
- उनके बोल अगर याद ना भी हों, क्या आप उनके मधुर स्वर को गुनगुना सकते हैं?

गतिविधि 2— संगीत और हमारी स्मृति

संगीत में हमारे विचारों और भावनाओं को बदलने और प्रभावित करने की शक्ति होती है। संगीत सुनने व संगीत की रचना से हमें आनंद की अनुभूति होती है।

कई बार मनुष्य किसी गीत को सुनकर पुरानी घटनाओं और उनसे जुड़े लोगों की यादों को ताजा कर सकते हैं। इसी को 'संगीत-प्रेरित स्मृति' कहते हैं।

उन्हें गाएँ!

विज्ञापनों के साथ बजने वाले विभिन्न तरह के संगीत को सुनिए और इस पुस्तक या कंप्यूटर पर उनकी एक तालिका बनाएँ।

अपने माता-पिता या घर के बड़ों से उनके बचपन के किसी प्रिय गीत के बारे में पूछें। वे इन गीतों से किन स्मृतियों को जोड़ते हैं?

निम्नलिखित सारिणी में आपको याद आने वाला कोई ऐसा मधुर गीत लिखिए।

एक त्योहार का गीत ...

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

गतिविधि 3— सुनिए और अनुभव कीजिए

प्रात: से सांय काल तक हम विभिन्न प्रकार के संगीत से घिरे रहते हैं। प्रिय विद्यार्थियो, जब आप विभिन्न प्रकार की संगीत ध्वनियाँ सुनते हैं, तो आपके मन में क्या भावनाएँ आती हैं? उन पर विचार कीजिए। शहनाई, नागस्वरम्, ढोल, डमरू, इडाइक्का की ध्वनि या किसी मधुर गीत की ध्वनि को याद कीजिए। इनकी मधुरता को सुनते समय आप क्या अनुभव करते हैं? क्या वे आपको प्रसन्न करते हैं, आपको नृत्य करने के लिए प्रेरित करते हैं, शांति की भावना पैदा करते हैं, जिसका आप एकांत में आनंद लेना चाहते हैं, या क्या वे आपको साथ में गाने के लिए विवश करते हैं? इन मधुर ध्वनियों को सुनकर आपके जीवन में भाव आते हैं, उन्हें भावनाएँ कहा जाता है। भावना सभी मनुष्यों में निहित एक प्राकृतिक गुण है। आइए, कुछ वाद्ययंत्र सुनकर भी ऐसा ही अनुभव करें। इन सांगीतिक अंशों को सुनते समय आपको क्या अनुभव हुआ, अपनी भावनाएँ लिखें—

1. ____________________
2. ____________________
3. ____________________

इन सभी सांगीतिक अंशों को एक ही वाद्ययंत्र से बजाया गया है—वायलिन

वायलिन

जिस तरह आप अपने कंठ की ध्वनि से किसी भावना को अभिव्यक्त कर सकते हैं—जैसे कि खुशी, उदासी, प्रबल और मृदु, ठीक उसी प्रकार एक वाद्ययंत्र भी किसी भी भाव को अभिव्यक्त करने में सक्षम होता है।

आपने वायलिन की ध्वनि को सुना। अब आप भारत में प्रचलित अन्य वाद्ययंत्रों को भी सुनने का प्रयास कीजिए। उदाहरण के लिए, बाँसुरी, सितार, शहनाई, तबला आदि और इन सभी वाद्ययंत्रों की विशेष ध्वनि को समझने का प्रयास कीजिए और साथ ही यह भी समझें कि किस प्रकार भिन्न-भिन्न ध्वनियों के माध्यम से भिन्न-भिन्न भावनाओं का जन्म होता है।

गतिविधि 4— संगीत का चित्रांकन

अभी तक हम यह पढ़ रहे थे कि संगीत का प्रत्येक अंश एक कहानी बताता है। अभी हम एक दूसरा प्रयोग करते हैं। संगीत के इस अंश को सुनिए और इसे अपनी कला के माध्यम से दर्शाए। आप चित्र बनाने के लिए रंगीन पेंसिल, कलम या रंगों का भी प्रयोग कर सकते हैं। चित्र को एक शीर्षक दीजिए।

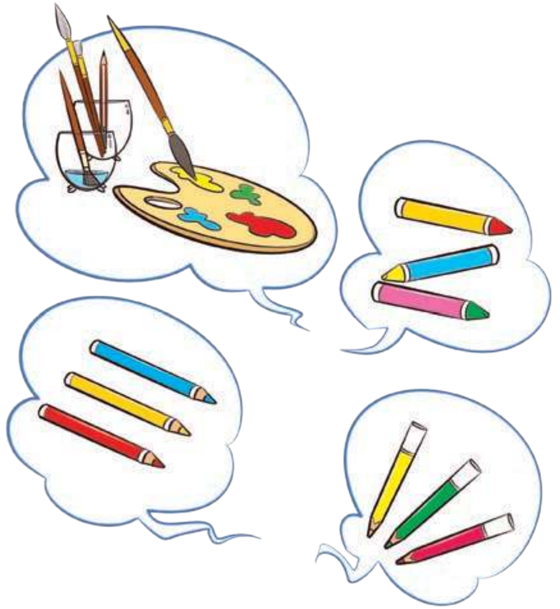

ताली

पैर की थाप

टैप

चुटकी बजाना

गुनगुनाना

सीटी बजाना

शिक्षकों के लिए

आप कक्षा को समूहों में विभाजित कर सकते हैं और प्रत्येक समूह को किसी भी पाठ्यक्रम से एक विषय या प्रसंग दे सकते हैं। निर्धारित समूहों को लय या स्वरों की मधुरता के माध्यम से अपने विचार संगीतमय ढंग से प्रस्तुत करने होंगे। अगले पृष्ठ की गतिविधि 6 के अंतर्गत बताई गई ध्वनि के उतार-चढ़ाव और गतिशीलता का भी प्रयोग कर सकते हैं। सुझाए गए विवरण का प्रयोग कीजिए या शिक्षार्थी अपने कथानक को भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

गतिविधि 5— संगीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करें

क्या आप शब्दों के बिना अपने शरीर द्वारा इन भावनाओं को संगीत के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं?

जब आप क्रोधित होते हैं, तब आप क्या करते हैं? जब आपको खुशी होती है, तब आप क्या करते हैं? जब आप दुखी होते हैं, तब आप क्या करते हैं?

आप अपने कंठ के स्वर या अपने शारीरिक ताल वाद्य (ताली, पैर के थाप, चुटकी बजाकर या श्वास) से इन्हें व्यक्त कर सकते हैं।

दृश्य 1

मैं हमारे विद्यालय की आगामी अध्ययन यात्रा के लिए उत्साहित हूँ। बाहर चिड़ियों की चहचहाहट को सुनते हुए मैंने अपने कमरे में खड़े होकर अलमारी में कपड़े टटोले। विभिन्न पोशाकों को पहनकर देखने के पश्चात उपयुक्त पोशाक मिल सकी। "हाँ! वह यही है!" मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। मैं जंगल को देखने के लिए तैयार हूँ।

दृश्य 2

बस की लंबी यात्रा के बाद हम अंततः अपने गंतव्य पर पहुँच ही गए। जैसे ही हम सफारी जीप पर चढ़ने की तैयारी करते हैं, शीतल पवन चलने लगती है, जिससे पेड़ के पत्ते आपस में फुसफुसाने और नाचने लगते हैं। पेड़ भी होले-होले झूमने लगते हैं।

दृश्य 3

हम जैसे-जैसे जंगल के अंदर पहुँचते गए, विभिन्न प्रकार के जीव और पौधे दिखने लगे। जंगल में जीवन का स्पंदन था, जो कीड़े-मकोड़ों की भिनभिनाहट, चिड़ियों के चहचहाहट और पशुओं की ध्वनि से गतिशील था।

क्या आप जानते हैं?

पशुओं में भी हमारी तरह ही भावनाएँ होती हैं। क्या आपने कभी अनुभव किया है कि पशु-पक्षी ध्वनि के माध्यम से एक-दूसरे से संवाद करते हैं। पक्षी अपनी चहचहाहट से आपस में बातचीत करते हैं। गंगा नदी में पाया जाने वाला भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव, सूंस (डॉल्फिन) अंधी होती है और ये आपस में संवाद करने के लिए सीटी और चुटकी बजाने जैसी मिश्रित ध्वनियों का प्रयोग करती हैं। क्या आपने कभी देखा है कि जानवर ध्वनियों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं? कुछ उदाहरण साझा कीजिए।

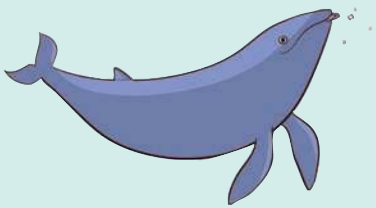

विस्तारित गतिविधि

जातक कथा या पंचतंत्र से किसी क्षेत्रीय लोक कथा का वर्णन करें। कथा को संगीत या गीत का प्रयोग कर रोमांचक बनाएँ, ताकि कहानियों को जीवंत बनाया जा सके।

गतिविधि 6— सांगीतिक तत्वों को जानें

ध्वनि का उतार-चढ़ाव और गतिशीलता

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि आप अपनी प्रसन्नता, क्रोध या दुःख को जताने के लिए कंठ स्वर के अलग-अलग ध्वनि के उतार-चढ़ाव व तीव्रता का प्रयोग करते हैं? ध्वनि के उतार-चढ़ाव और गतिशीलता के माध्यम से हम अपने अंदर की भावनाओं को व्यक्त करते हैं। ध्वनि के उतार-चढ़ाव और गतिशीलता से हमें संगीत में प्रयुक्त हुई तीव्रता या कोमलता के बारे में पता चलता है।

लय

हमारे चारों ओर लय विद्यमान है। क्या आपने कभी देखा है कि आपके चलने की लय आपके दादा-दादी से अलग है? संगीत में लय एक रूपरेखा के समान है, जो गीत के साथ बजने वाले ताल को गति देती है!

स्वर गीत

वीडियो को देखें और स्वर गीत को गाएँ। यह गीत रागम शंकरभरणम अर्थात राग बिलावल पर आधारित है। गीत को गाते समय स्वर के उतार-चढ़ाव की भिन्नता पर ध्यान दीजिए। लय बनाए रखने के लिए अपने हाथों का प्रयोग कीजिए।

नक्कारा

घुमट

ऊपर दिए गए वाद्ययंत्रों की तारता भिन्न है। नक्कारा की ध्वनि तीव्र होती है, वहीं घुमट की प्रतिध्वनि मंद होती है।

क्या आप जानते हैं?

सात स्वरों में केवल पाँच स्वरों का रूपांतर संभव है। सा और प के भिन्न प्रकार न होने के कारण इन्हें अचल स्वर कहा जाता है और शेष पाँच स्वर– रे,ग,म,ध,नि को चल स्वर कहते हैं, जिनके दो-दो प्रकार होते हैं।

स्वरों का उच्चारण हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत में

	हिंदुस्तानी	कर्नाटक
सा	सा	सा
रे	रे	री
ग	ग	ग
म	म	म
प	प	प
ध	ध	द
नी	नी	नी

आइए, जानते हैं कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत शैलियों में गाए जाने वाले 12 स्वरों के नाम।

हिंदुस्तानी संगीत	कर्नाटक संगीत
सा — षडज	*सा* — षड्जम
रे — ऋषभ	*री* — ऋषभम
कोमल ऋषभ,	*शुद्ध ऋषभम,*
शुद्ध ऋषभ	*चतुश्रुति ऋषभम*
ग — गंधार	*ग* — गंधारम
कोमल गंधार,	*सादारण गंधारम,*
शुद्ध गंधार	*अंतरा गंधारम*
म — मध्यम	*म* — मध्यमम
शुद्ध मध्यम,	*शुद्ध मध्यमम,*
तीव्र मध्यम	*प्रति मध्यमम*
प — पंचम	*प* — पंचामम
ध — धैवत	*द* — दैवतम
कोमल धैवत,	*शुद्ध दैवतम,*
शुद्ध धैवत	*चतुश्रुति दैवतम*
नी — निषाद	*नी* — निषाधम
कोमल निषाद,	*कैसिकी निषाधम,*
शुद्ध निषाद	*काकली निषाधम*

फिल्म संगीत, भजन, क्षेत्रीय गीत, लोक संगीत, वाद्ययंत्र से निकलने वाली स्वरों की मधुरता, ये सभी संगीत के स्वर– सा रे ग म प ध नी के संयोजन से बनते हैं।

भारतीय संगीत में कई शैलियाँ विद्यमान हैं, जिनमें शास्त्रीय संगीत, जैसे— हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के साथ-साथ लोक, उपशास्त्रीय, भक्ति, देशभक्ति और फिल्म संगीत भी सम्मिलित हैं।

क्या आप जानते हैं?

एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी एक विख्यात और प्रेरक कालजयी कर्नाटक गायिका रही हैं। वह पहली संगीतकार थीं, जिनको भारत सरकार ने 'भारत रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया था। कर्नाटक संगीत के अतिरिक्त उन्होंने कई भजन और संस्कृत श्लोक भी गाए। उनमें से 'हरी तुम हरो' और 'वैष्णव जन तो' गांधीजी के प्रिय भजन थे। वे अपनी मौलिक, सादगी भरी और शुद्ध गायकी के लिए जानी जाती हैं। वे अपने जादुई कंठस्वरों के साथ आजीवन गाती रहीं, जिसमें सदैव भक्ति का स्रोत मिलता था।

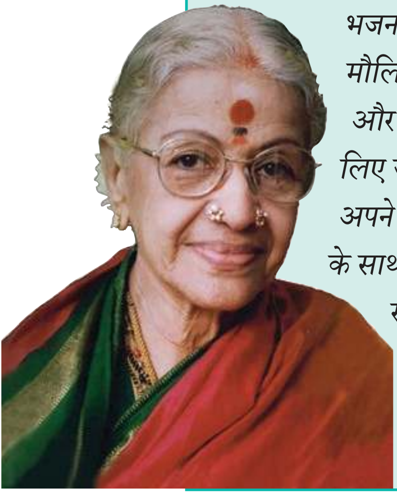

गतिविधि 7— कंठ अभ्यास

कंठ अभ्यास

नीचे दिए गए स्वरों के प्रतिमान को अलंकार या सरगम कहते हैं।

अलंकार का अर्थ होता है, 'सज्जा या आभूषण'। जिस तरह आभूषणों को सोने या कीमती पत्थरों से बनाया जाता है, ठीक उसी तरह सात स्वरों को बुनकर, श्रुति-मधुर धुन या स्वरों के समूह तैयार किए जाते हैं। सभी प्रकार के संगीत का मूल उद्देश्य श्रुति मधुर होना है, जो कानों को मनोहर लगे।

1. सारे रेग गम मप पध धनी नीसां
   सांनी नीध धप पम मग गारे रेसा

2. सारेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसां
   सांनीध नीधप धपम पमग मगरे गारेसा

3. सारेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसां
   सांनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेसा

4. सारे
   सारेग
   सारेगम
   सारेगमप
   सारेगमपध
   सारेगमपधनी
   सारेगमपधनीसां

   सांनी
   सांनीध
   सांनीधप
   सांनीधपम
   सांनीधपमग
   सांनीधपमगरे
   सांनीधपमगरेसा

5. साग रेम गप मध पनी धसां
   सांध नीप धम पग मरे गसा

6. साम रेप गध मनी पसां
   सांप नीम धग परे मसा

क्या आप जानते हैं?

भारतीय सिनेमा जगत में, भारत रत्न लता मंगेशकर, देश की सबसे प्रसिद्ध पार्श्व गायिका थीं। उन्होंने 36 भारतीय भाषाओं में व कुछ विदेशी भाषाओं में भी गाने रिकॉर्ड किए थे। उनके सुरीले कंठ की पहुँच तीनों सप्तकों में थी। 'ऐ मेरे वतन के लोगों' उनका गाया हुआ एक लोकप्रिय देशभक्ति गीत है, जिसे उन्होंने 1962 के युद्ध में शहीद हुए भारतीय सेनानियों को समर्पित किया था।

गतिविधि 8— मेडले

जब कई गीतों को या उनके स्वर-संयोजन को मिश्रित कर एक गाने के स्वरूप में, मनोरंजन के रूप में गाया जाए, उसे हम मेडले कहते हैं। आइए, हम आंनद लें।

1. प्रत्येक गीत से व्यक्त होने वाले भाव को समझने का प्रयास कीजिए। चाहे आप उनकी भाषा को न समझें किंतु क्या आप उनकी सांगीतिक विशेषताओं के माध्यम से भावों को समझ पा रहे हैं?
2. इन अंशों की लय को सुनकर आपके मन में क्या विचार आते हैं?
3. इन गीतों की सांगीतिक विशेषताओं को पहचानें।

थविल, पुंगी, चिमटा, गिटार आदि के साथ गाना गाया जा सकता है।

आइए, एक मेडले गाना सीखें

मेडले या उसमें प्रयोग किए गए कुछ गीतों को याद करें। कक्षा को समूहों में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक समूह इस मेडले का एक अंश प्रस्तुत कर सकता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के उत्साहपूर्ण गीतों को चुनकर इस मेडले को बुना गया है। खुशी से झूमें और गाते समय लय को दर्शाएँ!

किसी भी मेडले को "कराओके" के साथ गाना सीखें।

गतिविधि 9— आइए, स्वरों की मधुरता और लय का खेल खेलें

उल्लेखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इन खेलों को बनाया गया है। शिक्षक स्वयं सोच-विचारकर तैयार किए गए खेल भी प्रस्तुत कर सकते हैं, जिससे कि बच्चों को स्थानीय सांगीतिक संस्कृति का बोध कराया जा सके।

गतिविधि I— कंठ स्वर को पहचानें (सुर, बनावट, शैली)।

कक्षा के किसी एक विद्यार्थी की आँखों पर पट्टी बाँधें और कोई अन्य विद्यार्थी एक गीत प्रस्तुत करे जिसे कक्षा में पहले सिखाया गया हो। आँखों पर पट्टी बाँधने वाले विद्यार्थी को यह पहचानना है कि यह गीत किसने गाया?

शिक्षकों के लिए

- प्रत्येक विद्यार्थी के बोलने और गाने के सुर, बनावट और शैली में अंतर होता है। इस गतिविधि से विद्यार्थी अपनी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के कंठ स्वर की बनावट, शैली और गतिशीलता को समझने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी को परिवार या आस-पड़ोस के लोगों के भी कंठ स्वर की बनावट और गतिशीलता पहचानने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। इससे ध्वनि और उनके स्रोतों को पहचानने की दिशा में उनकी संवेदनशीलता विकसित होगी।
- किसी भी धुन को भिन्न-भिन्न वाद्ययंत्रों पर बजाएँ और फिर विद्यार्थियों को उनकी ध्वनि और बनावट को सुनकर उन्हें पहचानने को कहें।

गतिविधि II— स्वर-माधुर्य को सुनकर गीत को पहचानें।

किसी एक विद्यार्थी को एक गीत गुनगुनाने के लिए चुनें। विद्यार्थी ऐसा कोई गीत गाए, जिसे कक्षा में पहले सिखाया गया हो। गीत के स्वर-माधुर्य को सुनकर कक्षा के अन्य विद्यार्थियों को यह पहचानना है कि यह कौन-सा गीत है।

शिक्षकों के लिए

यह गतिविधि विद्यार्थियों में रुचि और आत्मविश्वास उत्पन्न करेगी। साथ ही साथ, प्रस्तुति को खेल के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा।

गतिविधि III— लय का खेल

विद्यार्थी 3, 4, 5, 7 और 9 के समूह में विभाजित हों, वे अपने नाम का नीचे दिए गए ढंग से उच्चारण कर सकते हैं—

तीन विद्यार्थियों के समूह का नाम होगा 'त्र्यस्त्र', और उनका नाम होगा त, कि, ट।

चार विद्यार्थियों के समूह का नाम होगा 'चतुरास्त्र' और उनके नाम होंगे ध, गे, ना, ति।

पाँच विद्यार्थियों के समूह का नाम होगा 'खंड' और उनके नाम होंगे त, क, त, कि, ट।

सात विद्यार्थियों के समूह का नाम होगा 'मिश्र' और उनके नाम होंगे ती, ती, ना, धी, ना, धी, ना।

नौ विद्यार्थियों के समूह का नाम होगा 'संकीर्ण' और उनके नाम होंगे त, क, दि, मि, त, क, त, कि, ट।

शिक्षकों के लिए

- इस खेल से विद्यार्थियों के मध्य लय (गति, चक्र, प्रतिमान) का बोध विकसित होगा।
- शिक्षकगण स्वयं के बनाए हुए प्रतिमान तैयार कर सकते हैं और विद्यार्थियों के समक्ष कोई भी लय वाला खेल, खेल सकते हैं।

स्वयं तैयार किए गए खेल बनाएँ, जिसमें स्वर और ताल, कंठ अभ्यास, मेडले या कोई भी सांगीतिक रचना के तत्व सम्मिलित हों।

अध्याय 7

वाद्ययंत्र

उद्देश्य— किसी भी सांगीतिक रचना में वाद्ययंत्र के महत्व को समझना और वाद्ययंत्र के संप्रदाय (घरानों) के विषय में जानना आवश्यक है।

वाद्यों के प्रयोग से स्वर और लय की ध्वनि को बहुस्तरीय और परिपूर्ण बनाया जाता है।

गतिविधि 1— सांगीतिक रचना में वाद्ययंत्र का योगदान

श्यामले मीनाक्षी गीत को सुनें। आप स्वयं गाने का प्रयास कीजिए।

गीत के बोल— श्यामले मीनाक्षी
रचनाकार— मुत्थुस्वामी दीक्षितार

श्यामले मीनाक्षी
सुन्दरेश्वरा साक्षी
शंकरी गुरुगुहा
सम्बुदभावे शिवेवा
पामर मोचानी
पंकज लोचानी
पद्मासन वाणी हरी
लक्ष्मी विनुते शाम्भवी
श्यामले मीनाक्षी

गतिविधि	कक्षा के साथ चर्चा
इस गीत को अपनी कक्षा में उपलब्ध किसी भी संगीत वाद्ययंत्र के साथ गाएँ। या गीत को लय के साथ गाने के लिए ताली आदि शरीर के अंगों का उपयोग कीजिए।	शरीर के अंगों के प्रयोग से आपको गीत गाने में कैसा सहयोग मिला? क्या आपको यह अच्छा लगा?
अब ऑडियो के साथ गाएँ, गीत के साथ बजाए जाने वाले वाद्ययंत्र हैं वायलिन और मृदंगम।	एक वाद्ययंत्र किस तरह रचना सुनने के अनुभव को प्रभावित करता है?
अब ऐसी ऑडियो के साथ गाएँ, जिसमें नए वाद्ययंत्र हों – एक पिआनो और ड्रम्स।	दूसरे नए वाद्यों के साथ गाने का अनुभव कैसा रहा? आपको क्या अच्छा लगा और क्यों?

“प्रत्येक संगीतकार एक कथाकार है, जो स्वर की मधुरता और लय के माध्यम से हृदय की कहानियाँ सुनाते हैं।”

— पंडित रविशंकर
भारत रत्न
सितार वादक

क्या आप जानते हैं?

भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ भारत के एक प्रसिद्ध शहनाई वादक थे। शहनाई एक सुषिर वाद्य है, जिसका ढाँचा लकड़ी का होता है और इसे मुँह से फूँक कर बजाया जाता है। इसको पहले अधिकांशतया लोक गीतों में बजाया जाता था, किंतु खाँ साहब ने इस वाद्य को "हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत" में प्रचलित किया। उन्हें धार्मिक सद्भाव का प्रतीक माना जाता था। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ उस दिन उन्हें लाल किले पर शहनाई प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया था।

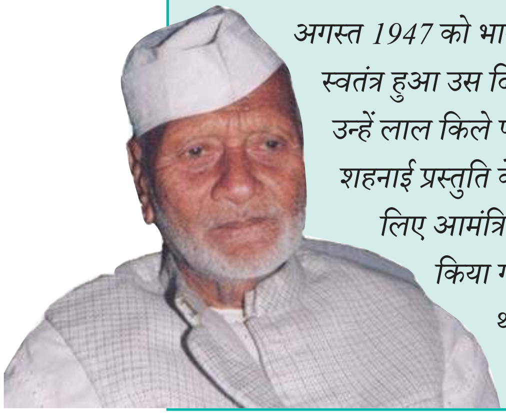

गतिविधि 2— सुनना और प्रतिक्रिया देना

किसी वाद्ययंत्र के साथ कहानी को सुनिए। वाद्ययंत्र किस तरह कथा की गहराई को बढ़ाता है, इसका वर्णन कीजिए।

सरस्वती वीणा

इस वाद्ययंत्र को बजाते समय एक कहानी सुनने का प्रयास कीजिए और अपनी भावनाओं को व्यक्त कीजिए।

गतिविधि 3— वाद्ययंत्रों के परिवार

स्वर की मधुरता और गति संगीत के दो मुख्य तत्व हैं। इनके आधार पर, वाद्ययंत्रों को विभाजित किया गया है—

- स्वर की मधुरता उत्पन्न करने वाले वाद्य
- लय प्रदर्शित करने वाले वाद्य

वाद्ययंत्रों को बजाने के ढंग के अनुसार भी उनका विभाजन किया गया है। वाद्यों के विभाजन को भली-भाँति समझने के लिए अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्रों को देखें।

तालिका में दिए गए वाद्ययंत्रों के अतिरिक्त, लय उत्पन्न करने वाले दो और वाद्यों के नाम बताएँ?

1. ______________________
2. ______________________

क्या आप दो ऐसे वाद्ययंत्रों के नाम बता सकते हैं, जिनसे मधुर स्वर उत्पन्न होता है?

1. ______________________
2. ______________________

क्या आप दो तंत्री वाद्यों के नाम बता सकते हैं, जिनसे मधुर स्वर उत्पन्न होता है?

1. ______________________
2. ______________________

क्या आप लय प्रदर्शित करने वाले, धातु के बने दो वाद्ययंत्रों के नाम बता सकते हैं?

1. ______________________
2. ______________________

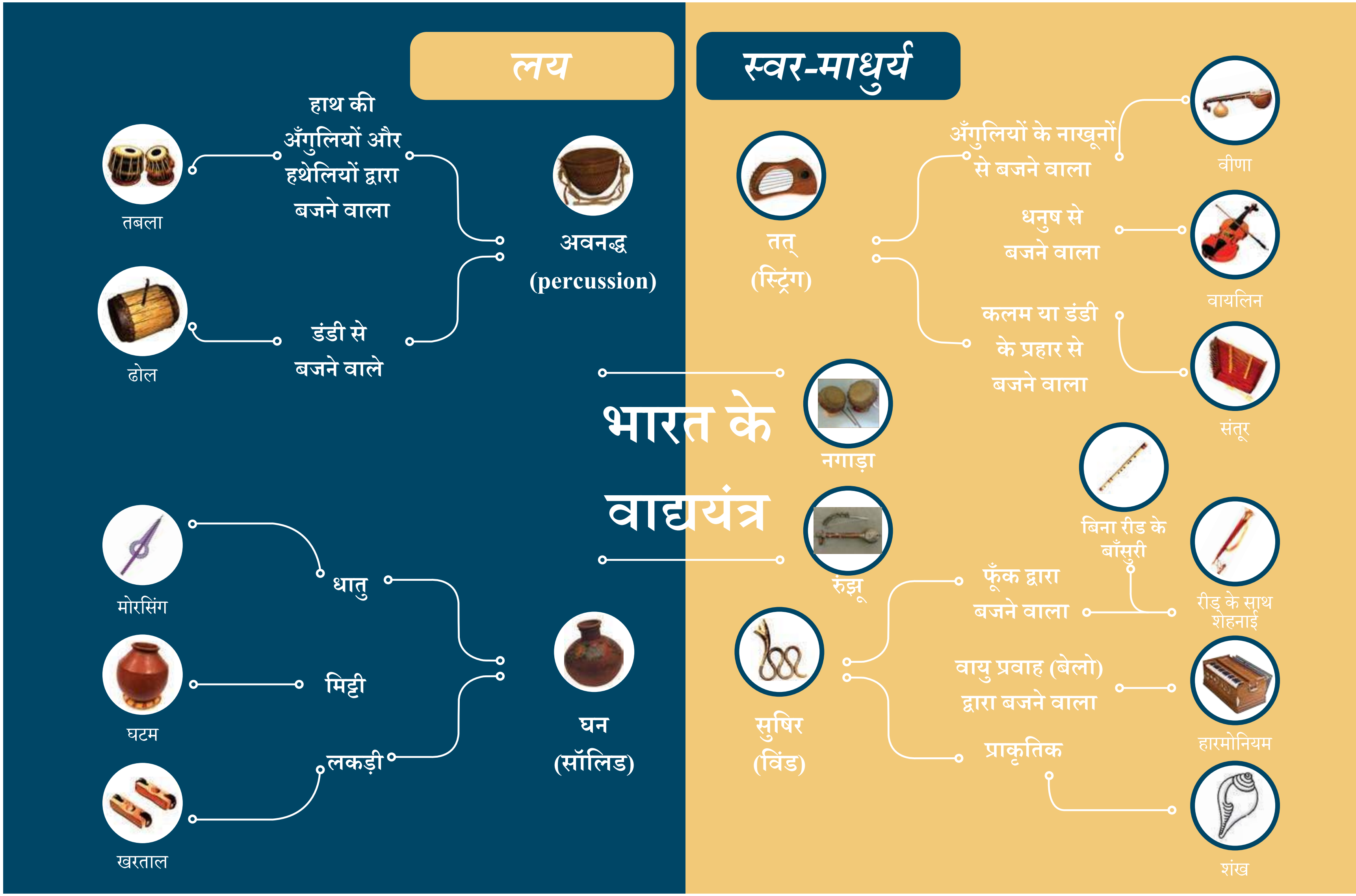

लय
स्वर-माधुर्य
भारत के वाद्ययंत्र
अवनद्ध (percussion)
हाथ की अँगुलियों और हथेलियों द्वारा बजने वाला
तबला
डंडी से बजने वाले
ढोल
घन (सॉलिड)
धातु
मोरसिंग
मिट्टी
घटम
लकड़ी
खरताल
नगाड़ा
रुंझू
तत् (स्ट्रिंग)
अँगुलियों के नाखूनों से बजने वाला
वीणा
धनुष से बजने वाला
वायलिन
कलम या डंडी के प्रहार से बजने वाला
संतूर
सुषिर (विंड)
फूँक द्वारा बजने वाला
बिना रीड के बाँसुरी
रीड के साथ शहनाई
वायु प्रवाह (बेलो) द्वारा बजने वाला
हारमोनियम
प्राकृतिक
शंख

क्यू.आर. कोड को स्कैन कीजिए और उपकरण के नाम से उसका मिलान कीजिए।

क्यू.आर. कोड	वाद्ययंत्र	क्यू.आर. कोड	वाद्ययंत्र
1.	क. सितार	2.	ख. संतूर
3.	ग. हारमोनियम	4.	घ. तानपूरा
5.	ङ. वायलिन	6.	च. शहनाई
7.	छ. तबला	8.	ज. सरोद
9.	झ. बाँसुरी	10.	ञ. पखावज

उत्तर—1 (ङ) 2 (घ) 3 (क) 4 (ख) 5 (स) 6 (ज) 7 (ग) 8 (झ) 9 (घ) 10 (च)

गतिविधि 4— अपना स्वयं का वाद्ययंत्र बनाएँ

जलतरंग एक रोचक वाद्ययंत्र है, जिसमें काँच, धातु या मिट्टी के अलग-अलग आकार के प्याले होते हैं। जिनमें राग की आवश्यकतानुसार पानी भरा जाता है। कलाकार प्रत्येक प्याले के किनारे पर लकड़ी की छड़ी से आघात करता है, जिससे संगीत उत्पन्न होता है। यह एक मधुर स्वर वाद्य है। इसे हम घन वाद्ययंत्र की श्रेणी में रख सकते है, क्योंकि प्रत्येक प्याले में जलस्तर के ऊपर उपस्थित वायु, ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कंपन करती है। यह ध्वनि एक सतह से टकराकर उत्पन्न होती है, जो प्याले का किनारा होता है।

आइए, अब हम अपनी रसोई में उपलब्ध प्याले से जलतरंग बनाएँ।

इसके लिए आपको चाहिए होगा

पाँच ठोस प्याले, पानी की एक कैन और दो पेंसिल या लकड़ी की डंडियाँ, अब हम—

- प्याले को एक मेज पर एक पंक्ति में व्यवस्थित करेंगे।
- सभी प्यालों में अलग-अलग मात्रा में पानी भरें। आप पहले प्याले को एक कप पानी से भर सकते हैं। दूसरे कप में तीन चौथाई पानी भरिए, तीसरे प्याले में आधा कप पानी भरिए और चौथे प्याले में एक चौथाई पानी भरिए।
- आपका अपना जलतरंग उपयोग के लिए तैयार है।
- प्रत्येक प्याले के किनारे पर पेंसिल या छड़ी से धीरे से प्रहार कीजिए और अपना स्वयं का संगीत बनाएँ और देखें कि जब आप अलग-अलग प्याले पर आघात करते हैं, तब ध्वनि का ऊँचा-नीचा स्तर किस प्रकार एक-दूसरे से भिन्न प्रतीत होता है?

गतिविधि 5— सुनें और सीखें

'इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियंस म्यूजियम' बेंगलुरु का ऑडियो सुनें और वीडियो देखें। आपको इनमें से कौन-सा वाद्य रुचिकर लगता है और क्यों? इस बात पर ध्यान दें कि वाद्यों को किस प्रकार विभाजित किया जा सकता है?

गतिविधि 6— आइए, इसके बारे में एक परियोजना बनाएँ

- संगीत और विज्ञान।
- किसी भी स्थानीय संगीतकार का रेखाचित्र और उनका योगदान।

संगीत वाद्ययंत्रों की जादुई दुनिया

वाद्ययंत्र एक समृद्ध सांगीतिक अनुभव बनाते हैं। वाद्ययंत्रों को उनकी उपयोगिता और जिस सामग्री से वे बनाएँ गए हैं, उन्हें उसी आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। विद्यार्थी ऐसा गीत सुनें, जिससे उन्हें आनंद मिलता हो। उसमें प्रयुक्त वाद्य की पहचान कीजिए और उन्हें विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कीजिए।

शिक्षकों के लिए

विद्यालय में स्थानीय कलाकार को कार्यशाला और प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों को कलाकारों से बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, ताकि वे जान सकें कि कैसे एक उत्तम कलाकार अपने गुरुओं से संगीत की शिक्षा प्राप्त करते हैं? वे किस प्रकार का जीवन जीते हैं और साथ ही अपना कोई अन्य अनुभव भी बच्चों के साथ साझा करना चाहते हैं। विद्यार्थियों को विशिष्ट वाद्ययंत्र को बजाने की विधि को सीखने के लिए भी प्रोत्साहित करें (शिक्षक की उपलब्धता के अनुसार)।

पंडित रविशंकर
(भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित)

अध्याय 8

ताल या तालम और राग या रागम

0679CH08

उद्देश्य—

उत्तर और दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग और ताल को समझने का प्रयास।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ताल

कहरवा ताल

मात्रा— 8
विभाग— 2

ताली— पहली मात्रा पर
खाली— पाँचवी मात्रा पर

ताल चिह्न	X				0			
मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धा	गे	न	ति	न	क	धि	न

दादरा ताल

मात्रा— 6
विभाग— 2

ताली— पहली मात्रा पर
खाली— चौथी मात्रा पर

ताल चिह्न	X			0		
मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल	धा	धी	ना	धा	ती	ना

त्रि ताल

मात्रा— 16
विभाग— 4

ताली— पहली,पाँचवी,तेहरवी मात्रा पर
खाली— नौवी मात्रा पर

ताल चिह्न	X				2				0				3			
मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा

क्या आप जानते हैं?

हिंदुस्तानी संगीत की ताल पद्धति में पहली मात्रा को 'सम' कहा जाता है।

क्या आप जानते हैं?

संगीत कलानिधि और पद्मभूषण से अलंकृत सुप्रसिद्ध मृदंगम वादक 'पालघाट मणि अय्यर' ने 10 वर्ष की आयु में अपनी पहली प्रस्तुति दी थी। उन्होंने वादन की शिक्षा तंजावुर श्री वैद्यनाथ अय्यर के सान्निध्य में प्राप्त की। मणि अय्यर ने मृंदगम पर न केवल प्रस्तुतियों में लय और ताल प्रदान करके सहयोग किया अपितु अपने वादन से उन प्रस्तुतियों को समृद्ध किया। उन्होंने अपने समय के प्रसिद्ध कलाकारों के साथ मृदंगम पर संगत भी की। उनके प्रंशसकों ने थानी अवतरणम् (एकल वादन) का खूब आनंद लिया। उनके कई शिष्य लोकप्रिय कलाकारों के रूप में सक्रिय हैं।

कर्नाटक संगीत में तालम

कर्नाटक संगीत में तालम का प्रयोग ताल देने की प्रक्रिया के लिए किया जाता है। प्रत्येक तालम में मात्राओं की एक निश्चित संख्या होती है, जिसकी पुनरावृत्ति की जाती है। इसे तालम चक्र या आवरतनम के नाम से जाना जाता है। तालम के भागों को अंगम कहा जाता है।

लघु—यह अँगुलियों की गिनती के पश्चात दी जाने वाली ताली होती है। यह 3, 4, 5, 7 या 9 मात्रा तक की हो सकती है।

इसे 1 मात्रा की संख्या के अनुसार दर्शाया गया है। सब स्क्रिप्ट के रूप में

जब लघु में तीन मात्रा होती हैं, तब हम इसे त्रिस्त्र जाति कहते हैं।

जब लघु में चार मात्रा होती हैं, तब हम इसे चतुरस्त्र जाति कहते हैं।

जब लघु में पाँच मात्रा होती हैं, तब हम इसे खण्ड जाति कहते हैं।

जब लघु में सात मात्रा होती हैं, तब हम इसे मिश्र जाति कहते हैं।

जब लघु में नौ मात्रा होती हैं, तब हम इसे संकीर्ण जाति कहते हैं।

द्रुतम—इसे हाथ हिलाने के बाद हाथ से ताली देकर दिखाया जाता है। इसमें दो मात्रा होती हैं। जिसे लिखते समय O के रूप में दर्शाया जाता है।

अनुद्रुतम—यह केवल ताली है। इसमें एक मात्रा होती है। इसे यू आकार U के रूप में दर्शाया जाता है और उपरोक्त दोनों की तुलना में प्रयोग में कम लाया जाता है।

आइए, देखें कैसे लघु द्रुतम को ताल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

रूपक तालम—इस तालम में एक द्रुतम के बाद एक लघु होता है। यह चतुस्त्र जाति रूपक ताल है, इसीलिए 6 मात्रा [द्रुतम(2) + लघु(4)] का एक चक्र है इसे OI [द्रुतम, लघु] के रूप में दर्शाया जा सकता है।

आदिताल (त्रिपुट तालम – चतुरस्त्र जाति में)—इस तालम में एक लघु उसके बाद दो द्रुतम है। यह 8 मात्रा [लघु (4)+द्रुतम (2)+ द्रुतम (2)] का एक चक्र है। इसे I00 (लघु, द्रुतम, द्रुतम) के रूप में दर्शाया जा सकता है।

रोचक शब्दावलियाँ

कर्नाटक संगीत शब्दावली	हिंदुस्तानी संगीत शब्दावली
रागम	राग
आरोहनम	आरोह
अवरोहनम	अवरोह
गमकम	गमक
लयम	लय

तानपूरा

हिंदुस्तानी संगीत में राग

भारत में शास्त्रीय संगीत की दो शैलियाँ हैं – कर्नाटक या दक्षिणात्य भारतीय शास्त्रीय संगीत और हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत। प्रत्येक शैली के स्वरों के विषय में आपको पहले के पृष्ठों में समझाया जा चुका है। कर्नाटक संगीत में वीणा, वायलिन, बाँसुरी, नागस्वरम, मृदंगम, घटकम, खंजीरा और मोर्सिंग जैसे वाद्ययत्रों का प्रयोग होता है। इनकी रचनाएँ सामान्यतया: संस्कृत, तेलगू, कन्नड़, मलयालम और तमिल भाषा में बद्ध होती हैं। वहीं हिंदुस्तानी संगीत में तानपूरा, बाँसुरी, वायलिन, सितार, सरोद, सारंगी, संतूर, तबला और पखावज वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है। इनकी रचनाएँ प्रायः हिंदी, संस्कृत और बृजभाषा में बद्ध होती हैं।

राग और ताल के विषय में समझने के लिए वीडियो देखिए।

राग एक सप्तक पर आधारित होता है। प्रत्येक सप्तक में स्वरों का निश्चित आरोह व अवरोह क्रम होता है। स्वरों से बनी सीढ़ियों की कल्पना कीजिए! राग के अनुसार सप्तक में स्वर परिवर्तित होते रहते हैं।

लिपि प्रणाली या स्वर लिपि

स्वरों को लिखते समय तार सप्तक के स्वरों को स्वर के ऊपर लगे एक बिंदु द्वारा दर्शाया जाता है, जैसे— 'सां' (तार सप्तक)। इसी प्रकार मंद्रसप्तक के स्वरों के नीचे बिंदु लगाकर दर्शाया जाता है 'ऩि' (मंद्र सप्तक)। वहीं (मध्य सप्तक) में स्वर को 'सा' के रूप में लिखा जाता है।

राग की जातियाँ

आइए, रागों में प्रयुक्त होने वाले रोचक शब्दावलियों के विषय में जानें, जो कि एक विशिष्ट समूह के लिए उपयोग की जाती है। यदि किसी राग में पाँच स्वरों का प्रयोग होता है, तो उसे 'औड़व जाति' का कहा जाता है। यदि किसी राग में छह स्वरों का प्रयोग होता हो, तो उसे 'षाड़व जाति' का कहा जाता है। वहीं यदि किसी राग में सात स्वर हों, तो उसे 'संपूर्ण जाति' का कहा जाता है।

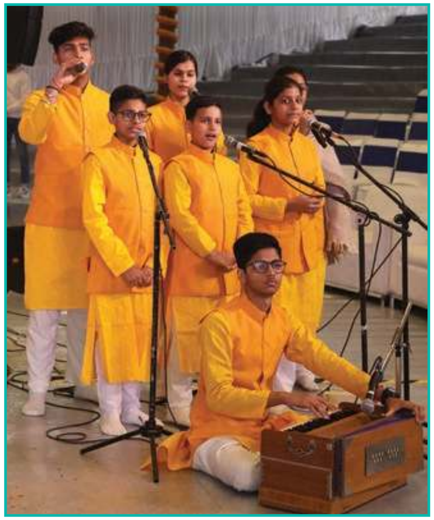

गतिविधि 1— राग भूप

राग भूप में निम्नलिखित स्वर होते हैं—

आरोह/आरोहन— सा रे ग प ध सां

अवरोह/अवरोहनम— सां ध प ग रे सा

राग हंसध्वनि में निम्नलिखित स्वर होते हैं—

आरोह/अवरोहनम— सा रे ग प नी सां

अवरोह/अवरोहनम— सा नी प ग रे सा

यदि आप एक सप्तक को गमक (अलंकार) का प्रयोग कर सजाते हैं, एक निश्चित स्वरों और विशेष स्वर समुदायों को बजाते हैं, तो यह एक 'राग' बन सकता है। प्रत्येक राग कुछ प्रमुख स्वरों और विशेष स्वर समूहों से अंलकृत होता है।

संस्कृत में 'राग' का अर्थ होता है, जो 'मन का रंजन करे' प्रत्येक राग मन में कुछ भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। इसे 'रस' कहते हैं।

राग और उससे संबंधित भावनात्मक प्रतिक्रिया को समझने के लिए राग और रस पर आधारित वीडियो देखिए।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में रचना से तात्पर्य संगीत के तत्वों, जैसे— माधुर्य (राग), गति (ताल) और उसकी नियमित आवृति-लय और बोल की संरचित व्यवस्था से है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रचना को मुख्य रूप से 'बंदिश' निबद्ध कहा जाता है और कर्नाटक संगीत में उसे 'कृति' कहते हैं।

गतिविधि 2— राग बिलावल में स्वरमालिका सीखें

जब किसी रचना में सरगम अर्थात स्वरों का प्रयोग करवाया जाए, जो उसे 'स्वरमालिका' कहते हैं। स्वरमालिका को अलग-अलग रागों में भी बद्ध किया जा सकता है। आइए, राग बिलावल में एक स्वरमालिका सुनें, जो कि तीनताल में बद्ध है।

स्वरमालिका

राग— बिलावल

ताल— तीनताल

रचनाकार— पारंपरिक

आरोह— सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह— सां नी ध प म ग रे सा

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
सा	प	म	ग	रे	ग	रे	सा	सा	रे	सा	ऩि	ध़	ऩि	सा	-
सा	ग	रे	म	ग	प	म	ग	ग	म	प	म	ग	रे	सा	-

अन्तरा

प	सां	नि	ध	प	म	प	ध	नी	-	सां	-	रें	रें	सां	सां
सां	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा

रोचक शब्दावली

> राग यमन का प्रमुख भाव शृंगार या प्रेम है। इस राग पर आधारित कई लोकप्रिय फिल्मी गाने भी बने हैं। राग यमन पर आधारित प्रसिद्ध गीतों को ढूँढ़ने का प्रयास करें। उन्हें सीखें और गाएँ।

गतिविधि 3— राग यमन पर आधारित एक बंदिश सीखें

राग यमन में बंदिश सीखने के लिए यह वीडियो देखें।

राग यमन में आरोह या आरोही क्रम इस प्रकार है— नी रे ग म॑ ध नी सां

इस राग का अवरोह या अवरोही क्रम इस प्रकार है— सा नी ध प म॑ ग रे सा

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस राग का मध्यम स्वर नियमित मध्यम स्वर से ऊँचा है, जिसे आपने पहले गाया है। एक सुर में यह छोटा-सा परिवर्तन गाने का भाव भी परिवर्तित कर देता है।

इस गीत में भगवान कृष्ण को बाँसुरी बजाते हुए और वृंदावन की गोपियों को उस मुरली की धुन पर नाचते हुए वर्णित किया गया है।

राग यमन

छोटा ख्याल — कान्हा बाँसुरी

स्थायी

आज बजाई कान्हा बाँसुरी
मोह लई सगरी बृज नारी प्यारी।।

अंतरा

बृंदावन की कुंज गलिन में
संग बृखबान दुलारी प्यारी।।

तीन ताल

स्थायी

1 X	2	3	4	5 2	6	7	8	9 0	10	11	12	13 3	14	15	16
						प आ	पम॑ ज	गरे बऽ	साऩी जाऽ	ध़ ई	ऩी का	रे न्हा	गम॑ बाँ	प ऽ	म॑ सु
प री	- ऽ	रे ऽ	रे ऽ	ग ऽ	- ऽ	प आ	पम॑ ज	ग ब	रे जा	सा ई	ऩी का	रे न्हा	गम॑ बाँ	प ऽ	म॑ सु
प री	- ऽ	रे ऽ	रे ऽ	ग ऽ	प मो	म॑ ह	ध ल	प यी	- ऽ	म॑ स	म॑ ग	ग री	- ऽ	पम॑ बृ	गरे ज
रे ना	ग ऽ	रे री	सा प्या	ऽ ऽ	सा री										

अंतरा

1 X	2	3	4	5 2	6	7	8	9 0	10	11	12	13 3	14	15	16
								- ऽ	प बृ	- दा	सां ऽ	सां व	सां न	सां की	- ऽ
- -	नीध कुन्	नी ज	रें ग	नी ली	नीध न	प में	- ऽ	- ऽ	म॑ बृं	धनी दा	सां ऽ	सां ब	सां न	सां की	- ऽ
- -	नीध कुऽ	नी ज	रें ग	नी ली	नीध न	प में	- ऽ	- ऽ	म॑ सं	ध घ	म॑ ली	धनी न्ही	रेंनी ऽ	नी बृ	नीध ख
प बा	- ऽ	रे न	रे दु	रेग लाऽ	परे ऽरी	प आ	पम॑ ज								

क्या आप जानते हैं?

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे ने स्वरलिपि पद्धति को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रचलित किया। वे पेशे से वकील थे। वे विद्वान और दीर्घ स्मरणशक्ति से संपन्न थे। उन्होंने पूरे देश का भ्रमण कर कई महान संगीतकारों से सांगीतिक रचनाएँ एकत्रित की। कई प्रकार की बाधाओं के बावजूद उन्होंने कई प्रकार की भिन्न-भिन्न रचनाएँ संकलित की और उन्हें क्रमिक पुस्तक मालिका में प्रकाशित भी किया, जो कि छह खंडों में विभाजित है।

आइए, गुरु पर आधारित राग यमन में (क्रमिक पुस्तक मालिका खंड एक से रचना) एक बंदिश (निबद्ध, रचना) सीखें

स्थायी

गुरु बिन कैसे गुण गावे
गुरु ना माने तो गुण नहीं आए
गुनियन में बेगुनी कहावे।

अंतरा

माने तो रिझावे सबको चरण गहे
सादिकन के जब आवे अचपल ताल सुर।

ताल – तीनताल

*S एक शब्द के विस्तार को दर्शाता है।

*- हिंदुस्तानी संगीत स्वरलिपि पद्धति में एक स्वर के विस्तार को दर्शाता है।

स्थायी

धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
								प गु	प रु	नी बि	ध न	प कै	ध ऽ	प से	- ऽ
म॑ गु	रे ण	म॑ गा	म॑ ऽ	प ये	- ऽ	- ऽ	- ऽ	प गु	नी रू	ध ना	प मा	- ऽ	म॑ ने	ग तो	रे ऽ
ग गु	रे न	गम॑प नाऽऽ	रे ही	सा आ	रे ऽ	सा ये	- ऽ	सा गु	सा नि	रे य	रे न	ग मे	म॑ ऽ	- वे	म॑ ऽ
प गु	प नी	- ऽ	नी क	म॑ हा	ध ऽ	प वे	- ऽ								

अंतरा

								प मा	- ऽ	प ने	म॑ ऽ	ग तो	- ऽ	रे री	- ऽ
ग झा	प ऽ	सां वे	धा ऽ	सां स	सां ब	सां को	सां ऽ	सां च	सां र	गं ण	रें गा	सां हे	रें ऽ	सां सा	- ऽ
नी दी	ध ऽ	सां क	सां न	नी के	नी ऽ	म॑ ज	प ब	प आ	ग ऽ	प बे	- ऽ	ग अ	रे च	सा प	सा ल
सारे ताऽ	गग ऽऽ	पध ऽऽ	नीसां ऽऽ	नीध ऽऽ	पम ऽऽ	गरे ऽऽ	सासा सुर								

कर्नाटक संगीत के त्रिमूर्ति

त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर और श्यामा शास्त्री को कर्नाटक संगीत का 'त्रिमूर्ति' कहा जाता है। ये सभी कर्नाटक संगीत के अग्रणी रचनाकार माने जाते हैं। त्यागराज अपनी रचनाओं में अपना नाम त्यागराज ही लिखते थे, जबकि मुथुस्वामी दीक्षितर की कृतियाँ 'गु□गुहा' और श्यामा शास्त्री की कृतियाँ 'श्यामकृष्णा' नाम से थी। त्यागराज की अधिकांश गीत भगवान राम से संबंधित हैं। मुथुस्वामी स्वामी दीक्षितर संस्कृत भाषा के विद्वान थे। उन्होंने विभिन्न देवी-देवताओं पर आधारित कृतियाँ गाईं। श्यामा शास्त्री ने देवी कामाक्षी पर विद्वतापूर्ण कृतियों की रचना की।

गतिविधि 4— आइए, सीखें राग कल्याणी में एक गीतम

राग कल्याणी में गीतम के स्वर (नोट्स) और साहित्य (गीत) सीखने के लिए ऑडियो सुनें। गीतम कर्नाटक शास्त्रीय संगीत ईश्वर या देवी पर आधारित स्तुतिपरक रचना है। यह गीतम राग कल्याणी पर आधारित है और त्रिपुट ताल में बद्ध है। त्रिपुट ताल में सात मात्राएँ होती हैं, जो 3+2+2 के विभाग में विभाजित हैं। कल्याणी के स्वर शंकराभरणम से सादृश्य हैं, केवल मध्यम स्वर को छोड़कर, क्योंकि कल्याणी में मध्यम ऊँचा है।

काव्य

कमला जादला
विमला सुनयना
कारीवरदा करुणाम बुद्धे
करुणा शारदे कमला कांता
केशी नरका सुरा विभेदना
वरदा वेल्लापुरा सुरोत्तमा
करुणा शारदे कमला कांता

यह गीत भगवान विष्णु पर आधारित है, जो ब्रह्मांड के संरक्षक हैं। इस गीत में उनकी करुणा और वैभव का वर्णन है।

कमलाजादला

रागम— कल्याणी
ताल— त्रिपुर
रचनाकार— पुरन्दरदास

आरोहनम— सा रे ग म प ध नी सां
अवरोहनम— सां नी ध प म ग रे सा

सां क	सां म	सां ला	नी जा	ध	नी द	सां ला
नी वि	ध म	प ला	ध सु	प न	म य	प ना
ग का	म री	प व	प र	ध दा	ध क	नी रु
ध णाम	प	म बु	प द्धे	ग	रे	सा
ध़ क	ऩी रु	ध़ णा	ग शा	रे र	ग दे	,
म का	प म	,	म ला	ग	रे	सा
रे कां	,	,	सा ता	,	सा	,
ग के	म	प शी	म ना	प र	ध का	प
नी सु	ध रा	प वि	म भे	प	ध दा	प ना
ग व	म र	प दा	प वे	ध	ध ला	नी
ध पु	प रा	म सु	प रो	ग	रे त्त	सा मा
ध़ का	ऩी रु	ध़ णा	ग शा	रे र	ग दे	,
म क	प म	,	म ला	ग	रे	सा
रे कां	,	,	सा ता	,	S	,

गायन तकनीक

गमक वह विशेष अलंकरण है जिनका प्रयोग कलाकार अपने गायन को सुंदर और अभिव्यंजक बनाने के लिए करते हैं। स्वर की तारता को अगले स्वर तक विस्तार (काकु) द्वारा कंपन करते हुए नियंत्रित किया जाता है।

यहाँ रागम कल्याणी में कुछ स्वर अभ्यास दिए गए हैं। उनकी बात सुनिए और अभ्यास कीजिए।

1.

सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
सां	,	,	,	सा	,	,	,
ग	रे	सा	ऩी	सा	रे	ग	म
सा	रे	ग	म	प	ध	नी	सां

2.

सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
सां	,	,	,	सा	,	,	,
ग	रे	सा	ऩी	सा	सा	ऩी	सा
सा	नी	सा	रे	ग	म	प	म
ग	रे	सा	ऩी	सा	रे	ग	म
सा	रे	ग	म	प	ध	नी	सां

3.

सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
सां	,	,	,	सा	,	,	,
ग	रे	सा	ऩी	ध	ऩी	सा	ऩी
सां	ऩी	सा	रे	ग	म	प	म
ग	रे	सा	ऩी	सा	सा	ऩी	सा
सां	ऩी	सा	रे	ग	म	प	म
ग	रे	सा	ऩी	सा	रे	ग	म
सां	रे	ग	म	प	ध	नी	सां

4.

सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
सां	,	,	,	सा	,	,	,
ग	रे	सा	ऩी	ध़	प़	ध़	ऩी
सां	ऩी	सा	रे	ग	म	प	म
ग	रे	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	ऩी
सां	ऩी	सा	रे	ग	म	प	म
ग	रे	सा	ऩी	सा	सा	ऩी	सा
सां	ऩी	सा	रे	ग	म	प	म
ग	रे	सा	ऩी	सा	रे	ग	म
सा	रे	ग	म	प	ध	नी	सां

अध्याय 9

भारतीय संगीत में विविधता

उद्देश्य— भारतीय संगीत की विभिन्न शैलियों के गीत सुनें और सीखें।

0679CH09

आइए, एक छत्तीसगढ़ी गीत सीखें

सुवा गीत

भाषा— छत्तीसगढ़ी (सुवा गीत)

दे तो दाई, तोर पैरी ला
कहाँ जाबे? सुवा नाचे बर, सुवा नाचे।
दे तो दाई, तोर करधन ला
कहाँ जाबे? सुवा नाचे बर, सुवा नाचे।
कहाँ तो दाई तोर ऐंठी ला,
कहाँ जाबे? सुवा नाचे बर, सुवा नाचे।
दे तो दाई, तोर सुँतिया ला,
कहाँ जाबे? सुवा नाचे बर, सुवा नाचे।
दे तो दाई, तोर बँहुटा ला,
कहाँ जाबे? सुवा नाचे बर, सुवा नाचे।

अर्थ

एक नन्हीं बालिका सुवा नृत्य करने के लिए जाना चाहती है, इसलिए वह अपनी माँ से उसके गहनों की माँग कर रही है, ताकि वह भी सज-धज कर अपनी सहेलियों के साथ सुवा नृत्य में शामिल हो सके। माँ प्रश्न करती है कि, गहनों का क्या करेगी। तब नन्हीं बालिका बड़े भोलेपन से कहती है कि वह सुवा नाचने जायेगी। यह गीत प्रश्नोत्तर शैली में है।

शिक्षकों के लिए

यहाँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों से कुछ गीत सुझाए गए हैं। शिक्षकों से अनुरोध करते हैं कि वे इस सूची में से कम से कम पाँच गीत सिखाएँ। आप वे क्षेत्रीय गीत भी सिखा सकते हैं, जिन्हें सीखकर आपके विचार से बच्चे प्रसन्न होंगे।

आइए, केरल का नाव गीत वंचिपट्टु सीखें

आइए, वंचिपट्टु गीत सीखें। वंचिपट्टु गीत एक पारंपरिक नौका दौड़ से जुड़ा है, जो कि केरल के बैकवॉटर में होती है। यह नौका दौड़ राज्य में सांस्कृतिक उत्सवों का एक अभिन्न अंग है। वे उत्साहपूर्वक लयबद्ध रूप में इसे गाते हैं।

केरल की सर्प नौका दौड़

कुट्टानंदन पुनजाइयले

भाषा— मलयालम

कुट्टानंदन पुनजाइयले
कोचु पेनने कुइलाले
कोट्टू वेनम कुजाल वेनम, कुरावा वेनम
कुरानंदन पुनजाइयले, थीथाइ थाका थइयइ थोम
कोचुपेने कुइलाले, थीती थारा थई थोम
कोट्टु वेनम कुजल वेनम, कुरावा वे नम
(ओ... थीथीतारा थीथीथई थीथाइ थाका थइ थोम) × 4
वारावेल कनारू वेनम कोडी थोरानंगल वेनम
विजयश्री लाली थाराइ वारुन्नु नजंगल
(ओ... थीथीतारा थीथीथई थीथाइ थाका थइ थोम) × 4
करूथा चीराकु वाचु थीथाइ थाका थइ थइ थोम
अरयाना किलीपोल थीथीथारा थइ थोम
करूथा चीराकु वेचोर अरयाना किलीपोल
कुथीचु कुथीचु पेयुम कुथीरा पोल
(ओ... थीथीतारा थीथीथई थीथाइ थाका थइ थोम) × 4

अर्थ— इस गीत में केरल राज्य के कुट्टनाड क्षेत्र की सुंदरता का वर्णन हुआ है। इसके साथ ही यह गाना गाने की इच्छा और प्राकृतिक परिवेश का आनंद लेने को भी व्यक्त करता है।

क्या आप जानते हैं?

असम के सदिया में वर्ष 1926 को एक उत्कृष्ट संगीतकार का जन्म हुआ, जिनका नाम भूपेन हजारिका था। वे असम के पार्श्व गायक, गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, कलाकार, संपादक, फिल्म निर्माता और शिक्षाविद आदि थे, जिन्हें व्यापक रूप में 'सुधा कोंथो' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने संगीत को 'सामाजिक परिवर्तन के साधन' के रूप में प्रयोग किया और कई प्रेरणादायक गीतों की रचना की। उन्हें भारत रत्न, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार और संगीत नाटक अकादमी सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। उनका निधन 5 नवंबर 2011 को हुआ था।

पूर्वोत्तर, असम में ई मातीरे मोरे मोटे जैसी धुनें हैं।

आइए, एक असम का गीत सीखें

भाषा— असमिया

ई मातीरे मोरो मोटे
माटीके सुमीलो
ई मातीते जीबोन सोबी
आनाकी आनकी मोसीलो

दोर आखार रोहोन
कियोनो लागे लागे
हागोर तोलीर मानीक
कियोनो लागे लागे
आन्हा आन्हा
मातीर भूकुट मोनोर मालोती भूतोलोन

मोनोर कोरोनीरे
होरोर पापोरीरे आजी
हुकुमार थापोना होजुवा
हुन्डोर हुडीनोर
नोतोन दृष्टिकोना नोमुवा

अर्थ— इसमें गायक पृथ्वी के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त कर रहा है। आकाश के रंगों तथा समुद्र के मोतियों के बजाय धरती पर प्रसन्नता ढूँढ़ने की बात करता है। गायक को लग रहा है कि प्रकृति के सभी पक्ष जैसे सूरज की रोशनी या जंगल आदि पृथ्वी पर हैं और अत्यंत मूल्यवान हैं।

आइए, पश्चिम में गुजरात की धरती पर चलें और पोटाना जे दरिया गीत सीखें

भाषा— गुजराती

पोटना जे दरिया मां
पोतानी जा डुबकी थी
जात नू अमूल मोती लो
इवो कोन छे खलासी
मने कही दो ने
एना थाम ने ठेकाना
मने दई दो ने
इवो कोन छे खलासी

मने कही दो ने
गोती लो, तामे गोती लो गोती लो

अर्थ— यह गीत जीवन को सागर यात्रा की उपमा देते हुए उस यात्रा को दर्शाता है। नाविक सागर में अपनी नाव की दिशा निर्धारित करते हुए आगे बढ़ाता है। इस यात्रा में प्राप्त मोती जीवन के उन मूल्यवान क्षणों और उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करते हैं, जो सागर में यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभवों से मिलते हैं।

आइए, सीखें, गुजरात का गरबा

गरबा गुजरात राज्य की एक पारंपरिक गायन विधा और लोक नृत्य है। यह नृत्य मुख्य रूप से नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है। इस प्रमुख अवसर पर पारंपरिक वाद्ययंत्र, जैसे— ढोल, तबला, ढोलक और मधुर वाद्ययंत्र जैसे हारमोनियम और बाँसुरी आदि का वादन होता है। हाथ से ताली देना और डांडिया की छड़ियों को एक-दूसरे से मिलाकर बजाना भी लय प्रदर्शन का कार्य करता है। मधुर स्वर समुदायों की इस प्रकार पुनरावृत्ति की जाती है, जो कि आकर्षक प्रतीत होती है और हर्ष तथा उल्लास की भावना को प्रकट करती है। नृत्यांगना भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनुराग को इस गीत के माध्यम से प्रकट कर रही है। नृत्यांगना कृष्णा (कनुड़ा) के प्रति अपने प्रेम के बारे में गा रही है।

गीत के बोल — थारी बनकी रे

थारी बांकी रे पगलाड़ी नु
फमतू रे मने, घमतू रे आतो
कंचूरे कनोडा ताने अमतु
थारी पगनू रे पगरखु चम
फमतु रे माने, घमतु रे आतो
कंचूरे कनोडा ताने अमतु
फमतू रे मने, घमतू रे आतो
कंचूरे कनोडा ताने अमतु
थारी बाकी रे पगलाड़ी नु
फमतु रे माने धमतु रे आतो
कंचूरे कनोडा ताने अमतु

थाविल

चेन्डा

आइए, तमिल गीत सीखें

अतिन्तोम

अतिन्तोम, तिन्दियुम तोमतना
तिन्दाति तिन्तोम,
तकधिना तिन्दुयुम तोमतना,
तिन्दाति तिन्तोम

आडादु जव्वादु मनम आडिडुम बोम्मी,
आन्डवनै पाराटुम इसै केलडि बोम्मी,
एन पाटु वन्दालुम मनम तुल्लिडुम बोम्मी,
अवन पाटु इल्लादु इडम एंगेडि बोम्मी,
मुकन्नन मुत्ताका तन्द पाटु पडिच्चेन,
पाटिले पलाकोडि नेन्जम नानुम पुडिच्चेन,

अतिन्तोम, तिन्दियुम तोमतना
तिन्दाति तिन्तोम,
तकधिना तिन्दुयुम तोमतना,
तिन्दाति तिन्तोम

अर्थ— इस गीत में गायन के आनंद को दर्शाया गया है। इस गीत में लयबद्ध तत्व हैं, जो इसे आकर्षक बनाते हैं।

कन्नड़ गीत

चेलुवय्या

चेलुवय्या चेलुवो थानी थन्दाना
चिन्मया रूपे कोलन्ना कोले
चेलुवय्या चेलुवो तानी तन्दाना
चिन्मया रूपे कोलन्ना कोले

अथा नोडु इथा नोडु
चित्रदुर्गा कोटे नोडु
हाथी नोडु नन्ना तावोरना

चेलुवय्या चेलुवो थानी थन्दाना
चिन्मया रूपे कोलन्ना कोले
चेलुवय्या चेलुवो तानी तन्दाना
चिन्मया रूपे कोलन्ना कोले

अर्थ— यह कर्नाटक का आनंद से भरा लोकगीत है, जिसमें लोगों को नृत्य करने और कर्नाटक के चित्रदुर्गा किला सहित आस-पास की सुंदरता को देखने के लिए आमंत्रित किया गया है।

> हमारे देश भारत के प्रत्येक क्षेत्र के विभिन्न प्रकार के गीतों को सीखते समय आपको इस अध्याय के शीर्षक 'विविधता की धुन' की महत्ता का अनुभव हुआ होगा।

जतन करव धरती के

भाषा— छत्तीसगढ़ी

जतन करव धरती के संगी, जतन करव रे,
जतन करव भुइया के संगी, जतन करव रे,
मोर जतन करव रे, मैं माटी महतारी अँव,
सुख-दुःख के संग देवइया संगवारी अँव,
तुंहर अँगना म ठाढ़े, जनम के भूखे प्यासे,
अपन तन के पसीना दे देंव, मोर मन गद-गद हाँसे,
तुंहर हंडा के बसनी मैं, सरग के दुवारी अँव।
मैं माटी महतारी अँव...........
अपन आँखी के आँसू ल, तुमन मोला दे दव,
मोर ओंठ के हाँसी ल, तुमन चुपे ले लव।
तुंहर आँखी के सपना मैं, सोनहा थारी अँव।
मैं माटी महतारी अँव।
तुंहर सपना करम के डार म फुलही फुलवारी,
काबर कखरो आगू म, हाथ लगाए ल परही।
देवारी के दिया मैं, फागुन के पिचकारी अँव।
मैं माटी महतारी अँव।

अर्थ— मिट्टी जो माँ की तरह होती है, वह देशवासियों से कह रही है कि, मेरी देखभाल करो। मैं तुम्हारे दुःख-सुख का साथी हूँ। मैं तुम्हारे आँगन में कबसे भूखी-प्यासी खड़ी हूँ। अपने तन से पसीना बहाकर मेरी प्यास बुझाओं, जिससे मेरा मन खुशी से प्रसन्न हो जाये।

दुखिया बाई-

दुखिया बाई छत्तीसगढ़ की सुप्रसिद्ध लोक गायिका थीं। उसने घुमंतु समुदाय की देवार जाति में जन्म लिया। उनका जन्म कहाँ हुआ ? कब हुआ है अज्ञात है। किन्तु अपनी गायन प्रतिभा के बल पर पूरे छत्तीसगढ़ में जानी जाती है। आकाशवाणी रायपुर से उनके अनेकों छत्तीसगढ़ी लोक गीत आज भी लोकप्रिय हैं, उन्हें अक्षर ज्ञान नहीं था। किन्तु दर्जनों लोकगीत उनके कंठ पर बसे थे। उनका निधन सन् 1999 में गंडई में हुआ ।

क्या आप जानते हैं?

भारतीय संगीत को समाज की परंपराओं और प्रथाओं से लिया गया है। जिसमें भारतीय संगीत की अभिव्यक्ति के लिए प्राथमिक रूपांकन के रूप में भक्ति या समर्पण सबसे पहले आता है। कीर्तन, शबद, भजन और कव्वाली-संगीत में भक्ति पक्ष के उदाहरण हैं।

• गुरूद्वारा (शबद गीत)

ईश्वर की ओर भक्ति का मार्ग

सभी बच्चों ने लोगों को विभिन्न प्रकार की भक्तिपरक रचनाएँ गाते और पूजा करते देखा होगा। आइए, उनमें से कुछ को सीखें।

कीर्तन (गीत)

इसे भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी ने गाया है।

भाषा— मराठी

जे का रंझाले त्यासी होन जो आपूले,
तोची साधु ओडे खावा देव तेथेची जनावा
तुकमाने सांगु किती तोची भगवंतत्याचा मूरति।

अर्थ— संत तुकाराम की यह रचना अभंग कीर्तन है। यह गीत यह संदेश देता है कि एक सच्चे मनुष्य को इस रूप में पहचानें कि जो दूसरों के संकट और पीड़ा को गहराई से अनुभव करता है और उसके प्रति सहानुभूति रखता है। ऐसे दयालु व्यक्तियों के हृदय में भगवान का वास होता है।

शबद (गीत)

नानक चिंता मत करो, चिंता तिस ही है
जल मे जंत उपाइया, तीना भी रोजी दे!
नानक चिंता मत करो, चिंता तिस ही है
ओतइ हट ना चलैइ, ना को किरस करै
सौदा मूल ना होवै, ना को लाये ना देये
जिया का आहार जिया, खाना इहु करे
विच उपाय साएरा, तीना भी सार करै
नानक चिंता मत करो, चिंता तिस ही है।

अर्थ— 'शबद' ऐसे गीत हैं, जो गुरुद्वारे में गाए जाते हैं। यह गीत अत्यधिक चिंता करने से मुक्त होने का परामर्श देता है। क्योंकि सब कुछ अंततः ईश्वरीय इच्छा से निर्धारित होता है। भगवान ने पानी में जीव-जंतु बनाए हैं,वह उनका भरण-पोषण भी करता है। गुरु नानक देव जी अपने शिष्यों से चिंता को छोड़कर विश्वास रखने को कहते हैं। चाहे नदी हो या महासागर, इसमें रहने वाले जीव-जंतु जीवित रहने में सक्षम हैं, क्योंकि वे प्रकृति के नियमों के अनुसार रहते हैं। ईश्वर सभी प्राणियों का ध्यान रखता है।

नाचा (नचौडी)

भाषा— छत्तीसगढ़ी

गुरू के बाना बांध लियो बाना जी, गुरु के बाना बांध लियो बाना।
पहिली सुमरनी जी चंदा-सुरुज ल, जग म करे उजियारा जी।
दूजे सुमरनी सब संतन को, भूले चुके माफी जी
तीजे सुमरनी माता पिता को, जग म दिए अवतारा जी।
गुरु के बाना बांध लियो बाना जी।

अर्थ—लोकनाट्य नाचा में इसका गायन वंदना के रुप में किया जाता है। पहले गुरु का सुमिरन फिर संत समाज और अंत में माता-पिता का सुमिरन किया जाता है, क्यों कि माता-पिता हमें जन्म देते हैं।

गिरिजाघरों में गाए जाने वाले भजन

मुझे मेरे दीपक में तेल दो, मुझे जलाते रहो
मेरे दीपक में तेल दो, मैं प्रार्थना करता हूँ
मेरे दीपक में तेल देकर मुझे जलाते रहो
मुझे दिन के अंत तक जलाते रहो
आइए, और होसाना गाओ होसाना गाओ
होसाना गाओ
राजाओं के राजा के लिए

अर्थ— यह गीत एक ईसाई भजन है। यह सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर में आस्था और भक्ति को बनाए रखने के लिए अपने शरीर रूपी दीपक में विश्वास रूपी ईंधन अर्थात् तेल को माँगता है। यह राजाओं के राजा के रूप में ईसामसीह को चित्रित करता है।

आइए, एक सूफी गीत सीखें

मो मीना मा

भाषा— फारसी

मो मीना मा दुध लेके इमा याके
जिसमिशा मा दुध लेकिन जा याके
जामा गुफ्तमा जान हां ये शान

अर्थ— यह सूफी गीत जलाल-उद-दीन मोहम्मद बल्खी जो रूमी नाम से विख्यात थे, उन्होंने फारसी भाषा में लिखा था। 'मसनवी' एक ऐसा काव्य संग्रह है, जो कुरान से संबंधित उपाख्यानों तथा कहानियों से प्रेरित है। मसनवी में उल्लेखित यह सूफी गीत सभी के अंदर एक ही दिव्यता की बात करता है और कहता है

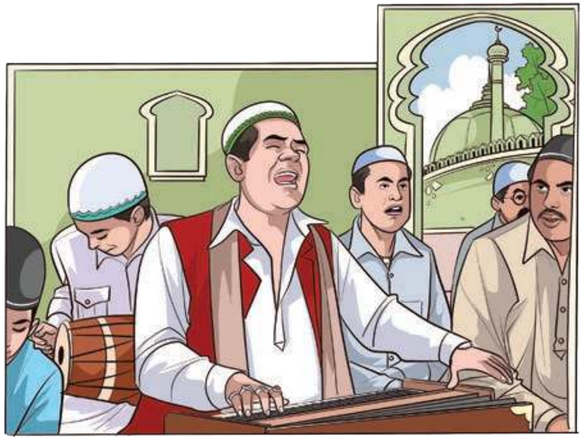

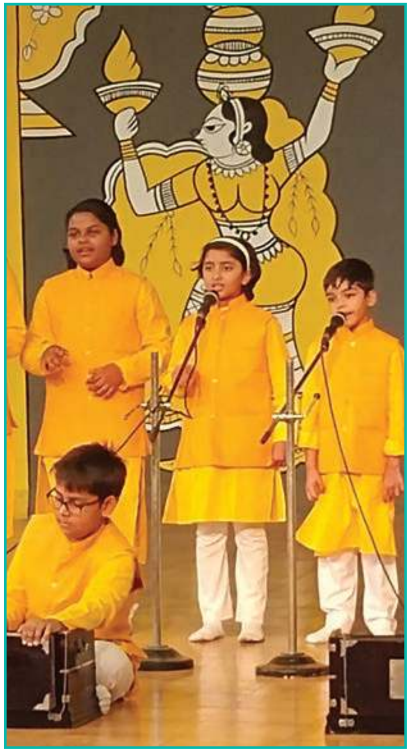

कि जब हम अपने शारीरिक आवरण के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं, तब हमें अनुभव होता है कि हम सबको चलाने वाली जीवनशक्ति, आत्मा एक ही है।

भारतीय संगीत की शैलियाँ

भारतीय संगीत कई शैलियों का सम्मिश्रण है। इसमें शास्त्रीय संगीत—हिंदुस्तानी और कर्नाटक के साथ-साथ, लोक, उपशास्त्रीय, भक्ति, देशभक्ति और फिल्म संगीत भी सम्मिलित है। अलग-अलग शैलियों का संगीत सीखना केवल आनंददायक ही नहीं होता, अपितु स्थानीय संस्कृति और परंपरा की समझ को भी विकसित करता है। संगीत की कुछ शैलियों को चुनिए, उन सभी को सीखिए और अपने मित्रों-परिजनों के समक्ष प्रस्तुत कीजिए।

अध्याय 10

गीत लेखन

उद्देश्य— गीत लेखन के माध्यम से अपनी सोच और विचारों को श्रोताओं तक पहुँचाने के लिए एक अनूठी पहल करना। गीत लेखन के बारे में जानने के लिए एक वीडियो को देखें।

वर्णनात्मक लेखन

आप जब किसी वस्तु, स्थान या अनुभव को विस्तारपूर्वक लिखते हैं, जिससे कि पढ़ने वाले को उसकी एक संपूर्ण छवि दिखने लगे, तब उसे वर्णनात्मक लेखन कहते हैं।

1. अपने गीत के संदर्भ का विस्तारपूर्वक वर्णन करें ताकि श्रोता उन्हें सुनकर उसकी छवि बना पाएँ।
2. अपनी सभी इन्द्रियों का प्रयोग करें और— इसकी दृश्यता, सुगंध, अनुभव आदि के विषय में बताएँ।
3. अपनी कल्पना के माध्यम से किसी अपरिचित विषय का विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. अपने लेखन को दूसरों के साथ साझा करें, ताकि उनकी राय जानकर आप और अच्छा कर पाएँ। यह इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है।
5. दूसरों के लेखन को भी पढ़ें, ताकि विविध दृष्टिकोण ज्ञात हो सकें।

वर्णनात्मक लेखन को सीखने के लिए यह वीडियो देखें।

गीत लेखन सुझाव

लेखन को प्रतिस्पर्धा के रूप में नहीं, सहयोग के रूप में लें और दूसरों को प्रतिक्रिया देते समय रचनात्मक और सकारात्मक रहने का प्रयास करें।

गतिविधि 1— स्वयं से प्रयास करें!

किसी पेड़ के बारे में वर्णनात्मक लेखन करें।

गतिविधि 2— किसी परिचित या प्रचलित स्वर लहरी (धुन) को आधार बनाकर एक गीत लिखें

किसी प्रचलित धुन पर किस तरह बोल लिखे जा सकते हैं, यह जानने के लिए इस वीडियो को देखें।

उदाहरण के लिए 'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' को चुनते हैं। हमने इस गीत को कई बार सुना है। इसकी धुन 'बा बा ब्लैक शीप' और प्रचलित अंग्रेजी वर्णमाला पर आधारित गीत 'A B C D' से भी मिलती है। इसी धुन पर आधारित अपना एक गीत लिखें।

'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' के बोल के कुछ उदाहरणों के लिए यह वीडियो देखें।

कर्नाटक संगीत में 'नोट्टूस्वरम' या 'नोट्टूस्वर' उन रचनाओं को कहा जाता है, जिन्हें विख्यात 'मुत्थुस्वामी दीक्षितर' ने लिखा है। 'नोट्टूस्वरम' शब्द अंग्रेजी के 'नोट' और तमिल के 'स्वरम' शब्दों के मिश्रण से बना है। इन रचनाओं के संगीत अधिकांशतया पाश्चात्य संगीत पर आधारित हैं। दीक्षितर ने कुल 39 नोट्टूस्वरम की रचना की है।

विख्यात भारतीय गीत (नोट्टूस्वरम) 'श्यामले मीनाक्षी' गीत को सुनें और इस गीत की धुन पर अपना गीत लिखें।

गतिविधि 3— अप्रचलित या अनोखे स्वर-माधुर्य के आधार पर एक गीत लिखें

स्वर-माधुर्य गीत की ऑडियो धुन को सुनें और अपने शब्दों में उनके बोल लिखें। आप नोट्टूस्वरम को भी सुनकर उसके संगीत पर अपने बोल लिख सकते हैं।

पद्य लिखना सीखें

किसी भी कविता या गीत में पद्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसका एक कारण यह है कि पद्य हमारे कानों को यह समझाते हैं कि पंक्ति कौन-से स्थान पर बदल रही है। पद्य गीत में व्यक्त विचार को भी श्रोताओं तक पहुँचाने में सहायता करते हैं। इसका कारण यह है कि जब शब्दों को पद्य के रूप में बोला जाता है, तब लोग अधिक ध्यान से सुनते हैं।

उदाहरण के लिए

कैट, बैट, मैट
लव, अबव
हैंड, अंडरस्टैंड

पद्यांश की रचना सीखने के लिए वीडियो को देखें।

गतिविधि 4— सौर मंडल (सोलर सिस्टम) के गीत को सुनें

सौर मडंल गीत

वर्स 1

आई एम मरक्युरी, द स्मोलेस्ट,
आई एम क्लोसेस्ट टू द सन
आई टेक ऐटी-एट डेज
टू कंपलीट माई इयरली रन।

आई एम वीनस, द हॉटेस्ट,
आई एम वेरी, वेरी ब्राइट
आई लुक लाइक ए स्टार
व्हेन यू लुक एट मी इन द नाइट।

आई एम अर्थ, योर होम,
द ओनली प्लेस विद लाइफ,
आई हैव वॉटर, एयर, एंड फूड
टू कीप यू ऑल अलाइव।

कोरस

(द प्लैनेट्स, द प्लैनेट्स,
रिवोल्व अराउंड द सन
डोंट फोरगेट द सोलर सिस्टम
वन्स दिस सांग इस डन) × 2

भारतीय संगीत में कई शैलियाँ हैं जिनमें शास्त्रीय संगीत, जैसे— हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के साथ-साथ लोक, अर्ध शास्त्रीय, भक्ति, देशभक्ति और फिल्म संगीत जैसी शैलियाँ सम्मिलित हैं। विभिन्न शैलियों के गीत सीखना न केवल आनंददायी है, बल्कि आपको स्थानीय संस्कृति और परंपरा को समझने में भी सहायता प्रदान करता है। कुछ शैलियाँ चुनें, प्रत्येक शैली से एक गीत सीखें और इसे एक कक्षा की तरह अपने मित्रों और परिवार के समक्ष प्रस्तुत कीजिए।

वर्स 2
आई एम मार्स, आई एम रेड,
आई एम स्मॉलर दैन द अर्थ
माई मून्स आर लाइक पोटेटोस,
दे आर डेमिओस एंड फोबोस।

आई एम जुपिटर, द लार्जेस्ट,
आई हैव ए रेड्डीश स्पॉट;
सिक्सटी-थ्री मून्स सराउंड मी,
विच रियली इस ए लॉट।

आई एम सैटर्न, आई एम स्पर्कली,
माई रिंग्स आर मेड ऑफ आइस;
आई कैन फ्लोट ओन वॉटर
एज आई एम वेरी, वेरी लाइट।

कोरस
(द प्लैनेट्स, द प्लैनेट्स,
रिवोल्व अराउंड द सन
डोंट फोरगेट द सोलर सिस्टम
वन्स दिस सांग इस डन) × 2

वर्स 3
यूरेनस, द कोल्डेस्ट,
आई एम टिप्ड ओन्टू माइ साइड;
थर्टीन रिंग्स सराउंड मी
बट दे आर वेरी हार्ड टू फाइंड।

आई एम नेप्चुन, आई एम ब्लू,
आई एम फार्देस्ट फ्रॉम द सन;
वेन यू स्टैंड ओन मी इट फील्स
लाइक ए क्लाउड एंड दैट इज फन।

ब्रिज
वी नो आवर रॉकी प्लैनेट्स,
दे आर द फर्स्ट फोर;
आफ्टर दैट द गैस जाइंट एंड
देन मेनी मोर।
प्लूटो इस ए ड्वार्फ,
ही वांट्स टू ज्वाइन देम ऑल;
बट द प्रॉब्लम इज देट ही इज
सो सो सो सो स्माल।

कोरस
(द प्लैनेट्स, द प्लैनेट्स,
रिवोल्व अराउंड द सन
डोंट फोरगेट द सोलर सिस्टम
वन्स दिस सांग इस डन) × 2

याद रखें

किसी पद्य योजना के अंतर्गत, गीत या कविता की पंक्तियाँ या अंत के शब्द एक-दूसरे से मिलते हैं। उदाहारण के लिए, मान लीजिए किसी कविता की पहली और तीसरी पंक्ति एक दूसरे से मिलती हों, जिसे हमने 'क' का नाम दिया। इसी तरह दूसरी और चौथी पंक्ति भी एक-दूसरे से मिल रही हों और हमने उनका नाम 'ख' रखा। परिणामस्वरूप, इस पंक्ति का पद्य होगा क ख क ख।

गतिविधि 5— अगले संभावित पद्य को पद्यांश योजना से भरें।

द स्काई वस डार्क इन द मॉर्निंग,
द सन डीडेंट शाइन एज़ ब्राइट।
द डे इस सेट फॉर मोर्निंग
आई मिस द वार्मथ ऑफ द लाइट।।

सृष्टि

कई लोगों को प्रचलित गीतों को सीखना और गाना अच्छा लगता है। वहीं दूसरी ओर कुछ लोगों को स्वरचित गीत गाना पसंद है। अगर आप लेखन के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त करना चाहते हैं, तो स्वयं लिखे और सुर दिए गए गीत को अवश्य गाएँ।

अध्याय 11

संगीत और समाज

उद्देश्य— गीतों में बार-बार प्रयोग किए जाने वाले बोल को सुनें और उनके विकल्प के विषय में सोचें।

समाज में संगीत के माध्यम से संदेश भी पहुँचाया जा सकता है। स्वतंत्रता संग्राम के समय हमारे नेताओं ने अंग्रेजों के विरूद्ध लोगों को एकजुट करने के लिए संगीत का प्रयोग किया था।

गतिविधि 1— संगीत जो एक सूत्र में बाँधे

हमारा राष्ट्रगान – भारत की विविधता का प्रतिबिंब!

नोबेल पुरस्कार विजेता, राष्ट्रकवि रवींद्रनाथ टेगौर प्रथम भारतीय थे, जिनको 1913 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। उनका लिखा हुआ राष्ट्रगान संस्कृत-बांग्ला भाषा पर आधारित है। इसमें भारत के विराट और विविध भौगोलिक भूदृश्य को दर्शाया गया है।

- गाने के बोल और उनके अर्थ को समझें। यह समझने का प्रयास कीजिए कि किस प्रकार इस गीत में भारत की विविधता का वर्णन हुआ है।
- इस गीत के बोल से आपको किस प्रकार की भव्यता का आनंद मिलता है, इसकी व्याख्या कीजिए।
- इस गीत के शब्द और संगीत, आपके मन में कैसी भावना उत्पन्न करते हैं। इस पर प्रकाश डालें।

गतिविधि 2— हमारी विरासत की जड़ें

वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथों के बारे में आपने सुना होगा। उनसे हमें नम्रता, सत्यवादिता और दयालु होने के गुण मिलते हैं, भले ही हम एक-दूसरे से भिन्न हों।

कठोपनिषद की प्रेरणादायी पंक्तियों को देखकर गाने का प्रयास कीजिए। इसकी प्रेरणादायक पंक्तियाँ स्वामी विवेकानंद को भी प्रिय थीं।

> **विस्तारित गतिविधि**
>
> यह गीत किस पारंपरिक धारणा या रूढ़िवादिता को बढ़ावा देता है?
>
> *गुड़िया रानी*
> *बिटिया रानी*
> *परियों की नगरी से एक दिन*
> *राजकुंवर जी आएँगे*
> *महलों में ले जाएँगे*
>
> *यशोमती मैय्या से बोले नंदलाला*
> *राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला*
>
> क्या आप अपनी मातृभाषा में ऐसा कोई गीत जानते हैं, जिसमें किसी पारंपरिक धारणा या रूढ़िवादिता को दर्शाया गया हो? उन गीतों के मूल बोलों को लिखें और उनको आप कैसे समझाना चाहेंगे, इसे सभी के साथ साझा कीजिए।

उष्ठित जाग्रत
उष्ठित जाग्रत
प्राप्य वरान्निबोधत,
क्षुरस्य धारा निशिता
दुरत्यया दुर्गम पथस्तत्कवयो
वदन्ति

सुनकर उत्तर दें

अब इस गीत को सुनें। इससे आपके मन में क्या भाव आ रहे हैं?

गतिविधि 3— परिवर्तन का स्रोत बनें

इस गीत को सुनिए और स्मरण कीजिए। यह सोचिए कि आप किस प्रकार एक वीर योद्धा (सुपर हीरो) बन सकते हैं और सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

उठो! जागो! और
रुको मत जब तक कि
लक्ष्य तक ना पहुँचो।
— स्वामी विवेकानंद

गतिविधि 4— रूढ़िवादिता (Stereotypes)

संगीत के माध्यम से रूढ़िवादिता को भी नए रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। रूढ़िवादिता से तात्पर्य पहले से निकाले गए निष्कर्ष के माध्यम से, विचार और संस्कृति, जाति, रंग, जेंडर और अन्य कारकों के आधार पर सामान्यीकरण करने से है, लेकिन आप इसे परिष्कृत कर सकते हैं।

इस गीत को सुनें—

बबुआ की मुर्गी
बबुआ की मुर्गी बोले ना
बबुआ का मुर्गा कुकडू कू
बबुआ की मुर्गी रूठ गई
न मानू मैं ना मानू
बबुआ का मुर्गा क्यों अकड़े?
उसके सिर पर कलगी है
जिसके सिर पर ताज नहीं
वो बेचारी मुर्गी है
बबुआ की मुर्गी क्यों खुश है,
क्यों खुश है? क्योंकि अंडा देती है,
देती है!

संगीत लोगों को एक साथ जोड़ता है तथा परंपरा को भी आगे बढ़ाता है। ऐसा कोई गीत ढूँढ़ो, जो आपके मन का उत्थान करता हो। उसे सीखें और अपने मित्रों को सिखाएँ। एक ऐसी पुस्तक को लिखने के बारे में सोचें, जिसमें मन को उत्थान प्रदान करने वाले गीत हों।

नृत्य

"यतो हस्त ततो दृष्टिः;
यतो दृष्टिः ततो मनः
यतो मनः ततो भावो;
यतो भावः ततो रसः॥"

अर्थ

जिस दिशा में हाथ है वहीं दृष्टि होगी, जहाँ दृष्टि है वहीं मन होगा और जहाँ मन होगा वहीं भाव उत्पन्न होंगे और जहाँ भाव उत्पन्न होंगे वहीं रस की सृष्टि होगी।

शिक्षकों के लिए

बच्चों को गतिविधि के लिए ऐसे स्थान या हॉल उपलब्ध कराए जाएँ, जहाँ वे सहजता से कार्य कर सकें, जहाँ समुचित प्रकाश और हवा के आने जाने की व्यवस्था हो। आवश्यकतानुसार समूह में कार्य करने की प्रक्रिया को भी साझा कीजिए।

शिक्षणशास्त्र सिद्धांत

1. शरीर के विभिन्न अंगों की पर्याप्त जानकारी देते हुए बच्चों को अवगत कराएँ कि ये अंग किस प्रकार से जोड़ों के माध्यम से संचलित होते हैं।
2. सांस लेने की प्रक्रिया में शरीर का संचालन अनुलोम-विलोम से संपादित होता है, जिसका महत्व नृत्य और अंग संचालन के लिए अति आवश्यक है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए नृत्य एक उत्तम माध्यम है।
3. शास्त्रीय तथा अन्य पारंपरिक भारतीय नृत्य की विविध शैलियों का परिचय।
4. भावनाओं को व्यक्त करना — बच्चों को उनकी भावनाओं का अनुभव कराने और उन्हें व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। यह भावनात्मक प्रवाह के लिए एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है।
5. हाथों के माध्यम से भावना को व्यक्त करना — सांकेतिक भाषा के महत्व और समावेशी कक्षा में व्यावहारिक आचरण पर चर्चा करना।
6. जेंडर संवेदना और जेंडर बाधाओं से निदान।
7. सहयोग का महत्व — किसी विषय या विचार को समृद्ध रूप से संचालित करने के लिए सहयोग और योगदान का महत्व।
8. भारत की सांस्कृतिक विविधता।
9. भारत के प्रसिद्ध नर्तकों से परिचय।
10. नृत्य और उनकी मुद्राओं की समग्रता से सराहना।

अध्याय 12

मेरा शारीरिक संचलन

0679CH12

नृत्य कक्षा में जाने से पहले आप सभी क्या कर रहे थे?

- अपने मित्रों से बातें कर रहे थे?
- अपनी अँगुलियों का प्रयोग करके संख्या का खेल, खेल रहे थे?
- पुस्तक पढ़ रहे थे?
- स्वयं गाना गा रहे थे?

...इसके अतिरिक्त आप क्या कर रहे थे?

आप जो भी कार्य कीजिए, उसमें कुछ छोटे या बड़े अंगों का संचालन सम्मिलित हो सकता है।

इस पूरे संसार में, सभी प्राणी अपने अनोखे ढंग से संचलन करते हैं। प्रत्येक की अपनी स्थिति, ढंग, हाव-भाव और संचलन होती है।

संचलन से अर्थ है स्थिति, स्थान या दशा में परिवर्तन। उदाहरण के लिए व्यायाम करना, पालतू पशु के साथ खेलना, साइकिल चलाना या कोई अन्य क्रिया करना, जिसमे शारीरिक संचलन सम्मिलित हो।

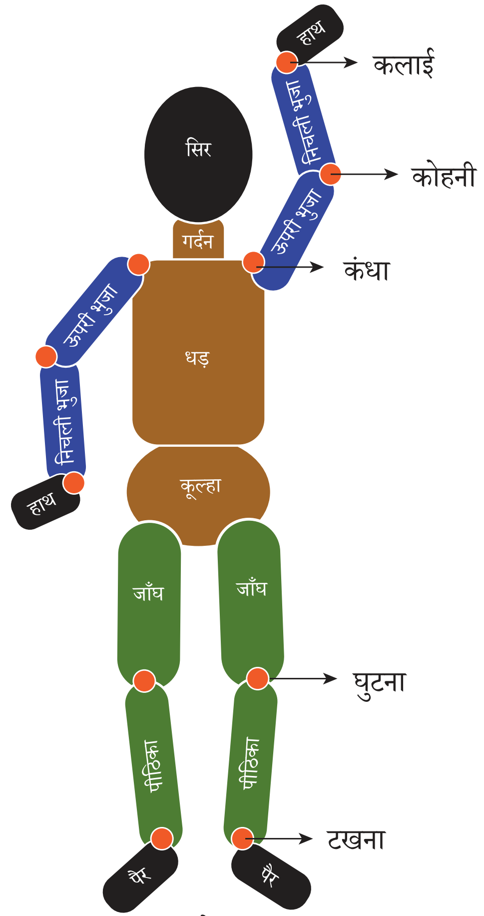

शरीर के अंग

गतिविधि 1— नियमित शारीरिक संचलन

स्वयं अवलोकन कीजिए कि आप घर और विद्यालय में किस प्रकार विभिन्न शारीरिक संचालन करते हैं। एक दिन में आप अनेक संचलनों में सम्मिलित होते हैं।

अब समय आ गया है कि आप अपनी दिनचर्या की सभी गतिविधियों को स्मरण करें और अपने शरीर के संचालन से कक्षा में शारीरिक गतिविधियाँ कीजिए।

नृत्य शैलियाँ — उत्पत्ति का स्थान

विभिन्न आकृतियाँ और मुद्राएँ

हमारे देश में शास्त्रीय नृत्य के 8 प्रकार हैं, जिनमें शरीर की सभी भंगों का उपयोग किया जाता है, इन्हें भंगिमा कहा जाता है। वे हैं—

नृत्य शैली — कथकली
उद्गम स्थान— केरल
आसन— समभंग

नृत्य शैली— ओडिसी
उद्गम स्थान— उड़ीसा
आसन— त्रिभंग

नृत्य शैली — भरतनाट्यम
उद्गम स्थान— तमिलनाडु
आसन— द्विभंग

नृत्य शैली — कथक
उद्गम स्थान— उत्तर प्रदेश
आसन— समभंग

नृत्य शैलियाँ — उत्पत्ति का स्थान
विभिन्न आकृतियाँ और मुद्राएँ

नृत्य शैली — मोहिनीयाट्टम

उद्गम स्थान— केरल

आसन— अतिभंग

नृत्य शैली — सत्रिया

उद्गम स्थान— असम

आसन— अभंग

नृत्य शैली — कूचिपुड़ी

उद्गम स्थान— आंध्रप्रदेश और तेलंगाना

आसन— नर्तक समभंग में और नर्तकी त्रिभंग में है।

नृत्य शैली — मणिपुरी

उद्गम स्थान— मणिपुर

आसन— अभंग

भारतीय नृत्य अवधारणा में शरीर की मध्य ऊर्ध्व रेखा महत्वपूर्ण है।

विभिन्न आकार एवं मुद्राएँ

हाँ ...... ये वो मुद्राएँ हैं, जो आपने नृत्य में देखी हैं।

गतिविधि 2— रीढ़ की हड्डी के झुकाव और पदगतियों को सम्मिलित करना

अब आपको अपनी रुचि का कोई आसन जैसे— त्रिभंग, द्विभंग आदि प्रदर्शित करना है।

आप अपने आसन का आरंभ समभंग से कर सकते हैं। अपनी साँस पर ध्यान लगाते हुए अपनी रीढ़ की हड्डी को झुकाना आरंभ कीजिए, शरीर को फैलाते और खींचते समय साँस अंदर लें तथा शरीर को सिकोड़ते और झुकाते हुए साँस को छोड़ें।

अपनी दिनचर्या में से कुछ ऐसे कार्य सोचें, जिनमें रीढ़ की हड्डी का झुकाव और पदगतियाँ उपस्थित हों।

अब प्रत्येक कार्य में आपके द्वारा किए गए रीढ़ की विभिन्न हड्डी के कार्यान्वित होने का अवलोकन कीजिए।

इन कार्यों के साथ आपको 1-2, 1-2, या 1-2-3-4 जैसे सरल प्राथमिक गिनती करते हुए लयबद्ध चरण करने होंगे।

विभिन्न नियमित कार्यों को याद करें और अपने अनुभव या दूसरों के अवलोकन के आधार पर चरणों को संयोजन के साथ एक शृंखला में रखिए।

उदाहरण

विद्यालय के लिए तैयार होना

अपना बस्ता तैयार करना

पढ़ने के लिए बैठना

उदाहरण के लिए सीधे खड़े हो जाएँ और टैप - टो – टैप – टैप, जैसे— चार की गिनती से पदसंचालन करें। दाएँ पैर दाई ओर ले जाएँ और लयबद्ध ढंग से टैप – ऐड़ी प्रदर्शित कीजिए।

(आप इस गतिविधि के लिए वाद्य संगीत बजा सकते हैं या सरगम का प्रयोग कर सकते हैं।)

अपने मित्रों के साथ इस विषय में बात कीजिए कि रीढ़ की विभिन्न हड्डियों के विभिन्न मोड़, धड़कनों और संचलनों (त क धी मी अथवा ता धिन धिन्न) को आपस में कैसे संचालित किया जा सकता है।

चार अथवा पाँच विद्यार्थियों का समूह बनाएँ।

निर्णय लें कि आप किस प्रकार से शरीर के अंगों का संचालन शृंखला में संयोजित कर सकते हैं। पहले सीखे हुए मूल पद संचालन का उपयोग करके संचलन शृंखला को अभिनय के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

उदाहरण

1. भारी-भारी थैले उठाएँ हुए हैं?
2. ऊँचे-ऊँचे पेड़ लहरा रहे हैं?
3. हवा तेज है या धीमी है?
4. बारिश में खेल रहे हो?

एक लहराता पेड़

एक बहती हुई नदी

यह सभी गतिविधियाँ आपको आगामी नृत्यों और संचलनों का संज्ञान कराएँगी।

अभिनय

नृत्य के दूसरे तत्व की बात कीजिए, तो वह होगा अभिव्यक्ति या भाव।

अभिव्यक्ति या भाव अपनी-अपनी भावनाएँ हैं या आपके द्वारा देखी गई दूसरों की भावनाएँ हैं, जो नवरस जैसे— शृंगार – रति, हास्य – हास, करुण – शोक, रौद्र–क्रोध, वीर–उत्साह, भयानक–भय, वीभत्स–घृणा, अद्भुत – आश्चर्य, शांत – निर्वेद के रूप में जाने जाते हैं।

गतिविधि 3— चेहरे पर विभिन्न भावों का अभ्यास

अपने मित्रों, परिजनों, शिक्षकों और माता-पिता को देखें ...प्रत्येक के मुख पर कोई न कोई भाव अवश्य होगा, क्या ऐसा नहीं है?

इन भावों को लिखें और भावों के नाम से परिचित होने का प्रयास कीजिए। उदाहरण के लिए चिंता, भय, आश्चर्य, प्रसन्नता, अपराधबोध, क्रोध, हास्य, दुख, घृणा आदि ...

जैसे ही आप नृत्य कक्ष में जाते हैं, एक-दूसरे के मुख पर पहले देखे गए भावों पर एक साथ विचार करें और उसे लिख लें।

आप कितने भावों को पहचान सकते हैं? क्या आप भावों को नवरस से जोड़ सकते हैं?

बहुत अच्छा! क्या आपने पहले भी ऐसी गतिविधि की है?

आपको अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कैसा अनुभव हुआ?

गतिविधि 4— हस्त मुद्रा का अभ्यास

भरतमुनि द्वारा लिखित नाटयशास्त्र के अनुसार, हस्त अर्थात हाथ की मुद्राओं का उपयोग नृत्य को सुशोभित करने के लिए किया जाता है, लेकिन इसमें भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अभिनय के लिए नृत्य के विशेष संकेतों के साथ-साथ कहानियों का भी वर्णन किया जाता है। कुछ हस्त मुद्राएँ शास्त्र सम्मत ग्रंथ अभिनय दर्पण से ली गई हैं।

असंयुक्त हस्त मुद्राएँ—एकल हाथ के संकेत

पताका

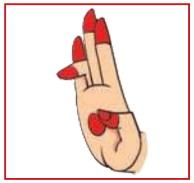
त्रिपताका

अर्द्धपताका

कर्तरीमुख

मयूर

अर्द्धचंद्र

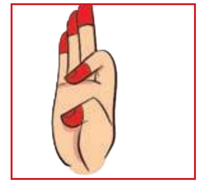
अराल

शुकतुंड

मुष्टि

शिखर

कपित्थ

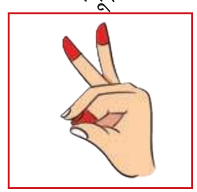
कटकामुख

सूचि

चंद्रकला

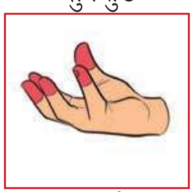
पद्मकोश

सर्पशीर्ष

मृगशीर्ष

सिंहामुख

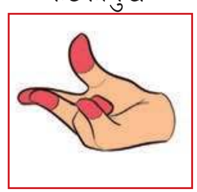
कांगूल

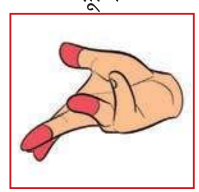
अलपद्म

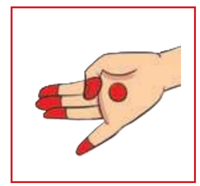
चतुर

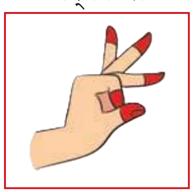
भ्रमर

हंसास्य

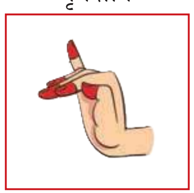
हंसपक्ष

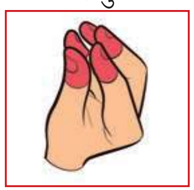
संदंश

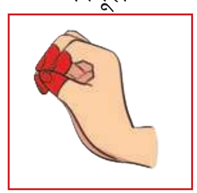
मुकुल

ताम्रचूड

त्रिशूल

संयुक्त हस्त मुद्राएँ—संयुक्त हाथ के संकेत

अंजलि

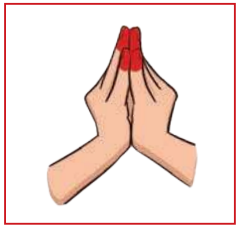
कपोत

कर्कट

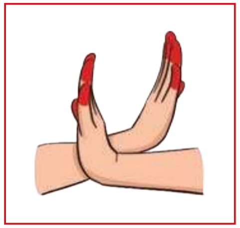
स्वस्तिक

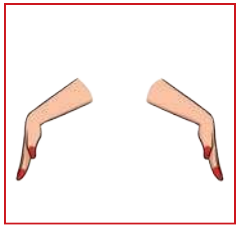
डोला

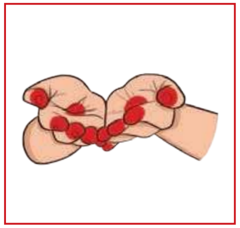
पुष्पपुट

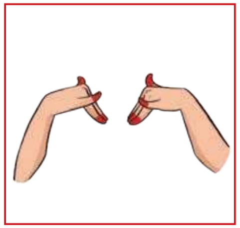
उत्संग

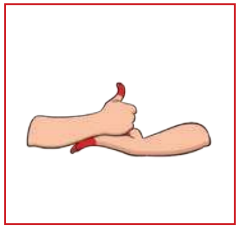
शिवलिंग

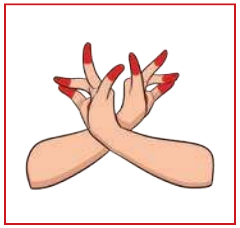
कटकावर्धन

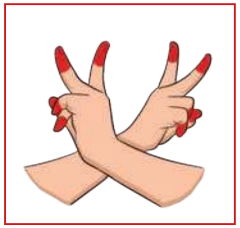
कर्तरीस्वस्तिक

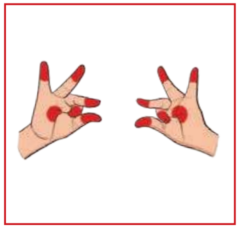
शकट

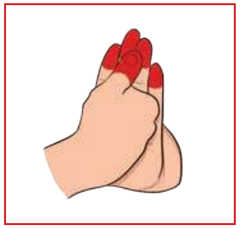
शंख

चक्र

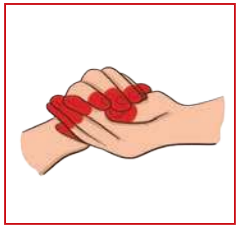
संपुट

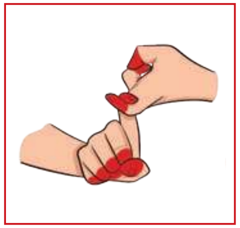
पाश

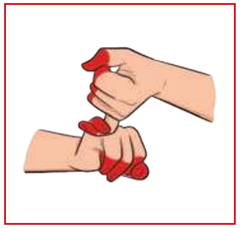
कीलक

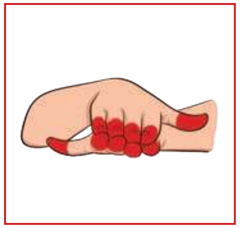
मत्स्य

कूर्म

वराह

गरुण

नागबंध

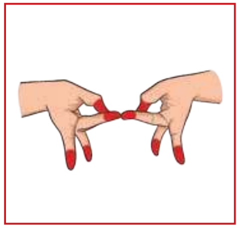
खट्वा

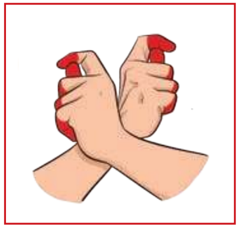
भेरूंड

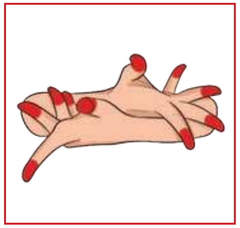
अवहित्त

दी गई हस्त मुद्राओं को देखकर हाथ के संकेतों का उपयोग करते हुए बिना ध्वनि के बातचीत करने का प्रयास कीजिए

1. आइए, दी गई सूची में से हाथ के संकेतों से वाक्यों को बनाएँ।
2. अपने आपको समूहों में विभक्त कर लें और एक-दूसरे से वार्तालाप कीजिए।

उदाहरण

मैं घर जा रहा हूँ।

आप कहाँ जा रहे हैं?

आप पानी पीते हैं।

नृत्य में कुछ हस्त मुद्राओं का उपयोग

1. ***पताका***— वरदान, रुकना, दोनों हाथों से ताली बजाना, इंकार करना, काटना।

2. ***त्रिपताका***— राजा अथवा सुर (देव) के पात्र को दर्शाना, तिलक लगाना, दोनों हाथों को पेड़ की तरह फैलाना।

3. ***शुकतुंड***— बिजली गरजना, अस्त्र या शस्त्र बनाना, तीर चलाना।

4. ***शिखर***— प्रश्न करना, पानी पीना, छड़ी पकड़ना, शिवलिंग।

5. ***कटकामुख***— फूल तोड़ना, भोजन करना, माला पकड़ना, बोलना, दोनों हाथों से फूलों की माला पिरोना, भजन के लिए मंजीरा बजाना।

6. ***सूचि***— दूसरों की ओर संकेत करना, एक अंक दर्शाना, मना करना, तुरही (हार्न), बुलाना आदि तथा दोनों हाथों से सिंग बनाना, ठोड़ी पर रखकर याद करना।

7. ***सर्पशीर्ष***— सांप, (भगवान को जल अर्पित करना) कुछ पकड़ना।

8. ***हंस पक्ष***— निमंत्रण देना, दूसरों के कानों में रहस्य बताना।

9. ***अलपदम***— प्रश्न पूछना, खिलता हुआ फूल दिखाना, दोनों हाथों से गमला या पूर्ण सूर्य आदि बनाना।

10. ***त्रिशूल***— अस्त्र या शस्त्र , त्रिशूल, तीन अंक तथा माथे पर क्षैतिज तिलक लगाना।

क्या यह सांकेतिक भाषा का उपयोग करने जैसा नहीं है।

अब अपनी कल्पना के अनुसार कुछ हस्त मुद्राओं का प्रयोग करके देखिए।

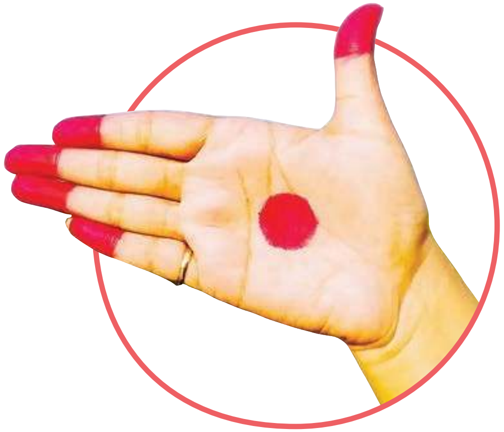

गतिविधि 5— किसी गाने पर नृत्य कीजिए

अंग संचालन, सीखे गए पदचाप और हाथ के संकेतों का उपयोग करके चुने गए गीत या संगीत की पंक्तियों के लिए छोटे नृत्य वाक्यांश बनाएँ।

क्या आपको गतिविधि में आनंद प्राप्त हुआ?

शिक्षकों के लिए

इस गतिविधि को संचालित करने के लिए 4 – 5 विद्यार्थियों का एक समूह बनाएँ और संगीत की कक्षा में सीखा हुआ गाना या कोई अन्य गाना बजाएँ।

गतिविधि 6— एक गीत पर नृत्य का अनुक्रम

- किसी भी समूह गीत की दो पंक्तियाँ चुनें, जो आपने संगीत की कक्षा में सीखी हैं।
- समूह में चर्चा कीजिए और चुने गए गीत के चरणों और क्रियाओं को व्यवस्थित कीजिए।
- गीत के चरणों को बनाए गए समूहों में बाँट दें।
- नृत्य के वाक्यांशों को एक साथ जोड़कर संपूर्ण नृत्य बनाना कोरिओग्राफी या नृत्य संरचना कहलाता है।

एक समूह को दूसरे समूह के साथ मिलाकर पूरा गाना प्रस्तुत करने वाली अपनी नृत्य कोरिओग्राफी की प्रस्तुति दें।

अध्याय 13

नृत्य के माध्यम से अवरोधकों को तोड़ना

नृत्य में पात्र कभी-कभी जेंडर भेदभाव से परे दूसरे जेंडर की नृत्य प्रस्तुति देता हैं। नृत्य के कई पारंपरिक प्रदर्शनों में प्राय: पुरुष महिला पात्र का भी अभिनय करते हैं।

भक्ति आंदोलन

छठवीं या सातवीं शताब्दी के आस-पास आरंभ हुए, भक्ति आंदोलन ने हमारे वर्तमान शास्त्रीय नृत्यों की जड़ों का विस्तार किया और क्षेत्रीय शास्त्रीय नृत्य रूपों के विकास को प्रभावित किया।

भक्ति काल में, नर्तक मंदिर के अंदर पूजन अनुष्ठानों का एक भाग बन गए। दक्षिणी भारत की देवदासियाँ और तेवादिचि और ओडिशा के महारी सीधे मंदिर के अंदर देवता की सेवा करते थे। असम के सत्र और दक्षिण के भागवतारों में नृत्य के माध्यम से 64 क्रियाएँ की जाती थी। उत्तर के कथाकारों ने जनसामान्य में नैतिक मूल्यों को बढ़ाने के लिए भगवान शिव की स्तुति में गीत गाए और तांडव का अभिनय प्रस्तुत किया।

भक्ति की अवधारणा साधारण लोगों के समझने के लिए बहुत सरल थी।

ओडिशा के गोटीपुआ नृत्य का एक दृश्य

ओडिशा का गोटीपुआ नृत्य सीखते विद्यार्थी

0679CH13

अर्धनारीश्वर

उदाहारण

गोटीपुआ नृत्य

गोटीपुआ नृत्य की एक वीडियो (यूट्यूब) देखें जिसकी उत्पत्ति ओडिशा में हुई थी।

भगवान जगन्नाथ और गोटीपुआ की स्तुति में मंदिर के अंदर माहारि द्वारा यह प्रदर्शन किया जाता था, युवा लड़के जनता के लिए यह नृत्य करते थे।

यहाँ युवक, लड़के-लड़कियों के स्वरूप में तैयार होते हैं और कलाबाजी के साथ नृत्य करते हैं।

अर्धनारीश्वर नृत्य

चित्र में आप भगवान शिव और देवी पार्वती को एक ही चेहरे पर नृत्य शृंगार में देख सकते हैं।

गतिविधि 1— अद्वितीय लोक नृत्य के वीडियो देखें

विभिन्न लोक नृत्यों के वीडियो देखिए जो अद्वितीय मुद्राओं, हाव-भाव, चलने के प्रकारों, चरणों, वेशभूषा और संगीत के साथ किए जाते हैं।

महाराष्ट्र का लावणी नृत्य मुख्यतया स्त्रियों द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला नृत्य है।

पश्चिम बंगाल का पुरुलिया छऊ मूल रूप से केवल पुरुषों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

कर्नाटक से यक्षगान

अब आप सभी बच्चे लावणी और छऊ दोनों नृत्यों के चरणों की भंगिमाएँ कर सकते हैं।

आधुनिक युग में जेंडर संबंधी बाधाओं या प्रतिबंधों को हटाकर मोहिनीअट्टम (पहले केवल महिलाओं द्वारा किया जाता था), कथकली, यक्षगान (पहले केवल पुरुषों द्वारा किया जाता था) जैसे नृत्यों में बड़ा परिवर्तन आया है।

यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण हैं कि विभिन्न नृत्य की शैलियों में, मुद्राएँ और चालों में कट्टर लैगिंक धारणाएँ बदल गई हैं। पारंपरिक जेंडर मानदंडों को तोड़ते हुए, नर्तक मुख्य रूप से अपनी अनूठी अभिव्यक्ति बनाने के लिए विभिन्न शैलियों के तत्वों का मिश्रण करते हैं।

अब आप उस स्तर पर आ गए हैं, जहाँ आपको अपने क्षेत्र के नृत्यों की विधाएँ सीखनी होंगी।

गतिविधि 2— लोक नृत्य के लिए निर्देश

अब ऊपर उपयोग किए गए चरणों की आवश्यक क्रियाओं को शीघ्रता या सौम्यता से करने का अभ्यास कीजिए।

लावणी और भांगड़ा दोनों नृत्यों का अभ्यास लड़के और लड़कियाँ कर सकते हैं।

इन नृत्य शैलियों में प्रयुक्त भुजाओं और हाथों की मुद्राओं के बारे में अन्वेषण करें और नवनिर्माण भी प्रयोग में लाएँ।

गतिविधि 3— परियोजना कार्य

जोगती मंजम्मा एक अग्रणी नृत्य कलाकार हैं, जिन्होंने जेंडर की बाधाओं को तोड़ते हुए कर्नाटक में जोगती नृत्य के विकास में योगदान दिया है। उनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए और उनके चित्रों के साथ अपना परियोजना कार्य प्रस्तुत कीजिए।

परियोजना का ढाँचा — बचपन की प्रेरक कहानी (यदि कोई हो), सीखने के अनुभव, उपलब्धियाँ और जुड़ाव।

आयत आकार

त्रिकोणीय आकार

नृत्य, आकृतियाँ और ताल

गणित और नृत्य एक-दूसरे के पूरक हैं। हम नृत्य के माध्यम से ज्यामितीय आकृतियों का प्रदर्शन कर सकते हैं। नृत्य करते समय, इसमें ज्यामितीय आकार, अंकगणितीय लय और संचालन सम्मिलित होता है। हम नृत्य में संरचनाओं के लिए विभिन्न ज्यामितीय पैटर्न का उपयोग कर सकते हैं। लय और ताल केवल आधार है। अगली गतिविधि में इनका प्रयोग करें।

विभिन्न आकार प्रदर्शित करते नर्तक

गतिविधि 4— नृत्य और ज्यामितीय आकृतियाँ

नृत्य में कितनी अलग-अलग ज्यामितीय आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं?

अपने हाथों, भुजाओं और पैरों का उपयोग करके त्रिभुज, वृत्त, वर्ग बनाएँ।

कक्षा में चर्चा कीजिए और कुछ ज्यामितीय संचालनों का अभ्यास कीजिए।

गतिविधि 5— लयबद्ध ज्यामिति

आइए, गतिविधि चार के सभी तत्वों (भुजा, हाथ, पैर) को मिलाएँ और लय के तत्व जोड़ते हुए विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों को बनाएँ।

लयबद्ध इकाइयों के विभिन्न क्रम परिवर्तन और संयोजन ताल कहलाता है।

अपने आप को समूहों में विभाजित कीजिए और अपने समूह कार्य में विभिन्न ज्यामिति पैटर्न या संरचनाओं के लिए विभिन्न अंकगणितीय लयबद्ध संयोजनों का प्रयास कीजिए।

उदाहरण

2 मात्रा + 2 मात्रा = 4 मात्रा 2 थाप + 4 थाप

2 मात्रा + 3 मात्रा = 5 मात्रा

2 मात्रा + 4 मात्रा = 6 मात्रा

3 मात्रा + 3 मात्रा = 6 मात्रा

3 मात्रा + 4 मात्रा = 7 मात्रा

ऐसे संचलनों को पहचानें और कक्षा में चर्चा कीजिए कि ये ऊपर दिए गए लय क्रम से कैसे संबंधित हैं।

अध्याय 14

संचलन में सामंजस्य

भारत में पारंपरिक नृत्यों की एक समृद्ध परंपरा है। इसमें प्रत्येक प्रदेश की विविध सांस्कृतिक धरोहर की जड़ें अत्यंत गहरी हैं। ये नृत्य केवल संचलन की अभिव्यक्ति नहीं हैं। ये नृत्य कहानियाँ, भावनाओं और आध्यात्मिकता को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम हैं।

एक पारंपरिक नृत्य, शास्त्रीय नृत्य या लोक नृत्य हो सकता है। हमारी संस्कृति में विभिन्न प्रकार के नृत्य अलग-अलग सुगंध फैलाते हैं और ये सभी अनूठे हैं।

हमारे पास असंख्य वाद्ययंत्र, संपदाएँ, वेशभूषाएँ, भाषाएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ हैं, जो लोगों के अनेक समूहों द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं। ऐसे पारंपरिक नृत्य हमारे राष्ट्र, सामाजिक और नैतिक अखंडता को ऊपर उठाते हैं।

अब, नृत्य की समृद्ध संस्कृति को सुरक्षित और संरक्षित करना आपका दायित्व है।

0679CH14

गतिविधि 1— हमारे पारंपरिक नृत्य

अपने क्षेत्र का कोई भी पारंपरिक नृत्य और उससे संबंधित गीत चुनें।

अपने क्षेत्र में प्रयुक्त मुख्य वाद्ययंत्रों के साथ एक लय में नृत्य कीजिए।

बिहू

गुजरात का सिदी धमाल नृत्य

उदाहरण 1— असम के *बिहू* नृत्य में *ढोल* नामक एक वाद्ययंत्र और भैंस के सींग से बना एक अनोखा सुषिर वाद्ययंत्र '*पेपा*' का उपयोग किया जाता है।

उदाहरण 2— गुजरात के *सिदी धमाल* नृत्य में अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

क्या आप प्रदर्शन के लिए तैयार हैं? बस कुछ क्षण की प्रतीक्षा और करें। क्या आपने इस बात पर चर्चा की है कि आपके नृत्य में कौन-सी सामग्री (यदि कोई हो जैसे बर्तन, छड़ी, अँगूठियाँ आदि ....) का उपयोग किया जाना चाहिए?

क्या आपके पास उस विशेष नृत्य की वेशभूषा के बारे में कोई विचार है, जिसकी आप प्रस्तुति करने जा रहे हैं?

भारत के सभी नृत्य हमारी सांस्कृतिक विरासत से जुड़े हुए हैं। नृत्य में केवल गति, ताल और संगीत सम्मिलित नहीं है, अपितु इसमें वेशभूषा, सहायक सामग्री, सौंदर्य प्रसाधन और मंच सज्जा भी सम्मिलित होती है।

गतिविधि 2— नृत्य हेतु आभूषण और सामग्री बनाना

नृत्य के लिए आवश्यक वेशभूषा के विषय में अपने संबंधित समूह से चर्चा कीजिए। इसे ग□ा, रंगीन कागज, सजावटी रिबन आदि का उपयोग करके स्वयं बनाने का प्रयास कीजिए।

उदाहरण— नृत्य आभूषण, जैसे— गले का हार, सिर पर मुकुट या पगड़ी, हनुमान का मुख-मुखौटा, रानी का मुकुट आदि।

कान की बाली

हार

मांगटीका

घुंघरू

गतिविधि 3— यहाँ अपनी रुचि के आभूषण या सहायक सामग्री का चित्र बनाएँ या इसके मॉडल बनाएँ।

इन्हें कागज, कार्डबोर्ड, कपड़े आदि का उपयोग करके बनाने का प्रयास कीजिए।

जाल के साथ नृत्य

एक कार्यक्रम में प्रस्तुति देते संगीतकार

गतिविधि 4— प्रदर्शन स्थल का ज्ञान

कक्षा में निम्नलिखित विषय पर चर्चा कीजिए—

- प्रदर्शन में बिना बाधा डाले मंच पर आवश्यक साज-सामान रखना।
- ऐसे परिधान की संरचना (design) करना, जो नृत्य करने (हाथ और पैर उठाने, कूदने, उछलने, आदि) में सुविधाजनक हो।
- मंच के दोनों ओर से प्रवेश और निकास। (रंगमंच अनुभाग में मंच संरचना देखें)

विभिन्न नृत्य शैलियों में भिन्न-भिन्न सामग्रियों से मंच को अलंकृत किया जाता है।

अद्भुत! बहुत सुंदर। आशा करते हैं, अब आप सभी को नृत्य के प्रत्येक तत्व से संबंधित सभी जानकारियाँ प्राप्त हो गई हैं।

अभी तक आपने छोटे-छोटे समूहों में काम किया है। आगे चलकर, कक्षा के सभी सदस्य एक साथ मिलकर एक बड़े समूह के रूप में काम करेंगे। अब आप कुछ नया अन्वेषित करने जा रहे हैं।

नृत्य नाट्य

चूँकि हम न केवल नृत्य शब्द से अपितु नाटक से भी परिचित हैं।

यदि हम नृत्य और नाटक दोनों का संयोजन करें तो यह किस प्रकार होगा?

नृत्य-नाटक या नाट्य रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक रूप है, जहाँ प्रतिभागी नृत्य को एक माध्यम के रूप में उपयोग करके एक कहानी कहते हैं या एक संदेश देते हैं, जिसमें गाने और संगीत के साथ सामान्यतया पैरों, शरीर और हस्त मुद्राओं का उपयोग होता है।

नृत्य-नाटक में समन्वय, अभिव्यक्ति और कलाकारों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है।

समन्वय

अभिव्यक्ति

कलाकारों के बीच सहयोग

नृत्य-नाटक संचलन और अभिनय कला के माध्यम से एक कथा प्रस्तुत करता है। नृत्य-नाटक विभिन्न विषयों, संस्कृतियों या ऐतिहासिक घटनाओं से प्रेरित हो सकते हैं, जो कलात्मक अन्वेषण के लिए एक समृद्ध और विधिक मंच प्रदान करते हैं।

गतिविधि 5— प्रकृति की कहानी

साझा करना

प्रकृति, पर्यावरण या स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित कोई ऐसी कहानी ढूँढ़े, जो समाज को नैतिकता का संदेश देती हो और उस पर परिचर्चा कीजिए।

उदाहरण

संबंधित कहानियों के शीर्षक —

- प्लास्टिक के उपयोग से बचना।
- जल स्रोतों की रक्षा।
- मोबाइल का अत्यधिक प्रयोग।
- रसायन मुक्त अनाज उगाना।
- शिक्षा में समानता।

टिप्पणी— अंग्रेजी या किसी भी भाषा की पाठ्यपुस्तक से एक कहानी चुनिए।

उपयुक्त कहानी को चुनिए और कक्षा में साझा कीजिए, जिसे आप अपने आस-पास की स्थिति और क्षेत्र से जोड़ सकें।

किसी लिखित प्रामाणिक कथा को पटकथा कहते हैं जिसमें नृत्य-नाटक, नाट्य के प्रदर्शन या प्रस्तुति के लिए संवाद, गीत वाक्यांश, क्रियाएँ और निर्देश सम्मिलित होते हैं। नृत्य में संवाद अधिकतर हस्त मुद्राओं और मुखाभिन्य के माध्यम से होता है, यद्यपि शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

सोचिए ...

चर्चा कीजिए ...

लिखिए ...

किसी चयनित कहानी या कविता के लिए पटकथा लिखने का प्रयास कीजिए और नाट्य बनाने के लिए एक-दूसरे के साथ विचार साझा कीजिए।

पटकथा लिखते समय हस्त मुद्राओं, पात्रों, वेशभूषा, रंगमंच की सामग्री और मंच की आवश्यकताओं और संवाद पर ध्यान दें।

इस गतिविधि में, आप कहानी के सभी पात्रों को जीवन दे रहे हैं।

नाट्य प्रदर्शन के लिए हाथ और शरीर की मुद्राओं का अभ्यास कीजिए।

मुख, चरण, चाल, हस्तमुद्रा के तत्वों का कविता में संकलन करें और इनका अभ्यास करें।

बोल या सोल्लु केट्टू (जैसे— त-क-धी-मी) और सरगम (संगीत कक्षा में सीखा गया) का उपयोग करके लयबद्ध प्रारूप के साथ नृत्य की पहचान कीजिए, जो नाट्य में सम्मिलित हैं।

मुख के भावों का अभ्यास कीजिए, जो नाट्य का प्रमुख तत्व है। नाट्य के व्यवस्थित परिणाम के लिए आप सभी को मिलकर काम करना होगा।

गतिविधि 6— नृत्य संरचना और नाट्य प्रदर्शन

कक्षा में सभी एकत्र होकर एक समूह में मनन चिंतन करके नाट्य की संरचना कीजिए, जिसमें संवाद, लयबद्ध संगीत, नृत्य की लय और संचलन सम्मिलित हों।

नृत्य कोरिओग्राफी के इस चरण में हमें सामग्री, वेशभूषा, आभूषण, मंच सजावट आदि पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मंच पर प्रदर्शन करते समय सामग्रियों के साथ अभ्यास कीजिए, आप यह सहजता के साथ कर सकते हैं।

एक बार संरचना पूरी हो जाने के बाद, अब अभ्यास करने का समय आ गया है।

अभ्यास! अभ्यास! अभ्यास!

अभ्यास सफलता की कुंजी है।

नाट्य के अभ्यास के बाद अब बारी है मंच पर पूर्व अभ्यास करने की।

बहुत अच्छा!

अपना नाटक अपनी कक्षा या दूसरे स्थानों पर जाकर दर्शकों के सामने प्रस्तुत कीजिए।

अध्याय 15

भारतीय नृत्य

आइए, नृत्य की अपनी यात्रा आरंभ करें। अपने घुंघरूओं को पहनिए और नृत्य के संसार में गोता लगाने के लिए तैयार हो जाइए।

मातृभूमि के लिए नृत्य— स्थानीय लय और संचलन की खोज

यह अध्याय उन श्रेष्ठ नृत्य शैलियों की खोज से संबंधित है, जो हमारे देश को रंगीन और जीवन से भरपूर बनाते हैं।

आइए, उन नृत्य शैलियों पर निकट से दृष्टि डालें जो आपके अपने स्थानीय परिपेक्ष में हैं।

इस गतिविधि में, आप उन नृत्यों की खोज करेंगे जो आपके क्षेत्र से संबंधित हैं।

समृद्ध पारंपरिक लोक नृत्य से लेकर स्थानीय उत्सवों की ऊर्जावान धुनों तक, ये विभिन्न नृत्य आपके समाज में गहराई से निहित हैं।

अपने क्षेत्र की भावना प्रदर्शन करने वाली नृत्य शैली की खोज करने के लिए तैयार हो जाइए और हमारे सांस्कृतिक नृत्य मंच को लय और आनंद के साथ जीवंत बनाइए।

0679CH15

गतिविधि 1— अपने क्षेत्र के नृत्यों की जानकारी प्राप्त करना

अपनी कक्षा, शिक्षक तथा माता-पिता से चर्चा करके, अपने क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रीय नृत्यों के नाम सूचीबद्ध कीजिए।

कोई भी क्षेत्रीय नृत्य चुनें और स्थानीय कलाकारों के साथ उस क्षेत्र की यात्रा करें या वीडियो देखें।

यदि संभव हो, तो उनके साथ एक छोटी कार्यशाला आयोजित करें और स्थानीय नृत्य शैली से संबंधित विचार और नृत्य करने की आवश्यकता एवं कारण को स्पष्ट कीजिए।

उनकी मुद्राओं, हाव-भाव और सुंदर संचलनों को सीखने का प्रयास करें।

इस तरह आप अपने क्षेत्रीय नृत्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

भ्रमरी (चक्कर), घुमावों, उत्कृष्ट संचलनों, सुंदर पद संचलन, रंग-बिरंगी वेशभूषा और भावों का अवलोकन कीजिए। इससे अत्यधिक मात्रा में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है।

गुजरात का गरबा नृत्य

तबला

ढोल

डांडिया स्टिक

उदाहरण

क्षेत्र भ्रमण के समय नृत्य शैली को नोट करने का ढंग।

गुजरात से गरबा नृत्य—

क. परिचय

यह नृत्य शैली नवरात्रि के त्योहार के अवसर पर की जाती है। जहाँ देवी दुर्गा की पूजा की जाती है। यह नृत्य सामुदायिक भावना और एकजुटता के प्रदर्शन के साथ-साथ संस्कृति और परंपरा का भी उत्सव है।

ख. नृत्य की विशेषताएँ

- जीवंत और ऊर्जावान संचलन।
- लयबद्ध ताली।
- नर्तकों द्वारा संकेंद्रित घेरे में वृत्ताकार प्रारूप की संरचना।

ग. संगतकार

- पारंपरिक लोक संगीत।
- ढोल (ड्रम), तबला और डांडिया स्टिक जैसे वाद्ययंत्र।

घ. वेशभूषा

- महिलाओं के लिए चनिया चोली (घाघरा)।
- पुरुषों के लिए केड्यू-काफनी (धोती और कुर्ता का एक प्रकार)।

अन्य नृत्य विधाओं का पता लगाना

आप अब हमारे देश के अन्य क्षेत्रों की स्थानीय नृत्य शैलियों का पता लगाने जा रहे हैं।

इस नृत्य यात्रा में आप किसी एक स्थानीय नृत्य शैली को सीखने के अलावा अन्य नृत्य शैलियों का भी पता लगाएँगे।

गतिविधि 2— अन्य नृत्य शैलियों का पता लगाना

अन्य क्षेत्रीय नृत्य शैलियों के वीडियो देखें।

आइए, मिलकर बैठें और दूसरे क्षेत्र के नृत्य के संबंध में सार्थक चर्चा कीजिए।

राज्य	नृत्य का नाम	सहायक संगीत उपकरण	वेशभूषा	नृत्य का अवसर
केरल	तिरूवथिरकली (महिलाओं द्वारा प्रस्तुति)।	लोक गीत के साथ ताली तथा लयबद्ध नृत्य।	केरल के पारंपरिक आभूषणों, केरल की साधारण वेशभूषा मुंडु और वेष्टि के साथ।	तिरूवाथिरा शिवरात्रि, ओणम और कुछ अन्य त्योहारों के अवसर पर।
ओडिशा	सैला नृत्य (आदिवासी समुदायों के द्वारा प्रस्तुति)।	ढोल (एक बैरल के आकार का ड्रम), नगाड़ा (केटल ड्रम) और बाँसुरी।	रंगबिरंगी साड़ियाँ और धोती, जनजातीय आभूषण, मोती, शंख और धातु के आभूषण।	चैत्र पर्व के अवसर पर जब कृषि की शुरूआत होती है।
कश्मीर	रौफ नृत्य (महिलाओं द्वारा समूह में प्रस्तुति)।	तुम्बकनारी (एक छोटा केतली ड्रम), रबाब (एक तंत्री वाद्य) और हारमोनियम।	कश्मीरी वस्त्र फिरन (एक ढीला व रंगीन कढ़ाई वाला वस्त्र अथवा कुर्ता) आभूषण, झुमके, हार, चूड़ियाँ।	ईद, बैसाखी और नवरोज साथ ही विवाह, फसल कटाई के उत्सव एवं अन्य सामाजिक सभाओं के अवसर पर।

अपने देश के राज्यों से संबंधित नृत्य शैलियों को सूचीबद्ध कीजिए। यहाँ कुछ राज्यों की नृत्य शैलियों को उदाहरण के रूप में दिखाया गया है।

हाँ......अब आप सारणीबद्ध प्रक्रिया से विभिन्न नृत्य शैलियों की जानकारी को सारणी के रूप में व्यवस्थित कर सकते हैं। अद्भुत! बहुत अच्छा! आइए, अब अपनी नृत्य यात्रा के अगले स्तर पर चलें।

छत्तीसगढ़ी नृत्य

आइए नृत्य की अपनी यात्रा आरंभ करें।

माओ पाटा

माओ पाटा मुरिया जन जाति का एक ऐसा नृत्य है, जिसमे एक कथा और एक नाट्य अंश भी सम्मिलित रहता है। इसकी प्रस्तुति मुख्यत: मुरिया युवा गृह घोटुल के प्रांगण में होती थी, परन्तु वर्तमान में यह उत्सवों में अधिकतर प्रस्तुत किए जाते हैं। इसे युवक एवं युवतियों द्वारा सम्मिलित रूप से किया जाता है। नृत्य में वन्य प्राणी गौर पशु के पारंपरिक शिकार को प्रदर्शित किया जाता है। वाद्ययंत्र के रूप में ढोल का वादन किया जाता है। नर्तकों द्वारा भृंगराज पक्षी के पंख से बनी कलगी जिसे जेलिंग कहा जाता है, से सिर को सजाया जाता है। नृत्य में एक नर्तक गौर पशु का स्वांग किए रहता है, जिसमें शिकार का अभिनय किया जाता है।

सरहुल

सरहुल उत्तरी छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली उराँव जनजाति का एक लोकप्रिय नृत्य है, जो चैत्र मास की पूर्णिमा से आरंभ होकर वैशाख मास की पूर्णिमा तक आयोजित होता है। उराँव जन जाति में 'सरना' नाम से संबोधित पवित्र वनों की परंपरा हैं। उराँव मान्यता के अनुसार साल वनों के इन्ही सरना में महादेव का निवास होता है, जिसे और अन्य अपने देवी-देवताओं तथा पितरो को प्रसन्न करने परिवार देश समाज तथा गाँव की खुशहाली व समृद्धि के लिए मनाये जाने वाले सरहुल पर्व के अवसर पर सरहुल नृत्य किया जाता है। जिसमें स्त्री आज पुरुष दोनों ही सम्मिलित होते हैं। वाद्य के रूप में मांदर व झांझ का प्रयोग किया जाता है, गाए जाने वाले गीत धार्मिक आख्यान से संबंधित होते हैं।

पंथी

पंथी नृत्य एक अनुष्ठानिक नृत्य है, जिसे सतनाम पंथी के अनुयायियों द्वारा गुरु घासीदास के उपदेशों के बखान हेतु छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित रचनाओं का गायन करते हुए किया जाता है। यह एक समूह नृत्य है, जिसमें नर्तक वृत्त की रचना करते हैं तथा धीरे-धीरे पिरामिड बनाते जाते हैं। यह द्रुत गति का नृत्य है। इसमें मांदर व झांझ लोक वाद्य का उपयोग किया जाता है।

सत से धरती खड़े, सत से खड़े अगास,
सत से सृष्टि भए कह गए गुरू घासीदास।

करमा

करमा नृत्य एक अनुष्ठानिक नृत्य है, जिसे करम पूजा के अवसर पर करम देव को समर्पित करते हुए पारंपरिक रूप से किया जाता है, किन्तु समकालीन दौर में इसकी प्रस्तुति मनोरंजन और उत्सव आयोजन के अवसर पर भी किया जाता है, इसे स्त्री-पुरुष दोनों के द्वारा किया जाता है। जिसमें संगत के रूप में मांदर लोक वाद्य झाँझ का प्रयोग किया जाता है, इस नृत्य के अवसर पर गाए जाने वाले गीत को करमा कहा जाता है। जो मुख्यतः दोहा के रुप में चार खंडों की रचना होती हैं।

कनकी-कोदई, नदी में धोई ले,
तोर आगे लेवइहा, गली में रोई ले।

क्षेत्रीय नृत्य रूपों की तुलना

अपनी नृत्य यात्रा में, आप कई स्थानीय नृत्य शैलियों से परिचित हुए होंगे। आप अब एक स्तर ऊपर उठते हुए अपने क्षेत्र की स्थानीय नृत्य शैलियों की तुलना दूसरे क्षेत्र की नृत्य शैलियों से कीजिए।

राज्य	नृत्य का नाम	सहायक संगीत उपकरण	वेशभूषा	नृत्य का अवसर

गतिविधि 3— क्षेत्रीय नृत्य शैलियों में विविधता एवं तुलनात्मक अध्ययन

सोचिए, यदि आप राजस्थान से हैं और कालबेलिया स्थानीय नृत्य शैली को चुनते हैं, तो इसकी तुलना अन्य स्थानीय नृत्य अर्थात मेघालय के नोंगक्रेम नृत्य से कीजिए।

नीचे दिए गए उदाहरण को संदर्भ में लेकर एक तुलनात्मक चार्ट बनाएँ —

नृत्य का नाम	कालबेलिया	नोंगक्रेम
राज्य	राजस्थान	मेघालय
परिधान	महिलाएँ शरीर के ऊपरी भाग पर अंगरखी नाम की चोली, सिर के लिए ओढ़नी और निचले शरीर के हिस्सों पर छोटे शीशे की कढ़ाई वाला लहंगा पहनती हैं।	पारंपरिक वेशभूषा में लड़कियाँ या पुरुष सामान्यतया चमकीले रंगों से सजे होते हैं और तलवार तथा सफेद याक के बालों की बनी छड़ी पकड़ते हैं।
नृत्य का अवसर	अनुष्ठान से जुड़ी, प्राय: पौराणिक कहानियों को दर्शाते हुए होली के अवसर पर विशेष नृत्य किए जाते हैं।	शरद ऋतु के समय भरपूर फसल और लोगों की समृद्धि के लिए शक्तिस्वरूपा देवी को प्रसन्न करने के लिए इस उत्सव को मनाया जाता है।
प्रस्तुतकर्ता या प्रदर्शनकर्ता	महिलाओं द्वारा नृत्य और पुरुषों द्वारा गीत प्रस्तुतीकरण।	पुरुष और महिला दोनों के द्वारा प्रस्तुतीकरण।
सहायक संगीत उपकरण	पारंपरिक लोक संगीत और लकड़ी के वाद्ययंत्र- पुंगी, ताल वाद्ययंत्र- डफली, बीन, खंजीरा के साथ प्रस्तुति।	पारंपरिक संगीत के साथ ढोल और सुषिर वाद्य तंगमुरी का प्रयोग।

नृत्य का नाम		
राज्य		
वेशभूषा		
नृत्य का अवसर		
प्रस्तुतकर्ता या प्रदर्शनकर्ता		
सहायक संगीत उपकरण		

गतिविधि 4— क्षेत्रीय नृत्य शैली पर परियोजना

क्या आपको गतिविधि 1 स्मरण है। जहाँ स्थानीय नृत्य शैली का अध्ययन करने के लिए क्षेत्रीय यात्रा की गई है।

क्षेत्रीय नृत्य शैली पर रचनात्मक चित्र बनाकर या उससे संबंधित चित्र चिपकाकर एक परियोजना तैयार कीजिए।

नृत्य से संबंधित एक लोकगीत लिखें, किसी विशेष नृत्य शैली के लिए बनाए गए आभूषणों के छोटे मॉडल चिपकाएँ।

अंत में अपनी परियोजना को सभी शिक्षकों और मित्रों के सामने प्रस्तुत कीजिए।

गतिविधि 5— प्रसिद्ध नृत्य हस्तियों पर टिप्पणी

आधुनिक भारत के सुप्रसिद्ध नृतकों में से अपने किसी एक प्रिय नृत्यकार पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। रचनात्मक लेख लिखें और चित्र चिपकाएँ। इस परियोजना के साथ-साथ उसे लोकप्रिय नृत्य की मुद्राओं और भावों का अनुकरण करने का प्रयास कीजिए।

रंगमंच

“एतद्रसेषु भावेषु
सर्वकर्मक्रियासु च।
सर्वोपदेशजननं
नाट्यमेतद्भविष्यति।।”।।१९४।।।

अर्थ

यह नाट्य रसों, भावों तथा इन सभी (रसभाव आदि) के कार्य और क्रियाओं के द्वारा उपदेश प्रदान करने वाला होगा ॥ ११४॥

स्रोत— नाट्यशास्त्र, अध्याय-1

मध्य स्तर के लिए रंगमंच

रचनात्मक, सकारात्मक और आनंदपूर्ण

रंगमंच एक ऐसी विधा है, जो कहानी, अभिव्यक्ति और कल्पना से संबंधित है, यहाँ कोई भी उत्तर पूर्ण रूप से गलत अथवा सही नहीं ठहराया जाता। रंगमंच शिक्षण के लिए विद्यार्थियों की कल्पना, अपने विचारों के साथ प्रयोग की स्वतंत्रता और अनूठे तरीके से सोचने को प्रोत्साहित करना एक आदर्श वातावरण है। रंगमंचीय शिक्षण की आदर्श कक्षा वही है, जहाँ एक विद्यार्थी, परिहास बनाए जाने या हँसी का पात्र बन जाने के भय से मुक्त होकर, खुलकर अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त कर सके। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में इस मानसिकता से विकास के साथ, एक-दूसरे के प्रति सम्मान एवं सहयोग की भावना के माध्यम से ही समग्र शिक्षा के विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

रंगमंच को वास्तविक दुनिया के कौशल से जोड़ें

जिस समय बच्चे अपने आस-पास की दुनिया के बारे में समझने लगते हैं, परिस्थितियों का सामना करते लगते हैं और ऐसे भावों का अनुभव करने लगते हैं, जो पहले की तुलना में और भी अधिक पेचीदा हों और जो कि दैनिक जीवन से बिल्कुल अलग हों, ऐसे में रंगमंच और भी प्रासंगिक हो जाता है। रंगमच एक योग्य निर्देशक या अभिनेता तैयार करने से कहीं अधिक भावनात्मक कौशल यथा जेंडर अनुभूति एवं असफलता को संभालने में कारगर बनाता है। रंगमच इसके साथ-साथ सार्वजनिक जीवन में बातचीत, समस्या निदान एवं समूह सहभाषिता जैसी जीवन कौशल क्षमताओं का विकास कर अपनी प्रायोगिकता से परिचय कराता है।

प्रस्तुतियों में भाग लें

विद्यार्थियों को लाइव प्रस्तुतियों को देखने के लिए प्रोत्साहित करना या अतिथि कलाकारों को बुलाकर पेशेवर रंगमंच से परिचित कराना और विद्यार्थियों की स्वयं के कला कौशल को प्रोत्साहित करना रंगमंच-शिक्षा में अत्यधिक लाभकारी होगा।

व्यक्तिगत अधिगम शैली की समझ

अपनी कक्षा में विविध अधिगम शैलियों को पहचानें और उन्हें सम्मिलित कीजिए। कुछ विद्यार्थी व्यावहारिक गतिविधियों में आगे बढ़ सकते हैं, जबकि अन्य लिखित या दृश्य शिक्षण (दृश्य से सीखना) पसंद कर सकते हैं। बच्चों को स्वयं की रुचि के अनुसार संप्रेषण माध्यम (बोलना या लिखना) चुनने का अवसर दीजिए, अधिक विकल्प प्रदान कीजिए और उनकी सैद्धांतिक समझ को विकसित कीजिए। यह प्रक्रिया बच्चों में तनाव को दूर करती है, इससे उनकी स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता समृद्ध होती है।

सहभागिता पर बल

रंगमंच एक सामूहिक कला है। सामूहिक गतिविधियाँ, कौशल संवाद, सामूहिक प्रदर्शन, संयुक्त परियोजनाएँ, रंगमंच का आधार है। यह न केवल सामूहिक कार्य-कौशल को विकसित करता है, साथ ही व्यक्तिगत चरित्र और बुद्धिमत्ता को भी बढ़ाता है।

घेरा बनाकर चर्चा करना

शिक्षक को प्रत्येक कक्षा में नियमित रूप से एक गतिविधि करानी चाहिए। प्रत्येक कक्षा का अंतिम दस मिनट का समय घेरा बनाकर चर्चा करने के लिए निश्चित हो। सभी विद्यार्थी अपने शिक्षक के साथ बैठेंगे और की गई गतिविधि पर अपनी प्रतिक्रिया एवं विचार अनौपचारिक रूप से साझा करेंगे। बच्चे तब आसानी से खुलते हैं जब कोई मूल्यांकन परीक्षा या नंबर से जुड़ा नहीं होता है। यह ऐसी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने का एक उपयुक्त तरीका हो सकता है, जो किसी औपचारिक परीक्षा से प्राप्त नहीं हो सकती है। लेकिन यह केवल बच्चों के लिए ही अनौपचारिक होगा, शिक्षक इससे अपने लिए टिप्पणी भी लेंगे, जो अगले पाठ को तैयार करने के लिए उपयोग मे लाई जा सकेगी।

प्रस्तुत अवधारणाएँ

- जीवन में भाव, नाटक में भाव
- भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण
- मुखौटा बनाना

अध्याय 16

भावों का अनावरण!

0679CH16

दृश्य एक — भावों को समझना

रंगमंच की कक्षा शुरू करने से पहले आप कैसा महसूस कर रहे हैं यह दर्शाने के लिए एक शब्द लिखें।

____

अब हम लोग भावों को खोजेंगे, अनुभव करेंगे और प्रयोग में लाएँगे। क्या आपको यह एक खेल की तरह लगता है? आइए, अब हॉट सीट पर बैठते हैं।

निर्देश— दी गई परिस्थिति – सिर नीचे, आँखे बंद, ध्यान से सुनें।

आपको एक कहानी सुनाई जाएगी, जिसे ध्यान से सुनना है और उसके दृश्यों की कल्पना करते हुए, उसमें डूब जाना है। कहानी अचानक रुकेगी और आपको एक शब्द सुनाई देगा — 'देखो'। आपको जल्दी से ऊपर देखना है और उस स्थिति पर अपनी प्रतिक्रिया देनी है जहाँ कहानी रुकी थी।

सामान्य स्तर— एक सरल स्थिति जो नाटकीय प्रतिक्रिया पर समाप्त होती है।

उदाहरण 1

शुरुआती स्थिति में

आप अपनी माँ को यह बताने के लिए उत्सुक हैं कि स्कूल यात्रा की घोषणा हो गई है। आप सड़क पर चल रहे हैं। बारिश होने लगती है। आप दौड़ना शुरू कर देते हैं।

चूँकि आप ठीक से नहीं देख पाते, आपके कदम लड़खड़ा जाते हैं और आप नाले में गिर जाते हैं। अब 'देखो'!

उच्च स्तर— कहानी पहली प्रतिक्रिया के बाद भी चलती रहती है। सब अंतिम प्रतिक्रिया में रुक जाते है, और सुनना चलता रहता है, और 'देखो' पर प्रतिक्रिया देते हैं। कहानी में कई मोड़ लाए जा सकते हैं और कहानी में प्रत्येक मोड़ पर प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करने के लिए कहा जा सकता है।

उदाहरण 2

शुरुआती स्थिति में

आप राजकुमारी हैं और घोड़े पर सवार होकर जंगल जा रही हैं। आपको पीछे से एक स्वर सुनाई देता है, जो परिचित सा लगता है। आप पीछे मुड़ती हैं और देखती हैं कि आपको वह चेहरा जाना-पहचाना सा लगता है।

आप याद करने का प्रयास करती हैं और आपको याद आ जाता है। यह वही व्यक्ति है, जो हमारे पूर्वजों के फोटो में है, जो 500 साल पुरानी है। अब 'देखो'!

मूर्तिवत ठहरिए

आप फिर उस व्यक्ति से बचने का प्रयास करती हैं, लेकिन वह आपका पीछा कर रहा है। आप तेजी से आगे बढ़ रही हैं, वह व्यक्ति चट्टान से टकराता है और उसकी जेब से कुछ गिर जाता है। यह वही खिलौना है, जिससे कल आप खेल रहे थे। अब सोचो...!

मूर्तिवत ठहरिए

आपका कल वाला खिलौना उस तक कैसे पहुँचा? ओह!! याद आया... आपने उसे महल के बाहर झाड़ियों में कहीं खो दिया था। आपका चचेरा भाई, जो इससे खेल रहा था, उसी ने इसे छुपाया होगा। आप हिम्मत करते हुए कोट खींचकर उसका असली चेहरा सामने ले आते हैं। यह तो आपका शरारती चचेरा भाई है।

विस्तारण— अब एक बच्चा स्वयं अपनी कहानी रचता है और 'शुरुआती स्थिति', 'मूर्तिवत ठहरिए' और 'सोचिए' का प्रयोग कर अपनी कहानी सुनाता है। अन्य बच्चे उस पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

आइए, घेरा बनाएँ

- आज की गतिविधि से हमने, जो अनुभव प्राप्त किया, उन सभी भावों की एक सूची बनाएँ।
- आपके अनुसार इनमें से सबसे जटिल भाव कौन-सा था? क्यों?
- ऐसी कोई अनुभूति या भाव जिसे आप नाम नहीं दे सकते, क्या आप उसका वर्णन कर सकते हैं?

क्या आप जानते हैं कि ऐसी भी कुछ परिस्थितियाँ होती हैं, जब आप एक ही समय में दो भावों को महसूस

करते हैं। उदाहरण के लिए आप अपने दोस्तों के साथ खेल रहे हैं और आप हार जाते हैं। क्योंकि उनमें से किसी एक ने खेल में आपके साथ धोखा किया था। क्या आपको पता है कि वे दोनों भाव क्या हैं?

दुख (*खेल हारने के कारण*) और गुस्सा (*दोस्त ने धोखा दिया*)।

आपके अंदर कौन-सा भाव उत्पन्न होगा, जब आप बारिश में किसी कुत्ते के बच्चे को भीगते हुए देखते हैं, लेकिन आप उसकी सहायता करने के लिए नहीं जा सकते, क्योंकि आपको जुकाम है और बाहर मूसलाधार बारिश भी हो रही है।

________________ और ________________

बहुत अच्छे... हम सभी ऐसे भावों से गुजरते हैं। कभी-कभी इन भावों की संख्या तीन भी हो सकती है, लेकिन यह तब तक ही ठीक है, जब तक आपको पता चले कि आप किन भावों से गुजर रहे हैं। अब, आप न केवल अपने भावों को पहचान सकते हैं, बल्कि उन्हें आप नाम भी दे सकते हैं। विभिन्न परिस्थितियों में अपने भीतर देखना और पहचानना बहुत महत्वपूर्ण है कि आप किस तरह के मनोभावों से गुजर रहे हैं।

हम सभी अपनी दैनिक दिनचर्या में अनेक भावों को अनुभव करते हैं। इन भावों के संदर्भ में विद्वानों ने वर्षों से चिंतन किया है। आइए, हम खेल-खेल में विभिन्न भावों के नाम सूचीबद्ध करते हैं। ठहरो, अब सोचो इस विषय पर वर्षों से काम करने वाले विद्वानों ने कितने भावों को सूचीबद्ध किया होगा? क्या लगता है! कितना होगा? 50? 100? या इससे भी अधिक? वास्तव में ये ... नौ हैं!

केवल नौ? कैसे? क्या आप अन्य के बारे में जानते हैं? वे लोग कौन थे?

वर्षों तक अध्ययन, अवलोकन और विश्लेषण करने के बाद प्राचीन काल में हमारे ऋषियों ने भावों को कुल '*नवरसों*' में वर्गीकृत किया। हमने जिन सभी भावों को समझा, अनुभव किया, क्या उन्हें '*नव रसों*' में विभाजित किया जा सकता है?

इसका विभाजन मुख्य रूप से दो मूल तत्व—*रस* और *भाव*' के आधार पर किया गया है।

भाव

मन का स्थायी भाव।
धारणा, विचार और प्रवृत्ति पर आधारित इसकी परिणति, यह आसानी से नहीं बदलता।

↓ स्थापित करने के लिए

रस

संवेगात्मक सार।
किसी परिस्थिति,अनुभूति और मनोभाव के परिणामस्वरूप होने वाला अनुभव।

क्या आपने कभी ध्यान दिया है? एक ही परिस्थिति में आपकी और आपके मित्र की अनुभूति भिन्न-भिन्न होती है, ऐसा क्यों? इसका मुख्य कारण दोनों के भावों में अंतर का होना है। क्योंकि आपके पास एक भिन्न भाव है (*अलग दृष्टिकोण या विचार*)। जिससे एक भिन्न रस (*अनुभव जो आपने महसूस किया*) की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण

1. आप अपने मित्र के साथ अपना पसंदीदा खेल देख रहे हैं। आपकी टीम जीत जाती है। आप रोमांचित हो जाते हैं, आपका मित्र खुश तो है, लेकिन उतना उत्साहित नहीं होता है। क्योंकि उसके पसंदीदा खिलाड़ी ने अच्छा स्कोर नहीं किया।
2. आप अपने मित्र के साथ खाना खा रहे हैं। कक्षा में एक शरारती बच्चा आता है और आप दोनों का मजाक उड़ाता है, हँसता है, हँसकर चला जाता है। आप चिढ़ जाते हैं, लेकिन स्वयं को नियंत्रित रखते हुए कहते हैं, 'कौन परवाह करता है', और दूसरी ओर आप देखते हैं कि आपका मित्र आहत होकर एक कोने में बैठा रो रहा है।

इन दोनों घटित स्थितियों में विचार और परिस्थिति दोनों एक समान है। कौन-सा भाव और अनुभव (*रस*) उत्पन्न होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपका मूल दृष्टिकोण या मूलविचार (*भाव*) क्या है?

भारत के महान ऋषि-मुनियों ने अपने अध्ययन में भाव और मानव मस्तिष्क के संदर्भ में अपने अनेक विचार दिए हैं। अपने अध्ययन के आधार पर उन्होंने रसों को (हमारे अनुभव) '*नव रस*' में वर्गीकृत किया है।

अब आप उस सभी भावों को 'नव रसों' में रख सकते हैं, जिसकी हमने ऊपर चर्चा की है। अब आप इसे अनुभव करने की कोशिश कीजिए।

खेल-खेल में नवरस

इन '*नवरसों*' को समझने के लिए हम इस दिलचस्प खेल को खेलते हैं। सबसे पहले किसी कमरे में *नवरसों* को एक वृत्ताकार घेरे में अलग-अलग दर्शाएँ। जब संगीत बजना शुरू हो, तो सभी विद्यार्थी उस वृत के चारों ओर घूमना शुरू कीजिए। जैसे ही संगीत बंद हो, जो विद्यार्थी जिस रस के पास खड़ा हो उसे उसी *रस* को अपने हाव-भाव और क्रियाओं के माध्यम से व्यक्त करें। जो विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाएगा, वह घेरे से बाहर हो जाएगा। संगीत फिर से बजना शुरू होगा और यह खेल इसी क्रम में लगातार चलता रहेगा। वैकल्पिक रूप से एक वृत्त के बजाय फर्श पर ही नौ वर्ग या आयत बनाए जा सकते हैं।

रस की ये अवधारणाएँ प्रदर्शन कला (नाट्य कला) पर बड़े काम का एक छोटा-सा भाग हैं। इनमें कहानी को पढ़ने के सबसे मूलभूत विचार से लेकर कला के माध्यम से *मोक्ष* प्राप्त करने की संभावनाओं तक सब कुछ है। जहाँ रूप-सज्जा, वेशभूषा, प्रकाश, संगीत, नृत्य, पूर्वाभ्यास, अनुशासन, सुरक्षा और समाज के प्रति कला की जवाबदेही सहित विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की गई है। इन प्रदर्शन कलाओं पर आधारित महान ग्रंथ को आचार्य भरतमुनि द्वारा लिखा गया है जिसे '*नाट्यशास्त्र*' ग्रंथ के नाम से जाना जाता है।

इसकी शुरुआत कैसे हुई? इसकी भी एक दिलचस्प कहानी है, जिसे *नाट्योत्पत्ति* (प्रदर्शन कला का जन्म) कहा जाता है।

1 सभी देवों के देवता ब्रह्मा जी ने देखा कि सभी देवता बहुत हतोत्साहित और आलसी हो गए हैं। वे कुछ भी न करके समय बर्बाद करते हैं।

2 फिर ब्रह्मा ने *ऋग्वेद* से पाठ, *यजुर्वेद* से अभिनय, *सामवेद* से संगीत और *अर्थवेद* से रस लिया।

3 उन्होंने एक अद्वितीय ग्रंथ *नाट्य वेद* की रचना की, उन्हें लगा कि देवता इसे पसंद करेंगे और इसका उपयोग करेंगे।

4 लेकिन देवता गण *नाट्य वेद* में कुछ भी समझ नहीं पाए और वे भ्रमित होने लगे।

5 इसलिए ब्रह्मा, एक बुद्धिमान ऋषि भरत मुनि को बुलाते हैं और उनसे नाट्य वेद को सरल करने के लिए अनुरोध करते हैं, ताकि कोई भी इसे आसानी से समझ सके।

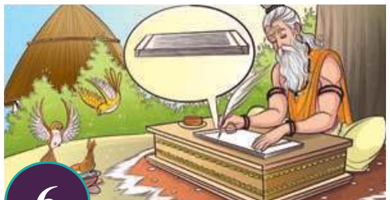

6 तब भरत मुनि *नाट्यशास्त्र* लिखते हैं। वो अपने सौ पुत्रों को *नाट्यशास्त्र* के लिए चुनते हैं और एक प्रस्तुति तैयार करते हैं।

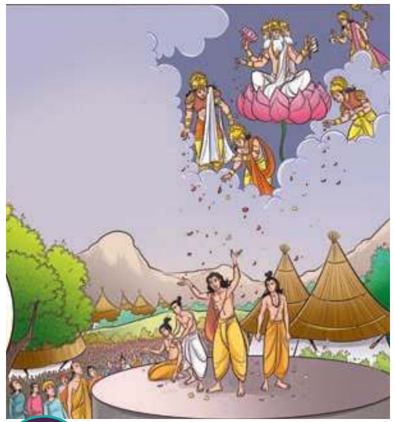

7 देवता प्रदर्शन कला को देखकर रोमांचित होते हैं। उन्होंने इसे सराहा और इसकी प्रशंसा की और इसे अपने जीवन में अपनाया।

यह कहानी हमें बताती है कि नाट्यशास्त्र प्रदर्शन कला पर लिखी गई एक पुस्तक है। जिसमें चारों वेद और बहुत से अन्य प्रसंग सम्मिलित हैं। इसे पाँचवा वेद (पंचम वेद) भी कहा जाता है। नाट्योत्पत्ति की इस कहानी से नाट्यशास्त्र ग्रंथ का आरंभ होता है, यदि आपने यह कहानी पढ़ी है तो इसका अर्थ यह है कि आपने नाट्यशास्त्र पढ़ना शुरू कर दिया है। हम आगामी कक्षा में इसके बारे में और भी प्रसंग जानेंगे।

दृश्य दो— भावों का अन्वेषण

अब तक हमने चेहरे के हाव-भाव और उसकी अभिव्यक्ति को देखा। इस बात को आप समझ गए होंगे कि आपके चेहरे का प्रत्येक अंग यह दिखाने में सहायक होता है कि आप अंदर से कैसा अनुभव कर रहे हैं। लेकिन केवल चेहरा ही क्यों? दो अन्य भी महत्वपूर्ण पहलू हैं, जो हमें अभिव्यक्ति में मदद करते हैं। वे हैं स्वर और शारीरिक भाषा या देहभाषा।

आइए, स्वर और शारीरिक भाषा के माध्यम से इन सभी '*नवरस*' का पता लगाने का प्रयास करते हैं।

अब, चलिए इसी तरह एक खेल खेलते हैं हॉट-सीट। लेकिन इस बार जब आप 'देखो' शब्द सुनें, तो आपको प्रतिक्रिया देने के लिए अपने स्वर और शारीरिक भाषा का उपयोग करना होगा। क्या यह आनंददायी है?

निर्देश— शुरुआती स्थिति है — सिर नीचे, आँखें बंद, ध्यान मग्न।

कहानी को ध्यान से सुनें, कहानी में पूरी तरह रम जाएँ। कहानी अचानक से रुक जाएगी और आपको 'देखो' शब्द सुनाई देता है, आपको तुरंत

उदाहरण

रौद्र — गुस्सा, क्रोध

चेहरे की अभिव्यक्ति	शारीरिक भाषा	संयुक्त रूप

किसी अन्य *रस* के लिए सरल चित्र बनाएँ

रस का नाम ____________________

चेहरे की अभिव्यक्ति	शारीरिक भाषा	संयुक्त रूप

ऊपर देखना है और उस स्थिति पर स्वर और क्रिया से प्रतिक्रिया देनी हैं।

आधारभूत— एक सरल परिस्थिति, जो एक नाटकीय प्रतिक्रिया में समाप्त होती है।

अग्रिम— कहानी पहली प्रतिक्रिया के बाद भी आगे बढ़ती रहती है, वे अंतिम प्रतिक्रिया में रुक जाते हैं और सुनना जारी रखते हैं और 'देखो' पर प्रतिक्रिया देते हैं। कहानी में कई मोड़ लाए जा सकते हैं। कहानी में प्रत्येक मोड़ पर क्रिया-प्रतिक्रिया हो सकती है।

विस्तार— 'शुरुआती स्थिति' 'मूर्तिवत ठहरिए' और 'सोचिए' के साथ बच्चे स्वयं अपनी कहानियाँ सुनाएँ। जबकि अन्य बच्चे प्रतिक्रिया दें।

यह देखना अदभुत है कि कैसे आप न केवल अनेक स्थितियों में भावों को पहचानने में सक्षम हैं, अपितु अपने चेहरे, शरीर और स्वर का उपयोग करने में भी सक्षम हैं। ठीक वैसे ही, जैसे हम सोच रहे थे कि सदियों पहले लोगों ने भावों को कैसे देखा होगा और उसका विश्लेषण किया होगा तभी तो भारत में *नवरस* की खोज हुई होगी। अब हम देखेंगे कि अन्य देशों में होने वाले प्रदर्शनों में भावों को किस प्रकार देखा जाता था।

आइए, घेरा बनाएँ

- उन भावों की सूची बनाएँ, जिन्हें हमने आज अनुभव किया।
- जब आपने स्वर और क्रिया को जोड़ा, तो क्या यह करना आसान था? या केवल चेहरे के भाव प्रकट करना आसान था?
- क्या ऐसा कोई अनुभव है, जिसे आप नाम नहीं दे सकते? क्या आप इसे ध्वनि, क्रिया या अभिव्यक्ति के साथ निभा सकते हैं?
- एक ही दिन में आप जो भाव बार-बार अनुभव करते हैं उसका अवलोकन कीजिए?

मानचित्र पैमाने पर नहीं
कलाकार प्रतिनिधित्व

डायनोसिस —ग्रीक मनोरंजन का देवता

'ओड' एक प्रकार का गीति काव्य है, जिसमें किसी घटना या व्यक्ति का महिमामंडन किया जाता है।

भारत के बाहर प्रदर्शनकलाओं का सर्वाधिक प्राचीन ज्ञात स्त्रोत ग्रीक रंगमंच है, जिसका काल पाँचवीं शताब्दी ई. पू. माना जाता है।

'उर्वरकता' और 'उल्लास' के ग्रीक देवता "डायनोसियस", का पोषक अंगूर माना जाता था। उस समय ग्रीक के लोग अपने देवता को खुश करने के लिए 'डायनोसियन' त्योहार मनाते थे। इस दौरान वे डायनोसिस की प्रशंसा में भजन गाते थे, जिसे '*डिथिरैम्ब*' कहा जाता था। गीत गाना और बकरे की बलि देना अनुष्ठान की एक परंपरा थी।

बकरे की बलि अनुष्ठान के दौरान गाया जाने वाले गीत जिससे 'ट्रैगोडीया' (टैग-ऑडिया) शब्द का जन्म हुआ। जिसका अर्थ है, "बकरों का गीत" जिससे 'ट्रेजिडी' शब्द का जन्म हुआ।

इस शैली का पहला नाटक इन्हीं घटनाओं और कहानियों पर आधारित था। वे सब त्रासदी के नाटक थे। वे सब गंभीर और दुखद अंत वाले नाटक होते थे। जिसमें नाटक के मुख्य पात्र को या तो दंडित किया जाता था या मृत्यु दण्ड दिया जाता था।

ऐसी और भी कहानियाँ कई वर्षों तक प्रस्तुत की जाती रहीं। चौथी शताब्दी ई. पू. से कहानियों में बदलाव आना शुरू हुआ। जहाँ कहानी के अंत सुखद और कहानी में आनंद होता था। यहीं से 'कॉमेडी' की शुरुआत मानी जाती है। 'ट्रेजिडी' के समान ही 'कॉमेडी' शब्द की उत्पति ग्रीक शब्द कोमोस (आनंद) और ऑडिया गीत से है। हास्य नाटक में अंत सुखद होता है। इन नाटकों में मनुष्यों, जानवरों और देवताओं के तत्व सम्मिलित होते हैं। इनमें नृत्य शृंखला, सीधा दर्शकों या नाटककार के साथ संवाद भी सम्मिलित है।

'ग्रीक रंगमंच' प्रदर्शन की इस तस्वीर को देखें। आपने क्या देखा? तीनों कलाकारों ने मास्क पहन रखा है।

मुखौटा ग्रीक रंगमंच का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। वे त्रासदी नाटक को प्राथमिकता क्यों देते थे, यह भी इसी कारण से जुड़ा हुआ है।

यूनानी नाट्य का अभिनय

त्रासदी वास्तव में गंभीर और दुखद है। क्या यूनानियों को हमेशा दुखी रहना और रोना पसंद था? नहीं, इससे उन्हें अपनी दबी हुई भावनाओं और दर्द को दूर करने में सहायता मिली होगी। इसे 'केथार्सिस' (विरेचन) कहा जाता है। आप उच्च कक्षा में इसके बारे में और जानेंगे। मुखौटा चरित्र को चित्रित करने में सहायता करता है, न कि अभिनय करने वाले व्यक्ति को।

ये मुखौटे तो आपने कई बार देखे होंगे? लेकिन आपको क्या लगता है वह क्या दर्शाते हैं? हमने जो अध्ययन किया है, आप उससे इसका अनुमान लगा सकते हैं।

त्रासदी और हास्य

अगली बार जब आप यह मुखौटा देखेंगे, तो आपको इसके पीछे की कहानी पता चल जाएगी।

आइए, घेरा बनाएँ

1. किसी स्थिति को समझने के लिए आपने अपने *भाव* और *रस* के विचार का कैसे अवलोकन किया? इसका एक उदाहरण दीजिए।
2. *नवरस* (प्राचीन भारत से) और त्रासदी - हास्य (प्राचीन ग्रीक से) को जोड़ने का प्रयास कीजिए।
    - किस *रस* को त्रासदी और हास्य में समावेश किया जा सकता है।
    - क्या और भी भाव हैं? जिन्हें इनके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता?
3. उन सभी भावों की एक सूची बनाएँ, जिससे आप एक दिन में गुजरे थे। प्रत्येक को रस के समान नाम दीजिए।
4. जब आप कोई कहानी पढ़ते हैं, तो उन सभी भावनात्मक क्षणों को नाम के साथ चिह्नित कीजिए, जिस पर चर्चा की गई है।

आधा मुखौटा

पूरा मुखौटा

गतिविधि—मुखौटे और भाव

आइए, हम मुखौटों के माध्यम से भावों को समझें। मुखौटे चेहरे को ढक लेते हैं और चेहरा भावों को दिखाने का एक माध्यम होता है। फिर मुखौटे भावों को कैसे दिखा सकते हैं?

मुखौटों में भाव और चरित्र दोनों निहित होते हैं, जिन्हें आप पहन सकते हैं और अभिनय कर सकते हैं!

वैसे तो मुखौटे कई प्रकार के होते हैं, लेकिन हम उनमें से दो के बारे में चर्चा करेंगे।

कैंची और गोंद का प्रयोग करते समय सावधानी रखिए, उनका प्रयोग अपने अध्यापक के पर्यवेक्षण में ही कीजिए!

गत्ते का मुखौटा (आधा मुखौटा)— (गत्ता, कैंची, गोंद और रंग)

- सबसे पहले चेहरे का एक खाका बनाएँ, साथ में इस बात का भी ध्यान रखिए कि रेखांकित किए जा रहे चेहरे के दोनों ओर एक संतुलन बना रहे। इसका एक सरल तरीका यह है कि कागज को ठीक बीच से मोड़ दिया जाए (चित्र देखिए)।
- आँख और नाक को चिह्नित कीजिए, इस तरह से चेहरे के दोनों ओर के आकार संतुलित हो जाएँगे। आँख, नाक और कान या अपनी इच्छानुसार किसी अन्य विशेषता को जोड़ने के लिए भिन्न-भिन्न आकृति और डिजाइन का प्रयोग कीजिए।
- रंगीन कागज और गोंद की सहायता से अनेकों रचनात्मक विशेषताओं को जोड़ा जा सकता है।
- गत्ते को चेहरे के अनुसार आकार देने के लिए पहले इसे मोड़ लीजिए एवं एक कोण से काटिए और फिर चिपकाइए।
- मुखौटे में रिबन या इलास्टिक बाँधने के लिए कान के पास छेद कीजिए।

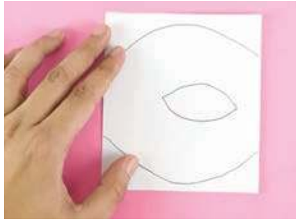

चित्र और कागज को आधा मोड़ लीजिए।

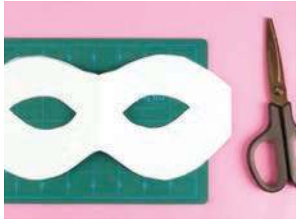

कैंची से रेखाओं को किनारे से काटिए

गत्ते को हल्का-सा मोड़ने के लिए टेबल के किनारे का प्रयोग कीजिए

अपने मुखौटे को रंगों, सीप, शंख, पंख या अपनी पसंद की किसी भी वस्तु से सजाएँ

कागज का मुखौटा (पूरा मुखौटा)— (पुराना अखबार, एक गुब्बारा, गोंद, कैंची और रंग)।

- कागज को टुकड़ों (अखबार या सामान्य कागज) को फाड़ लीजिए, उसे पानी में गीला कीजिए और गुब्बारे की सतह पर धीरे-धीरे लगाएँ।
- गुब्बारे के आधे हिस्से को दिए गए चित्र की तरह ढकिए। कागज के किनारों को एक-दूसरे के ऊपर चढ़ाकर लगाएँ। चेहरे की आकृति के उभर आने तक गीले कागज की परत को बार-बार लगाएँ।
- इसे पूरी तरह सूखने दीजिए, कागज की गीली परत लगाने, उसके सूखने, दोबारा परत लगाने और इच्छित आकार प्राप्त करने की इस प्रक्रिया में लगभग तीन दिन लग सकते हैं।
- गुब्बारे को फोड़ लीजिए और निश्चित आकार के लिए कागज को काट लीजिए।
- पात्रों के अनुसार मुखौटों में रंग भरिए, विभिन्न भावों और चेहरे की मुद्राओं के लिए भिन्न-भिन्न रंगों का प्रयोग कीजिए।

सामान्य रूप से एक मुखौटा विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करता है। प्रदर्शन कलाओं में मुखौटों का कई तरह से प्रयोग किया जाता है तथा इसे भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक उत्सवों और नाट्य परंपराओं में देखा जा सकता है। चाहे किसी पात्र, सांस्कृतिक प्रतीक या किसी गहरे अर्थ को व्यक्त करना हो, मुखौटे प्रदर्शन कला की दुनिया में एक शक्तिशाली और बहुमुखी उपकरण होते हैं। भारत में 50 से अधिक प्रकार के मुखौटों की पहचान की गई है।

गुब्बारे पर गीले कागज के टुकड़े। 5–6 परत आखिरी परत गोंद के साथ

अच्छे से सूख जाने के बाद गुब्बारे को फोड़कर बाहर निकाल लीजिए।

आकार को स्पष्ट करने लिए बाह्य रेखा को काटिए (बड़ों की सहायता लीजिए)।

अब मुखौटे को रंगों व अन्य सामग्रियों से सजाएँ।

सामूहिक गतिविधि

- 3–4 विद्यार्थियों का एक समूह बनाएँ।
- नवरस से किसी एक रस का चयन कीजिए।
- अपनी स्थानीय संस्कृति से किसी डिजाइन की पहचान कीजिए।
- उस स्थानीय संस्कृति के आधार पर संबंधित रस (भाव) में एक मुखौटे का निर्माण कीजिए।

टिप्पणी— निर्माण के लिए चुन सकते हैं —

- गत्ते वाला पूरा मुखौटा।
- गुब्बारे के साथ कागज वाला मुखौटा।

उदाहरण

सांस्कृतिक— इसमें महाराष्ट्र की जनजातीय डिजाइन और *वर्ली* कला है। भाव— भौंह और आँखें क्रोध का भाव प्रदर्शित कर रही हैं (रौद्र)।

यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं —

भावों का प्रदर्शन

हास्य, हर्ष

क्रोध

सांस्कृतिक प्रदर्शन

पुरुलिया छऊ
(पश्चिम बंगाल)

चाम
(लद्दाख)

अध्याय 17

आइए, डिजाइन बनाएँ

मंचीय तकनीक 1

0679CH17

रंग रचना के संसार में,
रूप सज्जा बनती है एक कहानी,

खुलती है भावों की गठरी
जब छूती है चेहरे को रंगों की कूंची।

पोशाक के चित्रपट
पर उभरते हैं नित-नए किरदार

सामंजस्य और दृश्य के विधान से रच देते हैं
अनूठा, अकल्पनीय, रंग-रचना का संसार।

प्रस्तुत अवधारणाएँ

- रूप-सज्जा और वस्त्र-विन्यास
- मंच
- नाट्य-लेखन

दृश्य 3— रंगमंच प्रस्तुति

किसी एक सफल प्रस्तुति में, हम देखते हैं कि अभिनेता अभिनय करता है और प्रशंसा पाता है। लेकिन उसके लिए बहुत से अन्य संबंधित कला विभागों के प्रयास और कार्य भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, ताकि उसका अभिनय दर्शकों को पूरी तरह से प्रभावित कर सके। हम यहाँ उन मूलभूत कलाओं को समझेंगे—

- रूप-सज्जा
- वस्त्र-विन्यास
- मंच-विन्यास

प्रथम दृष्टि में किसी की पहचान उसके चेहरे से होती है। इसलिए एक अभिनेता के लिए मंच पर विश्वसनीय दिखने हेतु प्राथमिक रूप से जिस तत्व पर विचार किया जाना चाहिए वह है – रूप-सज्जा।

रूप-सज्जा

क्या आपने कभी अभिनेता के चेहरे पर लगे रंगों पर गौर किया है? कुछ को देखकर अच्छा लगता है, कुछ-कुछ डरावने लगते हैं और कुछ को देखकर हँसी आती है। ये सब रूप-सज्जा का कमाल होता है। यह योजनाबद्ध तरीके से, भूमिकाओं के अनुसार किया जाता है। मंच पर प्रदर्शन करने वाले प्रत्येक पात्र चाहे वह किसी जेंडर, आयु या समुदाय आदि का हो, उसकी रूप-सज्जा करनी पड़ती है।

कक्ष, जिसे ग्रीन कक्ष भी कहा जाता है, अच्छी रोशनी वाला और हवादार होना चाहिए।

आपका सवाल हो सकता है, लेकिन क्यों? रूप-सज्जा क्यों आवश्यक है? हम अपने दैनिक जीवन में तो रूप-सज्जा नहीं करते, मंच पर यह क्यों आवश्यक है? आपका उत्तर होगा —

1. **दृश्यता और प्रदर्शन**— रूप-सज्जा चेहरे से संबंधित विशेषताओं को बढ़ाती है, यह सुनिश्चित करती है कि भाव और अभिव्यक्तियाँ दर्शकों को दूर से भी स्पष्ट दिखाई दें।
2. **चरित्र रूपांतरण**— अभिनेताओं को किसी पात्र विशेष में ढालने के लिए रूप-सज्जा एक शक्तिशाली उपकरण है। यह किसी भी कलाकार को बूढ़ा दिखाने, युवा दिखाने या पात्र विशेष में ढालने के लिए न केवल सहायक होती है, बल्कि समग्र रूप से पात्र की प्रामाणिकता को भी बढ़ाती है।
3. **चेहरे के भावों को उभारना**— रूप-सज्जा चेहरे और आँखों के विशेष भावों को प्रमुखता से रेखांकित करने का कार्य भी करती है, जिससे दर्शकों को सूक्ष्मतम बारीकियाँ दिखाई दे सकें।
4. **मंचीय-प्रकाश के साथ सामंजस्य**— मंच पर उपयोग की जाने वाला रोशनी का प्रकाश अत्यधिक सघन होता है जिससे त्वचा के प्राकृतिक रंग में बदलाव आ सकता है। मंच की रोशनी के प्रयोग में अभिनेता के चेहरे को फीकेपन एवं आवश्यकता से अधिक अंधकारमय होने से बचाने के लिए रूप-सज्जा का प्रयोग संतुलन बनाने के लिए किया जाता है।
5. **ऐतिहासिक और नाटकीय शैलियाँ**—मंच-विन्यास या शैली के अनुसार, शैली विशेष को उसी रूप में प्रस्तुत करने के लिए भी रूप-सज्जा की जाती है। यह अभिनेताओं को निर्देशक द्वारा परिकल्पित किसी कालावधि संस्कृतियों या काल्पनिक दुनिया के अनुरूप ढालने में सहायक होती है।

संक्षेप में, मंच पर अभिनेताओं के लिए रूप-सज्जा का अर्थ केवल अच्छा दिखना या सौंदर्यबोध होना नहीं है। यह एक व्यावहारिक और कलात्मक आवश्यकता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह किसी भी नाट्य प्रदर्शन की सफलता में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह अभिनेताओं को दर्शकों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद स्थापित करने में सहायक होती है, उनके चरित्र चित्रण को निखारती है, तथा समग्र रूप से प्रस्तुति के दृश्यों को वांछित प्रभाव प्रदान करती है।

नाटक और भूमिका के आधार पर रूप-सज्जा विभिन्न प्रकार की होती हैं।

- **साधारण रूप-सज्जा**— सरल एवं मूलभूत विशेषताओं को रेखांकित करने वाली।
- **चरित्र रूप-सज्जा**— इनमें आयु, पेशा, व्यक्तित्व और परिस्थिति जैसे तत्वों को दिखाया जाता है।
- **विशेष प्रभाव**—इनमें घाव, धब्बों या सींग आदि जैसी अतिरिक्त विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर रूप-सज्जा के प्रकार को पहचानिए और लिखिए।

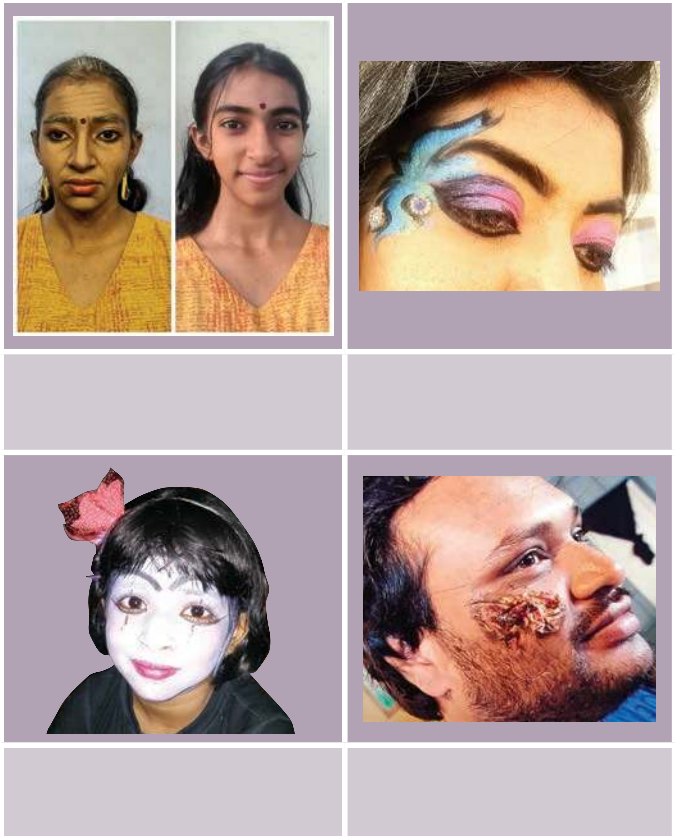

- **काल्पनिक या अमूर्त रूप-सज्जा**— आधुनिक रंगों के साथ अनूठे, अपरिचित पात्रों का निर्माण किया जाता है।
- **माइम या पैटर्न रूप-सज्जा**— एक आकर्षक फेस कवर जो आमतौर पर तटस्थ होता है।

लोगों का सर्वप्रथम ध्यान चेहरे पर जाता है। उसके बाद वस्त्र, पोशाक या कपड़े ध्यान आकर्षित करते हैं। नाटक में किसी भी व्यक्ति का चरित्र उसके द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों से निर्धारित होता है। इसलिए मंच के पात्रों के लिए निश्चित रूप से यह बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व है।

वस्त्र-विन्यास

हम विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े पहनते हैं। आप घर में जो पहनते हैं, उसे स्कूल में नहीं पहनते। इसी तरह गाँव के किसी त्योहार के दौरान आप जिन कपड़ों को पहनकर मंदिर में जाते हैं, वो आपके रात में पहनकर सोने वाले कपड़ों से अलग होते हैं। हैं ना?

इसी तरह एक अभिनेता विभिन्न पात्रों को रचने के लिए भिन्न-भिन्न वस्त्र पहनता है। इससे दर्शकों को पात्र को समझने, पहचानने और उससे जुड़ने में मदद मिलती है।

यहाँ प्रश्न हो सकता है, जब हमारे पास चुनने के लिए अनेकों कपड़े और विकल्प उपलब्ध हैं, तो कोई यह कैसे तय कर सकता है कि किसी चरित्र के लिए क्या उपयुक्त रहेगा? इसे कुछ बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—वस्त्रों को निम्नलिखित श्रेणियों के अनुसार परिकल्पित किया गया है—

- **जेंडर विशेष**— पुरुषों और महिलाओं के कपड़े भिन्न-भिन्न होते हैं।
- **पात्र की आयु**— भिन्न-भिन्न आयु में लोग भिन्न-भिन्न तरह के कपड़े पहनते हैं।
- **नाटक की समय रेखा**— किसी भी संस्कृति की प्रवृत्तियाँ या वेशभूषा बदलते समय के साथ विकसित और परिवर्तित होती रहती है (शिवाजी महाराज के समय जींस-पैंट का कोई अस्तित्व नहीं होता था)।
- **कहानी का भौगोलिक स्थान**— संस्कृतियों और देशों के अनुसार अंतर होता है (कर्नाटक का पारंपरिक पहनावा बंगाल से भिन्न है)।
- **पात्र का व्यवसाय**—पुलिस, वकील और डॉक्टर।

- **पात्र की विशेषताएँ—** एक व्यक्ति जो हमेशा गंदे वस्त्र पहनता है और एक, जो हमेशा स्वच्छ वस्त्र पहनता है।

इन सभी तत्वों को वस्त्र-विन्यास में कैसे सम्मिलित किया जाता है? निम्न का सही तरीके से प्रयोग करके—

वस्त्र या सामग्री— समय सीमा और भौगोलिक स्थिति का मिलान किया जाए (प्राचीन भारत के हिमालय की एक कहानी के लिए सिंथेटिक शिफॉन का उपयोग करना संभव नहीं है, क्योंकि प्राचीन भारत में शिफॉन मौजूद ही नहीं था और यह हिमालय के ठंडे मौसम के अनुकूल भी नहीं होगा)।

रंग— यह निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे—

- समय – काल (*वैदिक* काल के किसी दृश्य के लिए निऑन नीले रंग का प्रयोग उचित नहीं है)।
- प्रत्येक रंग एक निश्चित अर्थ का प्रतिनिधित्व करता है (नकारात्मक पात्रों के लिए गहरे रंग)।
- सांस्कृतिक पहलू (शोक या अंतिम संस्कार जैसे दृश्यों में लाल रंग का प्रयोग नहीं किया जाता है)।

विन्यास और पद्धति (पैटर्न और डिजाइन)— कपड़ों पर कुछ पैटर्न ऐसे होते हैं, जो राजघराने के लिए विशेष होते हैं, कुछ जनजातीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि कुछ ग्रामीण परिवेश के लिए विशिष्ट होते हैं।

स्टाइलिंग— आभूषण, मुकुट, दुपट्टा, बेल्ट, बैग, चश्मा आदि अतिरिक्त सामग्री।

वेशभूषा के आधार पर आप इन चरित्रों के बारे में क्या समझते हैं, नीचे लिखिए।

उदाहरण

गतिविधि — आइए, अभिकल्पन करें!

अभिकल्पन (डिजाइन) का पहला चरण योजना बनाना है और यह रेखाचित्र के माध्यम से किया जाता है।

1. **रूप-सज्जा योजना**— बाल और सिर से संबंधित तत्व बनाएँ तथा नीचे दिए गए पात्र को प्राप्त करने के लिए आवश्यक रूप-सज्जा के साथ इसे रंग दीजिए। आप इसे अपनी अभ्यास पुस्तिका में बना सकते हैं और बार-बार अभ्यास कर सकते हैं।

संभव हो सके आप अपनी ओर से इसे रचनात्मक और रुचिपूर्ण बनाएँ। मुकुट, सिर का पहनावा, बाल आदि का प्रयोग कीजिए। इस बात का ध्यान रखिए कि आप इसे किसी ऐसे व्यक्ति के चरित्र जैसा बनाएँ जिसका वास्तव में अस्तित्व हो (जैसे — गांधी जी, सुभाष चंद्र बोस आदि)। इसे यथासंभव सरल किंतु परिशुद्ध रखिए।

चंद्रगुप्त मौर्य	लोक नर्तक	सुभाष चंद्र बोस	चंद्र भगवान

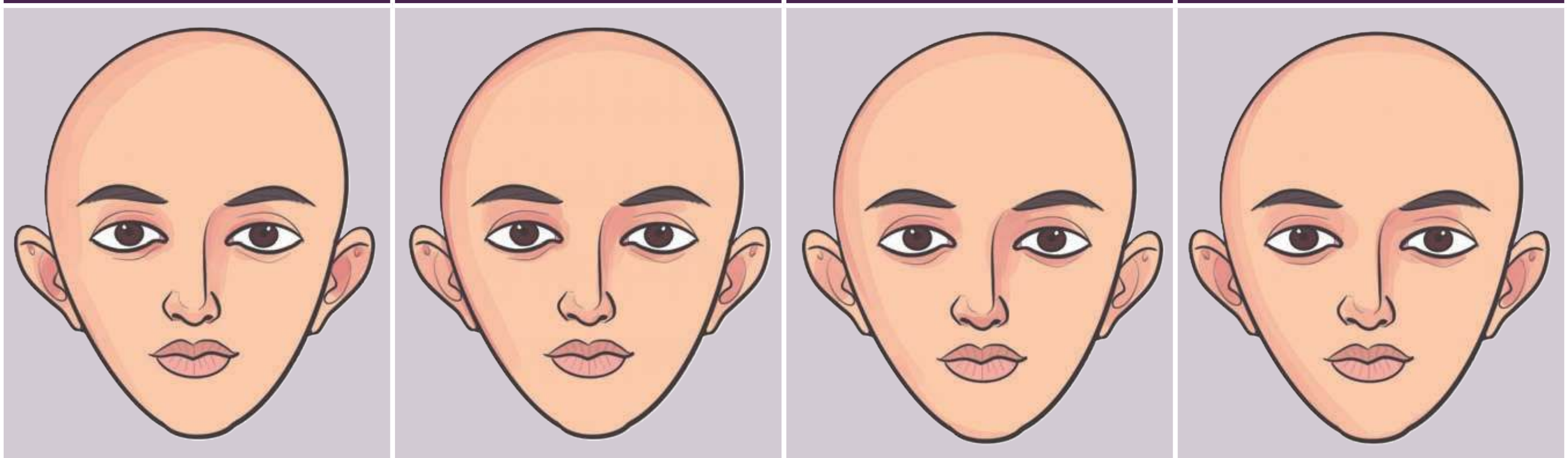

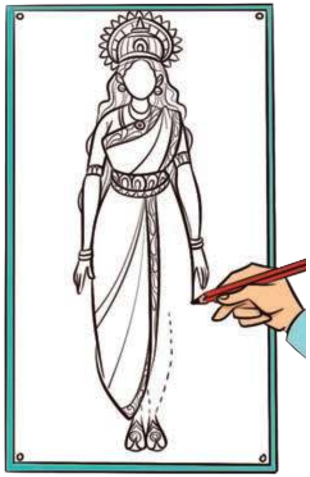

उदाहरण

2. **वस्त्र-विन्यास**— अब हम उसी तरह से वस्त्र-विन्यास करने का प्रयास करेंगे!

जिस पात्र की आपने रूप-सज्जा की थी, अब उसी के लिए वस्त्र विन्यास कीजिए!

समयावधि, कार्य की प्रकृति, रंग और अन्य विवरण का ध्यान रखिए। आप दिखाए गए चित्र के अनुसार कपड़े के टुकड़े बना सकते हैं या चिपका सकते हैं।

पोशाक पहन ली गई है, रूप-सज्जा हो गई है, लेकिन आप इसे मंचित कहाँ करेंगे?

चंद्रगुप्त मौर्य	लोक नर्तक	सुभाष चंद्र बोस	चंद्र भगवान
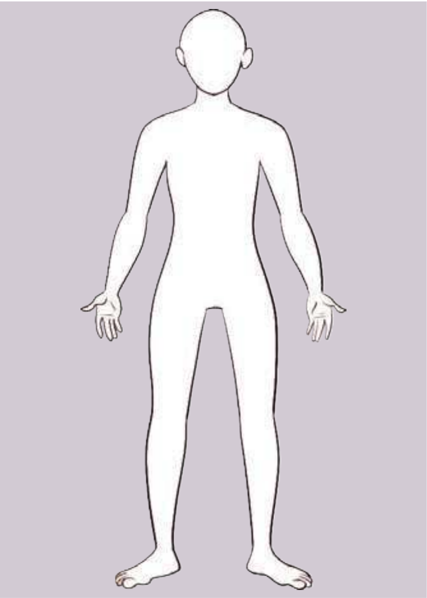	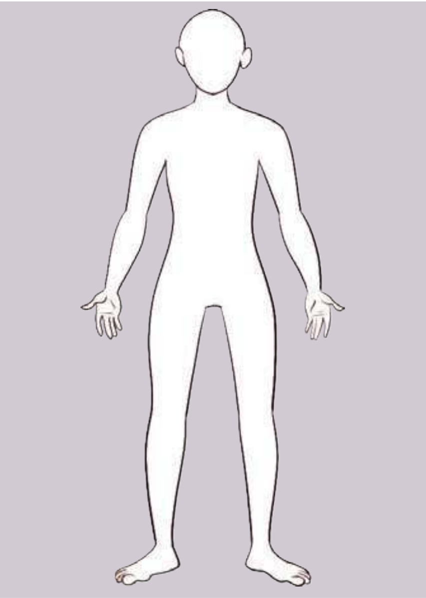	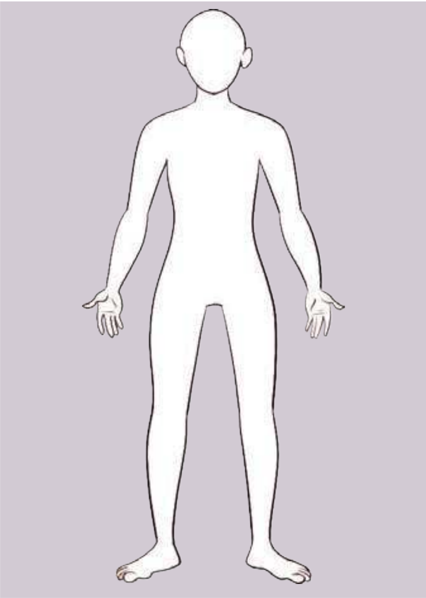	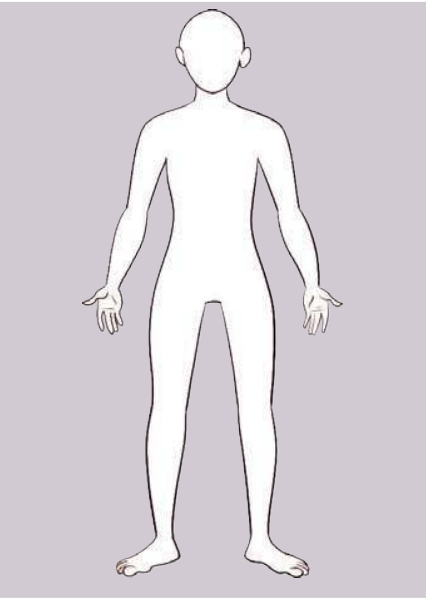

मंच से जुड़ी कुछ रोचक बातें

रंगमंच शब्द की उत्पत्ति ग्रीक प्रदर्शन स्थल 'थिएट्रॉन' के नाम से हुई है।

इसका उत्तर आपके प्रश्न में ही छुपा है।

एक मंच पर!

मंच एक वह स्थान है, जहाँ आप नाटक प्रस्तुत करते हैं। रंगमंच के इतिहास में मंच के विभिन्न प्रकार देखने को मिलते हैं।

नाटकों का मंचन अनेक स्थलों पर किया गया है, जिनमें भारतीय *नाट्यगृह*, ग्रीक थिएट्रॉन से लेकर विश्व में नाटक के लिए विभिन्न तरह के रंगमंच, जैसे सड़कों पर नाटक प्रस्तुति और अंत में 'प्रोसीनियम' नामक आधुनिक इंडोर प्रेक्षागृह सम्मिलित हैं। 'प्रोसीनियम' आज के प्रदर्शनों में सबसे लोकप्रिय और सामान्य रूप से प्रयोग की जानी वाली संरचना है।

प्रोसीनियम

प्रोसीनियम मंच की उत्पत्ति सीधे विद्युत और प्रकाश बल्ब, जैसी वैज्ञानिक खोजों से जुड़ी हुई है।

पहले, अधिकांश नाटक दिन में, मंच पर पड़ते सूर्य के प्रकाश में होता था या रात में बड़े तेल के दीयों के प्रकाश में होता था, जैसा कि प्राचीन समय में प्रचलित था। बाद में विद्युत और विद्युत बल्बों का प्रयोग कर प्रकाश, उसकी तीव्रता और अन्य पहलुओं को नियंत्रित किया जा सका।

इससे नाट्य प्रदर्शन किसी बंद भवन के अंदर ही किया जाने लगा, जहाँ न तो तीव्र धूप, न ठंडी हवाएँ और न ही भारी बारिश प्रदर्शन के मंचन में बाधक बन सकें।

मंच के प्रमुख भाग

साइड विंग्स— विंग्स मंच के दोनों ओर लगे होते हैं, जो कलाकारों को मंच पर प्रवेश करने तथा पुनः वापस जाने में मदद करते हैं।

एप्रन— यह घुमावदार भाग होता है, जो मंच से आगे की ओर निकलकर दर्शकों की ओर जाता है, सामान्यतया इस भाग का प्रयोग फुट लाइट और फुट माइक लगाने के लिए किया जाता है।

प्रोसीनियम— प्रोसीनियम मंच के आगे की ओर लगा हुआ फ्रेम या वृत्तखंड होता है।

साइक्लोरामा— मंच की पिछली दीवार पर लगा एक बड़ा, हल्का नीला या सफेद रंग का कपड़ा, जो मंच पर प्रदर्शित किए जाने वाले दृश्य को अनुकूल बनाता है। जिसका प्रयोग आकाश, बादल, सूर्योदय आदि जैसे विशेष प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

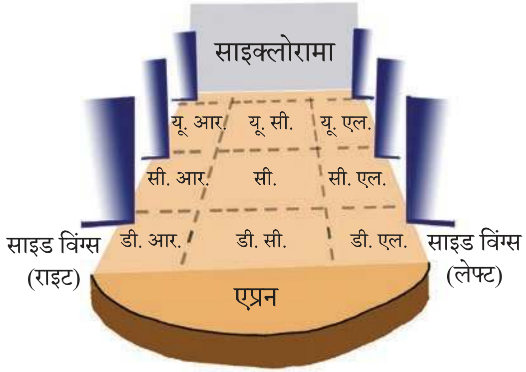

गतिविधि

अब तक सीखी हुईं समस्त क्रियाओं को एक साथ प्रयोग करने के लिए निम्नलिखित कार्य कीजिए—

1. अपनी किसी प्रिय कहानी का चयन कीजिए।
2. अपने पसंद के किन्हीं दो पात्रों को चुनिए। उनके लिए वस्त्र-विन्यास और रूप-सज्जा कीजिए (पुस्तक में पढ़ी हुई किसी कहानी की नकल न कर स्वयं बनाएँ)।
3. दिखाए गए चित्र के अनुसार गत्ते की सहायता से एक मंच का प्रतिरूप तैयार कीजिए, जिसमें साइड विंग्स भी हो (इसे समूह में भी किया जा सकता है)।
4. योजना बनाएँ कि मंच और सामग्री का उपयोग करते हुए मंच पर किसी एक दृश्य को कैसे अभिनीत किया जा सकता है (कुर्सियाँ, मेज आदि या पेड़, झोंपड़ी आदि)।

वैकल्पिक रूप से इसका एक चित्र बनाइए।

मंच के भाग

सी. — सेंटर

सी. आर. — सेंटर राइट

सी. एल. — सेंटर लेफ्ट

यू. आर. — अप राइट

यू. सी. — अप सेंटर

यू. एल. — अप लेफ्ट

डी. आर. — डाउन राइट

डी. सी. — डाउन सेंटर

डी. एल. — डाउन लेफ्ट

दृश्य 4— ठीक से लिखिए

आलेख एक कूँची है, कहानीकार की,
रंगती जो दुनिया को अपने शब्दों से,
नृत्य के लिए आमंत्रित करता पात्रों को
गढ़ता है एक ऐसा जादू,
मंत्र-मुग्ध कर देता है, जो दर्शक को।

एक अच्छा आलेख (पटकथा) का होना सफल प्रस्तुति की ओर पहला कदम है। जिस प्रकार किसी भवन की पक्की नींव किसी भी संरचना का सबसे महत्वपूर्ण पहलू होता है ठीक उसी प्रकार सही आलेख भी कौशल और रचनात्मक विकास के लिए एक आधार तैयार करता है।

आइए, सबसे पहले हम उन शब्दों और शब्दावलियों को समझें, जो सामान्यतया प्रयोग में आते हैं – कहानी, नाटक, आलेख, संवाद। क्या ये सब एक ही हैं? नहीं!

एक नाटक वह कहानी होती है, जो प्रत्यक्ष रूप से आपसे कही जाती है। पात्र जीवंत हो उठते हैं और घटनाएँ आपके सामने घटित होने लगती हैं। लेकिन जब यह आलेख (लिखित रूप) के रूप में होता है, क्या यह कहानी के समान नहीं होता है?

कहानी और नाटक के आलेख में क्या अंतर है?

एक कहानी

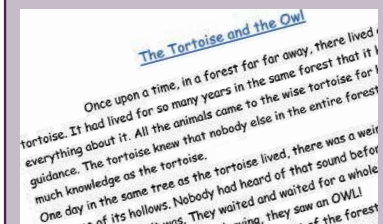
The Tortoise and the Owl
Once upon a time, in a forest far far away, there lived
tortoise. It had lived for so many years in the same forest that it
everything about it. All the animals came to the wise tortoise for
guidance. The tortoise knew that nobody else in the entire forest
much knowledge as the tortoise.
One day in the same tree as the tortoise lived, there was a wei
of its hollows. Nobody had heard of that sound befo
was. They waited and waited for a whole
leaving, they saw an OWL!
of the forest

स्क्रिप्ट वार्तालाप

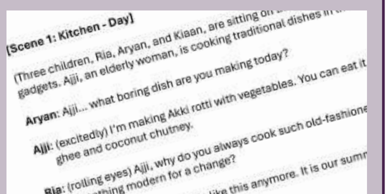
[Scene 1: Kitchen - Day]
(Three children, Ria, Aryan, and Kiaan, are sitting on
gadgets. Ajji, an elderly woman, is cooking traditional dishes in
Aryan: Ajji... what boring dish are you making today?
Ajji: (excitedly) I'm making Akki rotti with vegetables. You can eat it
ghee and coconut chutney.
Ria: (rolling eyes) Ajji, why do you always cook such old-fashione
mething modern for a change?
like this anymore. It is our sum

गतिविधि (कक्षा में)

कहानी निर्माण निर्देश— सभी एक वृत्ताकार गोले में बैठते हैं (अगर घेरा बनाना संभव न हो, तब अपनी जगह पर भी बैठा जा सकता है)। शिक्षक पहला वाक्य बोलकर शुरुआत करेंगे। आपमें से प्रत्येक एक पंक्ति जोड़कर एक कहानी का निर्माण करेगा। ध्यान से सुनिए कि अंतिम वाक्य क्या था? आपको वहीं से आगे बढ़ाना है।

कहानी पूरी करने की जल्दबाजी मत कीजिए। कहानी रोचक और जटिल बनाने की कोशिश कीजिए।

आरंभिक स्तर— प्रत्येक एक पंक्ति बोलेगा, जब तक कि सभी को अवसर न मिल जाए। अंतिम समूह के बच्चों को यह सुनिश्चित करना होगा कि वे उसे पूरा करें।

चर्चा

क्या यह एक रूचिपूर्ण कहानी है? क्या आपको लगता है कि यह कहीं से उबाऊ हो गई है? कहानी क्या है, क्या आप वर्णन कर सकते हैं? क्या यह किसी नाटक के आलेख की तरह है?

नाटक के आलेख में ऐसी कौन-सी बातें हैं, जो आपको कहानी की पुस्तक से भिन्न लगती है? उनमें कुछ के नाम बताइए जो भिन्न हैं।

कहानी वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं, अनुभवों या किसी रोमांच का एक वर्णन या विवरण है, जिसे संरचित या सुसंगत रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें समय के साथ सामने आने वाली घटनाओं की एक शृंखला सम्मिलित होती है, जो क्रमानुसार प्रकट होती है। सामान्य रूप से चरित्रों की कथा होती है, जो चुनौतियों का सामना करते हैं, परिवर्तनों से गुजरते हैं और कथा के समग्र विकास में योगदान देते हैं।

वार्तालाप दो या दो से अधिक लोगों के बीच संवादात्मक, मौखिक आदान-प्रदान है। यह एक सामाजिक तथा संवाद प्रक्रिया है, जहाँ प्रतिभागी सम्मिलित होते हैं और बारी-बारी से एक संवाद बोलते हैं तथा सुनते हैं, जो आकस्मिक, औपचारिक या संरचित हो सकता है।

एक उल्लेखनीय अंतर यह है कि कहानी एक लेख के रूप में होती है, जबकि आलेख 'बातचीत' के रूप में।

मुझे विश्वास है, आप प्रत्येक दिन लोगों को घर में, सड़क पर, विद्यालय में, प्रत्येक जगह बातचीत करते देखते या सुनते होंगे। आइए, एक दुकानदार और ग्राहक के बीच किसी साधारण बातचीत को लिखने का प्रयास कीजिए। यह वह भी हो सकती है, जो आपने देखा हो या बिल्कुल ही काल्पनिक भी हो सकती है।

ग्राहक— ____________________________________

____

दुकानदार— __________________________________

____

ग्राहक— ____________________________________

____

दुकानदार— __________________________________

____

(यदि आप बातचीत को आगे चलाए रखना चाहते हैं, तो नोटबुक का प्रयोग कीजिए। इसे आप अपनी इच्छा के अनुसार बढ़ा सकते हैं।)

बधाई हो आपने अपना पहला आलेख लिख लिया है!

आइए, अब अगले पढ़ाव की ओर चलते हैं। अगर आप ध्यान से देखेंगे, तो पाएँगे कि जो आलेख आपने लिखा है, वह आपके देखे हुए नाटक या सुनी हुई कहानी से भिन्न है। ऐसा क्या है, जिसका अभाव है?

यह हमें किसी कहानी या आलेख के तीन प्रमुख भागों को समझने में सहायता करता है।

आरंभ	मध्य	अंत
पात्र कौन हैं? कहाँ हैं और कब हैं? पात्र क्या चाहते हैं?	पात्रों की समस्या क्या है? पात्रों को क्या हुआ है? वे इस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं।	क्या समस्या का हल होता है? यह कैसे और कौन करता है? निष्कर्ष क्या है?

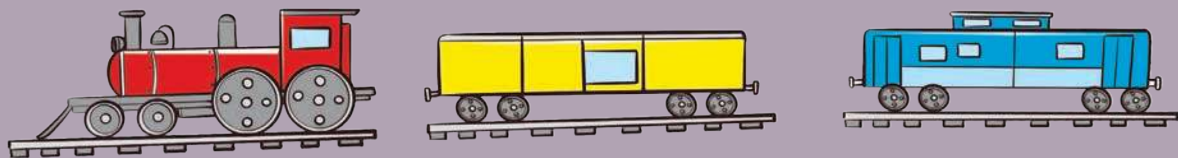

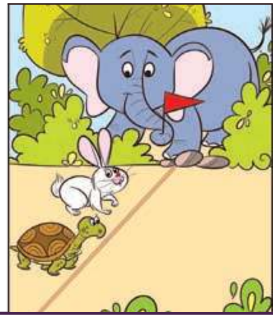

आरंभ

खरगोश और कछुए की दौड़।

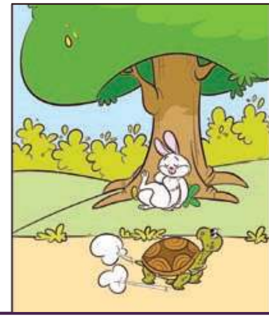

मध्य

खरगोश आराम करता है, कछुआ आगे निकल जाता है।

अंत

कछुआ दौड़ जीत जाता है, खरगोश हार जाता है।

यदि आप आलेख के मध्य वाले भाग पर ध्यान दें, तो यहाँ वह समस्या दिखाई दे रही है, जिस बारे में हम बात कर रहे हैं। यह किसी भी कहानी या आलेख का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। इसे '**द्वंद्व**' कहा जाता है।

यहाँ एक उदाहरण दिया गया है कि कैसे इस लोकप्रिय कहानी में द्वंद्व का उपयोग किया जाता है। जिसे हम सभी जानते हैं — खरगोश और कछुआ।

द्वंद्व (कान्फ्लिक्ट) कहानी के पात्रों या तत्वों के बीच द्वंद्व या असहमति, जो अवरोध उत्पन्न करता है और कहानी को आगे ले जाता है।
द्वंद्व कहानी कहने का आधारभूत तत्व है। क्योंकि यह उन चुनौतियों, दुविधाओं या विरोधी ताकतों को निर्माण करता है, जिन्हें पात्रों को सुलझाना होता है।
कहानी में रुचि उत्पन्न करने, दर्शकों को बाँधे रखने एवं चरित्र के विकास के लिए आवश्यक वातावरण के हेतु यह तनाव अति आवश्यक है।

उदाहरण 1 — बिना किसी द्वंद्व के संवाद

ग्राहक— नमस्ते, मुझे अपनी बहन के लिए मिठाई चाहिए।
दुकानदार— ठीक है, आपको किस तरह की मिठाई चाहिए?
ग्राहक— मेरी बहन को लड्डू पसंद हैं।
दुकानदार— हमारे पास बूंदी के, बेसन के और मेवे के लड्डू हैं।
ग्राहक— मुझे बूंदी के लड्डू चाहिए।
दुकानदार— क्या इसे उपहार की तरह सज्जित डिब्बे में पैक करना है?
ग्राहक— हाँ! कृपया कर दीजिए।
दुकानदार— ये लो, आपका उपहार। इसके पचास रुपए लगेंगे।
ग्राहक— ये लीजिए पैसे, धन्यवाद।

आइए, देखते हैं कि द्वंद्व से क्या अंतर पड़ता है।

उदाहरण 2 — द्वंद्व के साथ संवाद

ग्राहक— नमस्ते! मुझे अपनी बहन के लिए मिठाई चाहिए।
दुकानदार— ठीक है, आपको किस तरह की मिठाई चाहिए?
ग्राहक— मेरी बहन को बूंदी के लड्डू पसंद हैं।
दुकानदार— क्षमा करें। हमारे पास केवल बेसन और मावे के लड्डू हैं।
ग्राहक— ओह! लेकिन मेरी बहन को बूंदी के लड्डू पसंद हैं। कोई बात नहीं, आप मुझे बेसन के लड्डू दें और उसे उपहार हेतु सज्जित डिब्बे में पैक कर दें।
दुकानदार— ओह! हमारे पास सज्जित डिब्बा उपलब्ध नहीं है। क्या इसे सामान्य भूरे रंग के लिफाफे में दे दूँ?
ग्राहक— ये तो ठीक नहीं है, पहले आपके पास वो लड्डू नहीं जो मुझे चाहिए। अब आपके पास सज्जित डिब्बे भी नहीं हैं। मैं दूसरी दुकान पर जाऊँगा। मुझे यहाँ से कुछ नहीं चाहिए।
दुकानदार— अरे! रुको ... मैं कुछ व्यवस्था करता हूँ (फोन उठाकर किसी से बात करता है)। आप चिंता मत कीजिए अब आपको बूंदी के लड्डू और सज्जित डिब्बा भी मिल जाएगा। मैं आपके लिए अपने गोदाम से मँगवा रहा हूँ। क्षमा कीजिए आपको असुविधा हुई।
ग्राहक— कोई बात नहीं। धन्यवाद।

दूसरे उदाहरण में आया टकराव या द्वंद्व पहले उदाहरण में आई नीरसता की तुलना में क्या कुछ भाव और नाटकीयता ला पाया है? इसी तरह आप अपने पूरे आलेख को रूचिपूर्ण बना सकते हैं।

अब, इसे फिर से जाँचें और देखें कि क्या आपने दुकानदार के साथ जो संवाद लिखे हैं उसमें कोई 'द्वंद्व' है? क्या कहानी निर्माण खेल में भी आपको कोई द्वंद्व दिखा? चलिए इसे फिर से खेलते हैं।

गतिविधि (कक्षा में – जारी)

आइए, कहानी निर्माण खेल के दूसरे चरण में चलते हैं और खेल शुरू करते हैं।

निर्देश— सभी एक वृत्ताकार घेरे में बैठते हैं (अगर यह संभव न हो, तो अपनी जगह पर ही बैठा जा सकता है)। शिक्षक पहले वाक्य बोलकर खेल की शुरुआत करेंगे। कहानी निर्माण के लिए आप में से प्रत्येक एक पंक्ति जोड़ता है, अंतिम वाक्य क्या था, इसे ध्यान से सुनिए, आपको वहाँ से आगे बढ़ना होगा।

कहानी पूरी करने में किसी प्रकार की शीघ्रता न करें। कहानी को रोचक बनाने का प्रयास कीजिए।

उच्च स्तर— 10–15 पर्चियाँ बनाइए, जिस पर कुछ क्रमरहित वाक्य लिखे हों, जैसे 'नायक भूल गया', या 'पात्र बहुत भूखा है', या 'अचानक बिजली चली गई'। इसका मुख्य उद्देश्य कहानी में एक 'मोड़' लाना है ... या अधिक पेशेवर भाषा में, जिसे अब आप भी जानते हैं — 'द्वंद्व' है।

जैसे, आपने पहले कहानी में एक वाक्य जोड़ा था। प्रत्येक 10 पंक्तियों के पश्चात आप एक पर्ची निकालते हैं कहानी में एक नया मोड़ आता है और आपको उसे कहानी में सम्मिलित करना होता है। आरंभ-मध्य-अंत का ध्यान रखिए। बच्चों के अंतिम समूह को कहानी में आए द्वंद्व को सुलझाना होगा और एक निश्चित निष्कर्ष तक पहुँचना होगा।

इस खेल को जितनी बार चाहें उतनी बार खेलें, बच्चों का क्रम बदलें, इससे कहानी में आने वाले प्रवाह, चिंतन और उसके समाधान से परिचित होने में सहायता मिलेगी। इन मूलभूत बातों से परिचित होने के बाद अब आप गंभीर आलेख लिख सकते हैं।

अपने स्वयं का नाटक लिखने के लिए यहाँ कुछ सरल चरण दिए गए हैं। पहले अपनी पुस्तिका में पीछे बताए गए तीन भागों के बारे में टिप्पणी लिखिए—

'आरंभ' के साथ शुरुआत कीजिए	अब आप 'मध्य' के बारे में विचार कीजिए	अंततः 'अंत'
पात्र कौन हैं (उनका नाम, आयु, पेशा आदि)? घटना कब और कहाँ घटित हो रही है?	द्वंद्व क्या है? इसे कैसे प्रस्तुत किया जाता है? पात्र क्या करते हैं?	द्वंद्व का समाधान कैसे किया गया? पात्रों के साथ क्या हुआ? निष्कर्ष
इसकी सहायता से अब आप संवाद लेखन शुरू कर सकते हैं।		

हमारे समय के प्रसिद्ध लेखक (अंग्रेज़ी)	
कहानियाँ और उपन्यास (लेखक)	**नाटक (नाटककार)**
सुधा मूर्ति आर. के. नारायण रस्किन बॉण्ड	रवींद्रनाथ टैगोर शेल सिल्वरस्टीन तारो येशिमा
दूसरों की कृतियाँ पढ़ना प्रेरणादायक होता है और इससे आपको अपने काम के लिए विचार भी मिल सकते हैं।	

आप जो भी कहानी पढ़ते हैं या कोई फिल्म देखते हैं, उसमें कहानी के तीन भागों को पहचानने का प्रयास कीजिए— आरंभ, मध्य और अंत। यह भी समझने की कोशिश कीजिए कि द्वंद्व कैसे शुरू होता है और उसका समाधान कैसे होता है। विवरण लिखिए—

फिल्म या कहानी का नाम	कहानी का भाग
________________	आरंभ ________________
________________	मध्य (द्वंद्व) ________________
________________	अंत ________________

लिखते रहिए ...! लेखन के लिए बधाई!

अध्याय 18

‘कंपनी थिएटर’ में

0679CH18

कल्पना कीजिए कि आप कलाकारों के एक बड़े समूह के साथ रह रहे हो, जो प्रतिदिन केवल नाट्य प्रस्तुतियाँ करते हैं और उसी के सहारे अपनी आजीविका भी चलाते हैं। ये प्रतिदिन अभ्यास करेंगे, वेश-भूषा पहनेंगे, रूप-सज्जा करेंगे और प्रतिदिन प्रस्तुतियाँ भी करेंगे। ये सभी एक साथ खाते-पीते, खेलते, सोते-जागते और यहाँ तक की प्रस्तुतियाँ देने के लिए सभी एक साथ यात्रा भी करते हैं। इसीलिए इन्हें ‘कंपनी रंगमंच’ के नाम से जाना जाता है। यह शैली 18वीं, 19वीं और 20वीं शताब्दी में विद्यमान थी। वर्तमान में, उनमें से कुछ मंडलियाँ ही जीवित बची हैं।

आइए, हम इस ‘कंपनी थिएटर’ के मोहक विचार की एक झलक देखें, जो लगभग विलुप्त होने को है।

‘कंपनी थिएटर’ शब्द का इस्तेमाल कलाकारों की व्यावसायिक कंपनी के लिए किया जाता है, जो विभिन्न

एक प्रस्तुति के दौरान ‘कंपनी थिएटर’ कलाकार

प्रस्तुत अवधारणाएँ

- भारत में ‘कंपनी थिएटर’ की अवधारणाएँ
- लोकप्रिय कंपनियाँ और उनका पतन

तरह के नाटकीय प्रदर्शनों को प्रस्तुत किया करते है। ऐसा देखा गया है कि इन मंडलियाँ में ऊँचे पदों पर लोगों का ऐसा समूह होता था, जो अपने निजी और पेशेवर जीवन में आत्मनिर्भर होते थे। मुख सज्जा करने वाला, वस्त्र की सिलाई करने वाला, मंच अभिकल्पक, चित्रकार, प्रकाश तकनीशियन, अभिनेता, नर्तक, गायक, लेखक, रसोइया, प्रबंधक और लेखपाल आदि सभी लोग इन मंडलियों में सम्मिलित होते थे। अधिकांशतया बच्चों के साथ संपूर्ण परिवार इन समूहों का भाग होता था। उन लोगों ने आजीवन एक साथ काम किया, प्रदर्शन किए और यात्राएँ कीं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा करने वाली सबसे पहली 'कंपनी थिएटर' मंडली महाराष्ट्र के मुंबई में स्थित 'पारसी थिएटर कंपनीज' थीं, जिन्होंने 1850 से 1930 के दशक के दौरान संपूर्ण भारत में नाटकों का प्रदर्शन किया।

पारसी नाटक मंडली

1853 में "पारसी नाटक मंडली" नामक पहली पारसी रंगमंच कंपनी ने अपना पहला नाटक 'रुस्तम जबीली और सोहराब' का प्रदर्शित किया। इसके बाद क्रमश— राजा अफरासियाब, रुस्तम पहलवान और पादशाह फरेदुन की प्रस्तुतियाँ दी गई। 1860 तक मुंबई में 20 से अधिक पारसी नाटक मंडलियाँ बन चुकी थीं।

उनकी इन प्रोसेनियम शैलियों की प्रस्तुतियों ने संपूर्ण भारतवर्ष की नाट्य प्रस्तुतियों को प्रेरित किया। आगे चलकर 'कंपनी थिएटर' का प्रारूप महाराष्ट्र, बगांल, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश के अन्य भागों के साथ संपूर्ण भारत में विस्तृत हो गया।

लोकप्रिय कंपनियाँ, प्रदर्शन और कहानियाँ

'सुरभि थिएटर' या श्री वेंकटेश्वर नाट्य मंडली 1885 में आंध्र प्रदेश में बनाई गई थी। उनका पहला नाटक 'कीचक वध' था। यह एक पारिवारिक थिएटर कंपनी है, जो हिंदू परंपरा और इतिहास पर आधारित कहानियों का मंचन करती है। यह उन मंडलियों में से एक है, जो गत 138 वर्षों से निरंतर प्रस्तुतियाँ दे रही है।

तर्क से परे विस्मयकारी दृश्य, वी. एफ. एक्स. का प्रयोग एवं मायावी संसार रचना इनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

'सुरभि थिएटर' अभी भी निम्नलिखित नाटकों को प्रदर्शित करती हैं—

श्री कृष्ण लीलालु— कृष्ण की बाल-लीला।
जय पाताल भैरवी— लोक चरित्र थोटा रामाडु की कथा।
भक्त प्रह्लाद— विष्णु भक्ति में समर्पित बालक प्रह्लाद की कथा।
माया बाजार— दानवराज घटोत्कच्छ की कथा।
श्री वेंकटेश्वर उद्भवम (श्रीनिवास कल्याणम्)।
बालानागम्मा— एक दुष्ट जादूगर की कथा।

कर्नाटक नाटक मंडली की स्थापना वर्ष 1874 में कर्नाटक के गडग नामक स्थान पर हुई थी। इसके पीछे सक्करी बालाचार्य (शांता कवि) का अथक प्रयास था। उन दिनों कीचक, बाणासुर और वस्त्रहरण जैसे नाटक मंच पर बहुत लोकप्रिय थे।

लगभग उसी समय, कर्नाटक के बीजापुर जिले के हलासंगी में 'हलासंगी नाटक मंडली' की शुरुआत की गई। वेंकन्नाचार्य अगलगट्टी द्वारा लिखित श्रीमती परिणय, मदालसा परिणय, द्रौपदी वस्त्रहरण और भौमासुर वध आदि जैसे लोकप्रिय नाटक हुए।

उन्हें मैसूर के महाराजाओं का संरक्षण प्राप्त था, जिन्होंने उनका समर्थन के साथ-साथ दृश्य कलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए उदारतापूर्वक दान भी दिया।

'श्री चन्नबसवेश्वर नाटक मंडली या गुब्बी कंपनी', उन दिनों कर्नाटक की सबसे प्रसिद्ध थिएटर कंपनी थी। उनके लोकप्रिय नाटकों में से एक सदारामे, सुभद्रा, हेमारेड्डी मल्लम्मा आदि प्रमुख थे। जिनके प्रदर्शन हमेशा दर्शकों से खचा-खच भरे होते थे। लोग इनके टिकट क्रय करने के लिए कई-कई दिनों तक लंबी पंक्तियों में खड़े रहते थे।

कुछ अनूठी विशेषताएँ—

- यह ऐसी मंडली थी, जिसने सबसे पहले महिलाओं को अभिनय करने की अनुमति प्रदान की थी।

गुब्बी कंपनी

- कन्नड़ के प्रसिद्ध अभिनेता डॉ. राजकुमार ने इसी कंपनी से अपने थिएटर व्यवसाय का आरंभ किया था।
- कर्नाटक के प्रसिद्ध रंगमंच निर्देशक बी.वी. कारंत ने भी अपने रंगमंचीय यात्रा का आरंभ इसी कंपनी से किया था।

वर्तमान स्थिति

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में 'कंपनी थिएटरों' का काल धीरे-धीरे खत्म होता चला गया। इसके कई प्रमुख कारण थे—

- अधिकांश कंपनियों का वित्तीय लेन-देन और प्रबंधन मांग के अनुरूप नहीं किया गया।
- सिनेमा उद्योग, जैसी अभिनव तकनीकें सशक्त दावेदार के रूप में उभरकर सामने आईं।
- विषय-वस्तु और कहानियाँ न्यूनाधिक पारिवारिक माहौल के प्रतिकूल होती गईं। चूँकि कुछ कंपनियों ने अधिक कमाई के लिए अश्लील हास्यों का सहारा लिया।
- अव्यावसायी रंगमंच या हव्यसी रंगमंच शैली की अवधारणाओं ने अपनी सुविधा के अनुसार अधिक लोकप्रियता प्राप्त की।

भारत में व्यावसायी रंगमंच

वर्तमान में, कंपनी थिएटर में गिरावट आई है, आज भी कई व्यावसायी कंपनियाँ हैं, जो उच्च गुणवत्ता वाली प्रस्तुतियाँ प्रदर्शित करती हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में थिएटर तकनीकों ने भी उन्नति की है और इसके अच्छे परिणाम परिलक्षित भी हुए हैं।

अध्याय 19

छाया और कठपुतलियों की कहानियाँ

प्रस्तुत अवधारणाएँ

- हाथ की पुतली
- छड़ी और छाया पुतली
- भारत में पुतली
- वाणी का उतार-चढ़ाव

हम सभी ने गुड़ियों, गाड़ियाँ और रॉकेटों के साथ खेलते हुए अनेकों कहानियाँ और पात्र गढ़े हैं। याद है? किस प्रकार हमने अपने छोटे से खिलौने से संकट में फंसे उस व्यक्ति को बचाने का कार्य किया है या उसे चॉकलेट से बने काल्पनिक संसार में रोमांचक सैर कराई है। पुतली का खेल भी बिल्कुल यही है।

पुतली कला, निर्जीव आकृतियों या चित्रों का उपयोग कर प्रदर्शन तैयार करने की प्रचलित कला है। पुतली कलाकार अपने हाथों की चलन से, डोरी या छड़, जैसी अनेक तकनीकों के माध्यम से इन आकृतियों को नियंत्रित कर दर्शकों का मनोरंजन करना, कहानियाँ सुनाने या संदेश देने का कार्य करते हैं।

दृश्य पाँच— हाथ की पुतली – अँगुली, मोजे और दस्ताने

पुतलियाँ अनेक प्रकार की आकृतियों में पाई जाती हैं। पुतली कैसी होनी चाहिए, इसके बारे में कोई विशेष नियम वर्णित नहीं है। यह आपकी रचनात्मक व कल्पना जैसी अनोखी हो सकती है। आइए, सबसे सरल कदम से शुरुआत करते हैं — ये आपका हाथ! जो चरित्र आप बनाना चाहते हैं (अपने परिवार या दोस्तों का) उनके सरल से चेहरे बनाएँ और उनसे संवाद स्थापित कीजिए।

वैकल्पिक रूप से आप कागज पर अपने हाथ से अनेक पात्र भी बना सकते हैं।

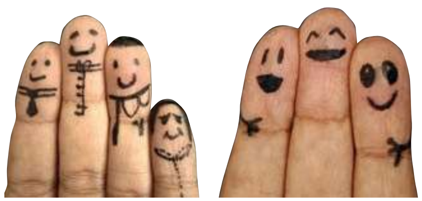

आइए, एक कदम आगे बढ़ते हैं और अँगुली के पोरों पर सामान्य-सी पुतलियाँ (फिंगर पपेट) बनाते हैं।

अँगुली वाली सरल पुतलियाँ

कागज को मोड़कर, कैंची और गोंद की सहायता से एक साधारण कप बनाएँ। उसे अपनी अँगुली पर पहनें एवं चेहरे, हाथ और पैर की आकृति बनाएँ। अब आप इन काल्पनिक पात्रों को नाम दे सकते हैं और इस प्रकार अपनी प्रारंभिक कहानी की रचना कर सकते हैं!

चूँकि पुतली बनाने के लिए कोई तय सीमा या नियम नहीं हैं। अपनी पुतली रचना को जीवंत बनाने के लिए और अन्य युक्तियाँ भी उपयोग में लाई जा सकती हैं!

जानवरों के पात्र

विशेष पात्र

पुराण और इतिहास के पात्र

अपनी अँगुलियों का उपयोग पैरों की तरह करें

मोजे और दस्तानों की कठपुतलियाँ

पुतली के निर्माण का एक अन्य उपाय है, जो आपकी कल्पना के अनुसार पात्रों को दर्शाता है, वो है — मोजे या दस्तानों की पुतलियाँ।

आइए, यहाँ हम मोजे से सरल पुतलियों को स्वयं बनाने हेतु चरणबद्ध मार्गदर्शन का अनुसरण करें!

इन निर्मित पुतलियों को एक नाम दें और अब इनके बीच (काल्पनिक) संवाद करवाएँ!

घर पर पड़ा कोई भी मोजा लें।

तब तक उसे हाथ में पहनते रहें, जब तक यह पूर्ण रूप से अँगुली में आ जाए।

चारों अँगुलियों को चारों ओर से एक लचीली वस्तु या रबर बैंड से बाँध लें और अँगूठे को अलग रखें।

वैकल्पिक रूप से, आप मुँह वाले क्षेत्र को काटकर खोल सकते हैं और गत्तों को भी चिपका सकते हैं।

आप अपने अनुसार इसमें आँख, जीभ, बाल, नाक और अन्य दूसरा विशेष कल्पना चित्र भी जोड़ सकते हैं।

गतिविधि

दो चरित्रों का निर्माण — आप अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग कर दो चरित्र बनाएँ। ये चरित्र व्यक्ति, जानवर या एलियंस, जैसे काल्पनिक पात्र भी हो सकते हैं। आप कुछ पात्रों को जोड़कर नई कहानी की रचना कर सकते हैं, जैसे— एक बाघ और एक भूत या एक बूढ़ा आदमी और एक कुत्ता।

पात्र की विशेषताओं की सूची बनाएँ— प्रत्येक पात्र का नाम और भाव तय कर बताएँ— क्या वे आनंदपूर्ण हैं, क्रोधित हैं या दुखी हैं? प्रत्येक पात्र के बात करने की अनूठी शैली बनाइए और **पात्रों के** मध्य एक सरल संवाद को निर्मित कीजिए। इस रचना में आलेख के तीन भागों का अवश्य ध्यान रखें साथ ही एक सरल संवाद रखें। याद रखें की आलेख (स्क्रिप्ट) के तीन भाग हैं? आप यह सुनिश्चित कीजिए कि आपके आलेख में एक ऐसी परिस्थिति और द्वंद्व की संभावना हो, जहाँ ये दोनों पात्र आपस में संवाद स्थापित कर सकें।

दस्तानों वाली पुतलियों में संवाद

अँगुलियों वाली पुतलियों में संवाद

मोजे वाली पुतलियाओं में संवाद

प्रदर्शन का समय!

आप अपनी कक्षा में या अपने परिवार के अन्य सदस्यों के सामने इसकी प्रस्तुति कर सकते हैं। अब आप एक कुशल पुतली संचालक बन गए हैं।

भारत में हाथों की पुतलियाँ

आप आगामी पुतली प्रदर्शन के लिए नई योजनाओं पर विचार कर रहे हो इस बीच आइए, हमारे देश के कुछ राज्यों के बारे में जानते हैं, जहाँ पुतलियों का प्रयोग किया जाता है।

1. सखी कुन्धेई और सखी नाच— ओडिशा

- चमकीले और हँसमुख चेहरे वाली कठपुतलियाँ, कागज की लुगदी, लकड़ी या कपड़े की सहायता से बनाते हैं।
- उन्हें नाच और गाने से प्यार है और उनकी कहानियाँ अधिकतर हास्य और आनंद से सराबोर होती हैं।
- ये ओडिशा के प्रसिद्ध त्योहारों और समारोहों का लोकप्रिय हिस्सा हुआ करती हैं।

2. पावकथकली पावकूथू — केरल

- ये रंगबिरंगे और नाटकीय दृश्यों वाली नृत्य शैली, कथकली से प्रेरित हैं।
- ये लकड़ी से निर्मित होती हैं और भारी-भरकम वेशभूषा तथा आभूषणों से अलंकृत की जाती हैं।
- इनकी प्रस्तुतियाँ अधिकांशतया रामायण और महाभारत ग्रंथों पर आधारित होती हैं।

3. पुत्तुल नाच — बंगाल

- ये चिकनी मिट्टी से बनाई जाती हैं और इनकी कथा कथन शैली अनूठी है।
- ये सामान्यतया कृष्ण और राधा से जुड़ी कहानियाँ सुनाते हैं साथ ही समसामयिक घटनाओं को भी सम्मिलित करते हैं।
- ये एक हाथ से ताली की सहायता से लय का संयोजन करते हैं, तो दूसरे हाथ से पुतलियों को हार भी पहनाते हैं। उनके प्रदर्शन में लय, ताल और वादन आनंदायक होता है।

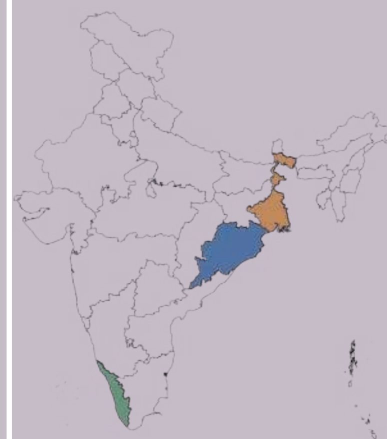

दृश्य 6— छड़ और छाया पुतली

पुतली सामान्य ज्ञान

- भारत में तीन हजार वर्ष से भी अधिक पहले से कहानियाँ सुनाने के लिए पुतलियों का प्रयोग किया जाता रहा है! भागवत पुराण में ऋषि व्यास की एक रोचक कहानी है और इसमें लकड़ी की पुतलियों को डोरियों से नियंत्रित करने की बात कही गई है।
- किसान पूरे दिन काम करने के बाद, पुतली प्रदर्शन कर और देखकर आरामदायक अनुभव करते हैं।

यह पुतली का एक ऐसा रूप है, जिसके लिए किसी मूलभूत ढाँचे की आवश्यकता होती है। इसे आप कक्षा में या घर पर कर सकते हैं। आपको कुछ मूलभूत सामग्री की आवश्यकता होगी, जो आप अपने आस-पास प्राप्त कर सकते हैं।

यद्यपि आप हाथ की पुतलियाँ और मोजे (सॉक) की पुतलियाँ स्वयं ही बना सकते हैं, तथापि इन दोनों रूपों में आपको समूह में काम करना पड़ता है। इसलिए पुतली चलाने वालों का अपना समूह ढूँढ़िए!

कक्षा के सभी बच्चों को पाँच या छह बच्चों के छोटे-छोटे समूह में विभाजित करना है। प्रत्येक समूह एक अवधारणा या एक कहानी तय करता है, जिसे वे सुनाना चाहते हैं। प्रत्येक समूह 3 से 4 पात्रों के साथ एक सरल कथानक (स्क्रिप्ट) बनाएगा। फिर समूह पुतलियों को बनाने के लिए एक साथ काम करेगा।

छड़ पुतलियाँ

इन पुतलियों को बनाने की प्रक्रिया बहुत सरल एवं मस्ती से भरी हुई है।

- अपनी कहानी के सभी पात्रों के चित्र बनाएँ, उनमें रंग भरिए तथा उन्हें आकार में काटिए।
- ऐसी छड़ियाँ ढूँढ़ें, जो कम से कम छह इंच या उससे अधिक लंबी हों। यह पेड़ की टहनियाँ, आइसक्रीम की छड़ें या फिर सख्त गत्ते (कार्डबोर्ड) की पट्टियाँ भी हो सकती हैं।
- आपने जो पात्र बनाए हैं, उनके चित्रों को छड़ी के एक सिरे पर इस तरह चिपकाएँ कि आप एक सिरे को पकड़ें और पुतली दूसरे सिरे पर हो (चित्र देखिए)।

आपकी छड़ पुतलियाँ तैयार हैं!

पुतली प्रदर्शन चौखट (शो फ्रेम)

एक गत्ते को एक साधारण आयत के आकार में काटिए, जो इतना बड़ा हो कि उसमें आपके द्वारा बनाए गए सभी पात्र समा सकें।

वैकल्पिक— आप अपनी कथानक (स्क्रिप्ट) के अनुसार चौखट (फ्रेम) को उपयुक्त चित्रों से सजा सकते हैं।

आप पृष्ठभूमि में कथा के अनुरूप सड़क, जंगल आदि चित्र भी प्रयोग कर सकते हैं।

आप प्रस्तुति के लिए तैयार हैं!

समूह का प्रत्येक सदस्य एक पात्र का संचालन करेगा और फिर वह समूह, पुतली की प्रस्तुति देता है।

अब, जब आपके पास छड़ (स्टिक) पुतली प्रस्तुति तैयार है, तो छाया पुतली बस एक कदम दूर है।

छाया पुतलियाँ

आप गत्ते के ढाँचे (कार्डबोर्ड फ्रेम) पर एक सफेद कपड़ा जोड़ सकते हैं और किसी प्रकाशीय उपकरण (टॉर्च) से प्रकाश के एक तीक्ष्ण एकल स्रोत का उपयोग कर सकते हैं। छाया पुतली के लिए ध्यान रखने योग्य कुछ बातें—

- यह सुनिश्चित कीजिए कि प्रकाश बहुत अधिक न फैले, क्योंकि छाया की तीव्रता इस पर निर्भर करती है। प्रकाश स्रोत को एक स्थिर सतह पर रखा जाना चाहिए, ताकि वह हिले नहीं।
- पात्रों की बाहरी रूपरेखा या आकृति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि रंग, चेहरे की विशेषताएँ आदि छाया में दृष्टिगत नहीं होते हैं। पुतली की छाया पात्र की पहचान कराने में सक्षम होनी चाहिए।

जैसा कि आप छाया पुतली के माध्यम से कहानियाँ बनाने का प्रयास कर रहे हैं। आइए, जानें कि छाया पुतली की कला में अपने देश में हमने कितनी प्रगति की है।

भारत में छड़ और छाया कठपुतलियाँ

भारत में छाया पुतली 2000 से भी अधिक वर्षों से अस्तित्व में है। राम और कृष्ण की कहानियाँ सर्वाधिक लोकप्रिय रही हैं निम्नलिखित चित्रों में, प्रत्येक पुतली के विवरण के स्तर और जटिल रूपरेखा का अवलोकन कीजिए। इतने प्रतिभाशाली थे हमारे कारीगर!

1. आंध्र प्रदेश और तेलंगाना का तोलू बोम्मालट्टा

- जटिल चमड़े की पुतलियाँ, सावधानीपूर्वक कटी और रंगी होती हैं।
- ये पुतलियाँ सचमुच अत्यधिक सुंदर नृत्य कर सकती हैं।
- पुतलियों की इस शैली में हनुमान कथाएँ बहुत मनोरंजक हैं।

2. कर्नाटक का तोगलु गोम्बयेट्टा

- ये चमड़े के बनी होती हैं और यह रंगों का उपयोग करते हैं।
- इस पुतली की आँखें पार्श्व में बनी होती हैं, जो पुतली के सामने की ओर देखती हुई प्रतीत होती हैं।
- पुतली संचालक पात्रों को जीवंत बनाने के लिए ध्वनि प्रभाव देता है और साथ में गाता भी है, जिससे कहानियाँ और भी रोमांचक हो जाती हैं।

3. ओडिशा का रावण छाया

- इस शैली में काले और सफेद रंग की पुतलियों की बनावट सुंदरता से की गई है।
- पुतलियाँ रामायण की कहानी को अभिनीत करती हैं।
- रावण पुतली आमतौर पर अन्य पुतलियों से एक फीट बड़ी होती हैं।

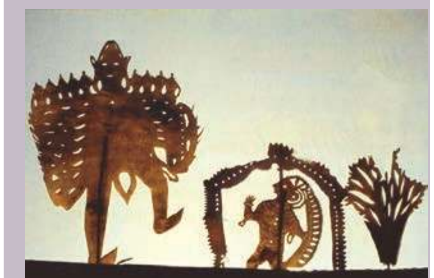

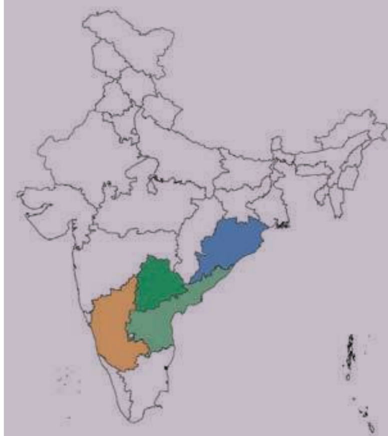

गतिविधि — अपनी खुद की पुतली प्रस्तुति बनाइए!

पुतलियाँ — तैयार ✅

रूपरेखा (चौखट/मंच) — तैयार ✅

पृष्ठभूमि — तैयार ✅

कथानक (स्क्रिप्ट) — तैयार ✅

लेकिन संवाद (डायलॉग) कौन बोलेगा? क्या पुतलियाँ बात करती हैं? नहीं! आप बात कर सकते हैं? हाँ! लेकिन वह आपके जैसा लगेगा... आप अपने पात्र की तरह कैसे लगेंगे?

उत्तर— (वॉयस मॉड्यूलेशन) स्वर लय का उतार-चढ़ाव

पुतली कला के प्रदर्शन में आपका संवाद उच्चारण अभिनीत किए जा रहे पात्र की भावनाओं या उसके द्वारा बताई जा रही कहानी के अनुकूल स्वर व लय के उतार-चढ़ाव से युक्त होना चाहिए। जैसे आपके पुतली पात्र के खुश होने पर आप अपने को हर्षित वाणी एवं उच्च स्वर में उच्चारित कर सकते हैं। यदि यह कोई डरावनी कहानी बता रहा है, तो आप इसे रहस्यमय बनाने के लिए अपने उच्चारण का स्वर धीमा कर सकते हैं। ठीक वैसे ही, जैसे जब आप भिन्न-भिन्न पात्र होने का दिखावा करते हैं, तो आप भिन्न-भिन्न ध्वनियों के साथ कैसे खेलते हैं। प्रस्तुति को अधिक रोमांचक और मनोरंजक बनाने के लिए आप अपनी पुतली के साथ भी ऐसा ही कर सकते हैं!

यह तब बहुत महत्वपूर्ण है, जब आप स्वयं दो पात्र निभा रहे हों। क्या दो पात्रों की एक ही ध्वनि सुनना उबाऊ नहीं होगा, जो आपकी नियमित ध्वनि की तरह भी लगती है? इसलिए दोनों पात्र एक-दूसरे से और आपसे भिन्न लगने चाहिए!

यह किसी भी प्रकार की पुतली के लिए महत्वपूर्ण है। चाहे आप मोजे पुतली, छड़ी पुतली या छाया पुतली प्रदर्शित कीजिए। आपको अपनी ध्वनि पर काम करना ही होगा। याद रखिए, यह उस पात्र के अनुरूप होना चाहिए, जिसका प्रतिनिधित्व पुतली कर रही है!

उदाहरण — एक बूढ़े आदमी का स्वर ऊँचा, दमदार नहीं हो सकता!

अब पुतली प्रस्तुति के लिए अपनी कथानक (स्क्रिप्ट) की पंक्तियों का स्वयं निर्मित पुतलियों के साथ अभ्यास कीजिए। अब आप पुतली की प्रस्तुति के लिए तैयार हैं। अपने दर्शक तैयार करें... शुरू कीजिए!

पुतली से संबंधित कुछ रोचक तथ्य

- कृष्णदेवराय और विक्रमादित्य जैसे भारतीय राजा पुतली के इतने अनुरागी थे कि उनके पास इन अद्‌भुत प्रस्तुतियों के लिए अपने विशेष रंगमंच (थिएटर) थे।
- जेंडर संवेदनशीलता, जैसे— मूल्यों के साथ-साथ सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श पर विद्यार्थियों के मध्य जागरूकता पैदा करने में पुतली एक प्रभावी माध्यम हो सकता है।
- आज, भारतीय पुतलियाँ इसे और भी रोमांचक बनाने के लिए नई तकनीकों और प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर इस परंपरा को जीवंत और अधिक रुचिपूर्ण बना रही है।

निम्नलिखित के लिए एक स्वर खोजिए। नीचे दी गई पंक्ति को उसी स्वर में बोलिए।

"आपने भोजन कर लिया?"		"मैं पार्क में खेलना चाहता हूँ..!"	
"हैलो! क्या आप मेरे साथ दौड़ने के लिए जाना चाहते हैं?"		"क्या तुम मेरे साथ खेलना चाहोगे? ..."	

अध्याय 20

भव्य समापन

0679CH20

आपने, जो कुछ भी सीखा है, उसे एक परियोजना में एक साथ रखने का यह एक मजेदार प्रयास है। इस परियोजना को आप अकेले या अपने मित्रों की सहायता से समूह में भी पूरा कर सकते हैं।

यदि आप नाटक नहीं करने का निर्णय लेते हैं, तो यह गतिविधि आपको कठपुतली कला में बदलाव (स्विच) करने की एक सरल युक्ति भी देती है! इसे अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए और चर्चा कीजिए।

1. कथानक (स्क्रिप्ट)

एक भाव पर आधारित दो या तीन पात्रों के बीच एक सरल संवाद लिखिए। सुनिश्चित कीजिए कि संवाद में मुख्य रूप से वही भाव हो जिसे आपने चुना है। उदाहरण के लिए चुना गया भाव क्रोध है। मुख्य पात्र गुस्सैल हो सकता है, या दो मित्र इस बात पर चर्चा कर रहे होंगे कि किसी के गुस्से के कारण कितनी समस्या खड़ी हो गई।

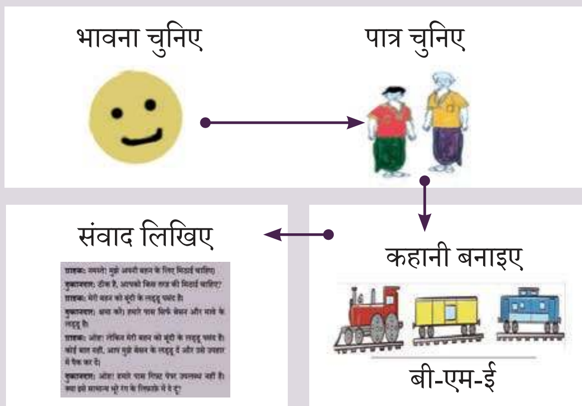

2. शृंगार एवं वेशभूषा

अपने कथानक (स्क्रिप्ट) में पात्रों के लिए रूप-सज्जा और वस्त्र-विन्यास तैयार कीजिए, जैसा आपने दृश्य 2 में किया था।

3. मंच-अभिकल्पन

मंच पर मंच सामग्री (सेट) और अभिनय सामग्री (प्रॉप्स) की योजना बनाने के लिए गत्ते से बने मंच के नमूने (कार्डबोर्ड स्टेज मॉडल) का उपयोग कीजिए।

इसका उपयोग कक्षा में अपने अंतिम प्रदर्शन की योजना बनाने के लिए कीजिए, जहाँ आप मंच तैयार करते हैं और अपने मित्रों के साथ जिस भी कथानक (स्क्रिप्ट) पर अभिनय करते हैं।

4. कठपुतली को बदलना (स्विच)

अपने पोशाक की बनावट (डिजाइन) चित्र की रूपरेखा काटिए और एक छोर पर एक छड़ी चिपकाएँ। अपने सभी पात्रों के लिए ऐसा कीजिए। छड़ की पुतलियाँ तैयार हैं!

अब आप उसी मंच नमूने (स्टेज मॉडल) को अपने पुतली रूपरेखा (फ्रेम) के रूप में उपयोग कर सकते हैं!

चर्चा और प्रतिक्रिया— अपनी कक्षा के सामने प्रस्तुति करने के बाद, अपने काम के प्रत्येक पहलू पर विस्तार से चर्चा कीजिए। यह प्रत्येक कलाकार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

1. कथानक (स्क्रिप्ट) से क्या उन्हें कहानी समझ में आई? क्या द्वंद्व और समाधान स्पष्ट था?
2. क्या पोशाक और शृंगार साफ-सुथरा था? यह पात्र के निर्माण में सहयोग करता है या बाधा उत्पन्न करता है।
3. क्या मंच सामग्री (सेट) और अभिनय सामग्री (प्रॉप्स) का अच्छी तरह से उपयोग किया गया था?
4. क्या प्रदर्शन को और भी अच्छा बनाया जा सकता है?

सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रतिक्रिया (फीडबैक) को एक ही दृष्टिकोण से लीजिए। इससे आपको अगली बार उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में सहायता मिलेगी, क्योंकि आप वही गलतियाँ नहीं दोहराएँगे!

आपने अभी एक
नाट्य प्रदर्शन कैसे आकार लेता है इसकी प्रक्रिया के
मूलभूत चरण सीखे। लेकिन और भी बहुत कुछ है! आगे आप अधिक विस्तृत चरणों पर
ध्यान केंद्रित करेंगे कि अपनी कथानक (स्क्रिप्ट) और प्रदर्शन को व्यावसायिक बनाने के लिए उसमें सुधार कैसे
करें। यह निश्चित रूप से पहले से कहीं अधिक रोमांचक और आकर्षक होगा।

जब भी आप खाली हों, नि:संकोच होकर, अपने मित्रों या पुतलियों के साथ नए कथानक और छोटो-छोटी प्रस्तुतियाँ बनाएँ। इसके लिए आपने जो कहानियाँ पढ़ी हैं या फिल्में देखी हों, उनका उपयोग कर सकते हैं या अपनी कल्पना से नई रचना का निर्माण कर सकते हैं।

जैसा कि इस खंड की शुरुआत में नाट्यशास्त्र का श्लोक कहता है, रंगमंच न केवल आपको प्रदर्शन कलाओं के बारे में सीखने में सहायता करेगा, अपितु महत्वपूर्ण जीवन कौशल का निर्माण भी करेगा। आपको भविष्य में आवश्यकता होगी, तो अपने आप को तलाशने के लिए इस अद्भुत कला का उपयोग कीजिए। सभी नए विचारों को आत्मविश्वास से धारण करें, क्योंकि यहाँ कोई गलत उत्तर नहीं है! जब आप नई कहानियाँ बनाते हैं और उन्हें प्रस्तुत करते हैं, तो यह याद रखें कि उसमें आनंद लें!

आपकी रचनात्मक क्रियाओं के लिए शुभकामनाएँ!
फिर मिलेंगे...

कला रूपों का एकीकरण

0679CH21

हम सब जानते हैं कि हम पुस्तक के अंतिम भाग में आ गए हैं। हम सब ने चार कला रूपों के विभिन्न पहलुओं को जाना है। अब समय आ गया है कि हम उन सभी कला रूपों का एकीकरण करें। चलो जानें कि हम उन सभी को कैसे एक ही गतिविधि में एकीकृत कर सकते हैं।

सबसे पहले एक कहानी सुनते हैं। फिर हम उस कहानी के विभिन्न भागों का चयन करेंगे, जहाँ किसी कला रूप के विभिन्न तत्वों का उपयोग किया जा सकता है।

सुनकर आनंद आया? क्या आपको यह स्पष्ट हुआ कि आप इस एक छोटी-सी कहानी से सभी कला रूपों को एक साथ बुन सकते हैं? आइए, इसे समझते हैं!

हमने दृश्य कला के अध्याय में गतिविधियों के माध्यम से मुहरों के बारे में जाना।

उसी प्रकार हमने संगीत और नृत्य की कक्षाओं में स्थानीय और क्षेत्रीय संगीत व नृत्य को जाना।

आपने रंगमंच की कक्षा में संवाद सीखा। आपने विभिन्न भावों, जैसे—आनंद, आश्चर्य और भय की अभिव्यक्ति सीखी।

कहानी का उदाहरण

एक दिन दो मित्र जंगल के किनारे खेल रहे थे कि अचानक उन्हें एक रहस्यमयी मुहर मिलती है। उस मुहर में वह एक गुप्त पहेली पाते हैं, जिसे हल करने के लिए वे एक रोमांचक यात्रा पर निकल जाते हैं। लेकिन उन्हें कोई भी हल प्राप्त नहीं होता और वे जंगल में खो जाते हैं। उनका हौसला टूटने को ही था कि तभी, एक मित्र को वहाँ पर कुछ स्थानीय जनजाती के लोग, अपने देवता के समक्ष नाचते हुए दिखाई देते हैं। जल्द ही वे पकड़ लिए जाते हैं और उन्हें गाँव में ले जाया जाता है। दोनों बालक अत्यंत भयभीत हो जाते हैं और वहाँ से छूटकर बच निकलने का तरीका सोचने लगते हैं। जैसे ही वे भागने वाले होते हैं कि तभी वे देखते हैं कि उस गाँव की सभी झोपड़ियों की बनावट बिल्कुल उस मुहर के ही जैसी थी, जो उन्होंने खेलते हुए पाई थी। तब वे अपनी मुहर उन जनजातीय लोगों को दिखाते हैं और उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि उन्होंने खेलते समय उस मुहर को पाया और उस पर दी हुई पहेली को हल करते हुए जंगल में भटक गए। बच्चों के हाथ में अपनी पवित्र मुहर को देख जंगल के सभी गाँव वाले रोमांचित हो उठे और उनसे मित्रता करने के लिए आतुर हो गए। उन्होंने बच्चों को अपना गाँव दिखाया और बताया कि वे धरती को ईश्वर के रूप में पूजते हैं।

क्या आप जानते हैं?

पंचतत्व या पंचभूत (पाँच) मूल तत्व होते हैं। ये हैं पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और क्षितिज।

क्या अब आप यह देख पा रहे हैं कि किस प्रकार हम एक कहानी सुनाने के लिए सभी कला रूपों का सुंदरता से समाकलन कर सकते हैं? अब आप अपनी स्वयं की कहानी कहिए।

सुझाव के रूप में आप निम्नलिखित विषय पर कार्य कर सकते हैं—पंचतत्व के दो तत्व – 'धरती और जल'।

व्यक्तिगत गतिविधि

आइए, पंचतत्वों में से दो तत्व-पृथ्वी और जल के ऊपर वार्ता कीजिए।

सबसे पहले, उस जगह, समस्या, क्षेत्र या विषय का चयन कर लीजिए, जिसे हम विभिन्न कलाकृतियों के माध्यम से प्रदर्शित करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम मिट्टी प्रदूषण का विषय चुनते हैं, तो फोटोग्राफी या पोस्टर (दृश्यकला) के माध्यम से एक अभियान चलाया जा सकता है। हम एक ऐसे गीत की रचना भी कर सकते हैं, जिसके बोल प्रेरणादायक हों और धुन ऊर्जावान हो। इस गीत पर नृत्य की परिकल्पना कर नृत्य संरचना तैयार की जा सकती है। यहाँ तक कि आप इस विषय पर एक छोटा नाटक बनाकर सभी ऊपर लिखित कला रूपों के विभिन्न तत्वों का एकीकरण कर सकते हैं।

धरती और जल से जुड़े विषयों पर अपने विचार, भाव और चिंता को व्यक्त करने के लिए अपने संगीत, नाट्य, नृत्य एवं दृश्य कला के ज्ञान और कौशल का प्रयोग करते हुए एक परियोजना बनाएँ।

एक कला शैली को प्रकृति के पंचतत्वों से जोड़ने का कोई नया ढंग मिलने पर इस गतिविधि को आगे बढ़ाइए। आप जब इन संबंधों के बारे में और भी विस्तार से सोचेंगे, तब हम एक समूह में मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेंगे।

तत्व	रंगमंच के तत्व (भाव, शब्द, लय और क्रिया)	संगीत के तत्व (ध्वनि, लय, भाव, शब्द)	नृत्य के तत्व (लय, संचलन, भाव)	दृश्य कला के तत्व (रेखा, आकार, रंग, बनावट)
धरती और जल				

स्मरण रहे कि जिस प्रकार से आप विभिन्न तत्वों को जोड़ रहे हैं, वह आपके मित्रों द्वारा प्रयुक्त रीतियों से भिन्न हो सकता है। इस तालिका को अपने विचारों के अनुसार भरिए। यदि आपको लिखने या चित्रण करने के लिए अतिरिक्त स्थान की आवश्यकता हो, तो अपनी पुस्तिका या एक अलग कागज का उपयोग कीजिए।

सामूहिक गतिविधि

व्यक्तिगत गतिविधि की तरह एक ऐसा विषय चुनिए, जो धरती या जल की किसी समस्या से जुड़ा हुआ हो। आपके युवा विचारों के लिए, यहाँ कुछ उत्प्रेरक सुझाव दिए गए हैं। क्या आपने कभी अपने परिवेश में मिट्टी की गुणवत्ता, पेयजल का स्रोत और प्राकृतिक संसाधन का संज्ञान लिया है? क्या आप किसी तालाब, झील या नदी और उनके पारिस्थितिकी तंत्रों या किसी पर्वत शृंखला या कोई झरना, जिसे आपने इन्हीं दिनों में देखा हो, उनका वर्णन कर सकते हैं?

क्या आप बिना स्वच्छ जल के या प्रदूषित धरती पर एक दिन भी जीने की कल्पना कर सकते हैं? हम सदैव प्रयास कर सकते हैं और कला के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। कला केवल एक तराशने की शैली नहीं है, अपितु सामाजिक परिवर्तनों एवं सुधार का एक वाहक है। कला का बोध हमें संवेदनशील और जागरूक बनाता है, क्योंकि हम आरंभ से ही छोटी-छोटी वस्तुओं में सौंदर्य को सराहना सीख जाते हैं।

क्या अब आप विचार मंथन की गतिविधियों के लिए तैयार हैं?

निर्देश

1. कागज के पर्चों से पाँच श्रेणियाँ बनाएँ। प्रत्येक श्रेणी में एक निश्चित कला रूप से संबंधित गतिविधि लिखिए। (नीचे लिखी गतिविधियों का प्रयोग कीजिए)
2. कक्षा को 10–12 विद्यार्थियों के दो या तीन समूहों में बाँट लीजिए। प्रत्येक समूह 'पृथ्वी' या 'जल' का चयन अपने कार्यक्षेत्र के रूप में कर ले।
3. प्रत्येक समूह का एक प्रतिनिधि सामने आए और प्रत्येक श्रेणी के पर्चों में से एक का चयन कर लीजिए। अब प्रत्येक समूह के पास नाट्य, दृश्यकला, संगीत और नृत्य की एक-एक गतिविधि आ गई हैं। 'मूल्य' श्रेणी के अंतर्गत जो पर्चे हैं, उनका उपयोग एक संग्रहित विषय के रूप में सभी कला रूपों का एकीकरण करने हेतु किया जा सकता है।
4. अब अपने समूह के साथ बैठें और एक एकीकृत परियोजना बनाएँ, जिसमें सभी कलारूपों का समावेश हो। अपनी स्वयं की प्रस्तुति बनाएँ और उसे अपनी कक्षा के समक्ष प्रदर्शित करें।

गतिविधि

रंगमंच	संगीत	दृश्यकला	नृत्य	मूल्य
मुखौटा निर्माण	गीत लेखन और संगीतबद्ध करना	तत्वों से कलाकृति का निर्माण—मिट्टी, गीली मिट्टी या पानी के रंग से।	केवल कदमों का उपयोग और भाव अभिव्यक्ति	वहनीयता
कठपुतली का खेल	अपने आस-पास की वस्तुओं से ध्वनि बनाएँ	प्राकृतिक रंगों का उपयोग कीजिए	धरती या जल से संबंधित कोई लोक नृत्य खोजें	सांस्कृतिक संवेदना
वस्त्र एवं रूप सज्जा के प्रारूप बनाएँ	किसी वाद्ययंत्र का प्रयोग कर तत्वों से जुड़े भाव उत्पन्न कीजिए	तत्वों से जुड़ी सतह या सामग्री से कलाकृति का निर्माण कीजिए	केवल हाथ के संकेत	नि:स्वार्थ कार्य
पात्रों एवं संवाद के संग एक नाट्यलेख का निर्माण कीजिए	जिन प्रसिद्ध संगीतकारों के विषय में आपने जाना है उनका एक गीत ढूँढ़िए	बोतल अथवा पाइप, जैसे रद्दी सामग्री जो, तत्वों से संदर्भ रखते हों उन्हें पुन: उपयोग में लाएँ	गीत या संगीत से एक नृत्य की रचना कीजिए	स्वच्छता

मूल्यांकन

कला शिक्षा में मूल्यांकन, विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमताओं और कलात्मक विकास को समझने और पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारंपरिक विषयों के विपरीत, कला शिक्षा मूल्यांकन रचनात्मक एवं आलोचनात्मक सोच, तकनीकी दक्षता और अभिव्यक्ति क्षमताओं सहित कौशल की एक विस्तृत शृंखला के मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित करता है। ये मूल्यांकन न केवल प्रगति और निपुणता को मापने के लिए है, बल्कि अन्वेषण, आत्माभिव्यक्ति और कला के प्रति गहन प्रशंसा को प्रोत्साहित करने के लिए भी तैयार किया गया है।

मूल्यांकन पद्धति

मूल्यांकन प्रक्रिया मुख्य रूप से कौशल-आधारित होती है। यह बच्चे के 'सही या गलत उत्तर' पर निर्भर नहीं होती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि 'परीक्षण' प्रश्न पत्र और लिखित उत्तरों पर आधारित न बनाया जाए। इससे कला शिक्षा पाठ्यक्रम में प्रयुक्त दृष्टिकोण का उद्देश्य पूरी तरह से विफल हो जाएगा।

0679CH22

पोर्टफोलियो, प्रदर्शन समीक्षा, परियोजना आधारित मूल्यांकन और चिंतनशील आत्म-मूल्यांकन जैसी विभिन्न मूल्यांकन पद्धतियाँ प्रत्येक विद्यार्थी को अद्वितीय कलात्मक यात्रा में एक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है।

निम्नलिखित पृष्ठ पर रचनात्मक और संकलनात्मक मूल्यांकन, दोनों के लिए संरचना का सुझाव दिया गया है। प्रत्येक क्षेत्र के मापदंड के लिए पाँच बिंदुओं का सुझाव दिया गया है। इससे शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों को यह ज्ञात होगा कि विद्यार्थी किस प्रकार की प्रगति कर रहा है। नीचे दी गई तालिका में पाँच बिंदु दिए गए हैं, जिसका उपयोग संदर्भ के रूप में किया जा सकता है। प्रत्येक गतिविधि के लिए रूब्रिक मूल्यांकन का विस्तार किया जा सकता है।

मात्रात्मक मूल्यांकन (रूब्रिक पर आधारित अंक या श्रेणी) और गुणात्मक मूल्यांकन (विद्यार्थियों के आचरण, रुझान, प्रगति और अन्य ऐसे पक्ष जो रूब्रिक के अंतर्गत ना दिए गए हों उनके संबंध में शिक्षकों का अवलोकन) का संयोजन महत्वपूर्ण है।

जहाँ रचनात्मक मूल्यांकन प्रत्येक कक्षा में अवलोकन पर आधारित होता है वहीं, संकलनात्मक मूल्यांकन के लिए एक पूरा दिन आवंटित किया जाता है। मूल्यांकन की तैयारियों में स्थान की व्यवस्था व यंत्र, उपकरण और अन्य संबंधित सामग्रियों को संकलित किया जाता है। विद्यार्थी निर्देशानुसार सहजता से उसी समय कुछ सृजित करें।

विद्यार्थियों के सीखने का स्तर	संख्यात्मक माप	श्रेणी
प्रारंभिक	1	ई
विकासशील	2	डी
आशाजनक	3	सी
कुशल	4	बी
उत्कृष्ट	5	ए

मूल्यांकन के मापदंड पाठ्यचर्या लक्ष्य (सी.जी.) पर आधारित हैं और दक्षताएँ (सी) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 पर आधारित है। संदर्भ के लिए क्यू.आर. कोड का उपयोग कीजिए।

रचनात्मक मूल्यांकन

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	दृश्य कला में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 1	सी-1.1	प्रतिदिन के अनुभवों की अभिव्यक्ति	1. अपने प्रतिदिन के अवलोकन के आधार पर कलाकृतियाँ बनाते हैं।	1, 2, 3		
			2. रंगों और भावनाओं के बीच के संबंधों पर चर्चा करते हैं।	2		
			3. रंगों को मन की स्थिति और भावनाओं से जोड़ते है।	2		
	सी-1.2	सहभागिता और सामूहिक कार्य	4. चित्र बनाते समय साथियों के साथ सहयोग करते हैं।	3		
			5. कलाकृति बनाते और प्रदर्शित करते समय एक-दूसरे की सहायता करते हैं।	सभी		
सी.जी. 2	सी-2.1	लकीर के फकीर को जानना	6. प्रकृति चित्रण के लिए प्रयुक्त रूढ़िबद्ध रूपों को पहचानते हैं।	2, 3		
			7. लोगों का चित्रण करते समय जेंडर रूढ़िवादिता को पहचानते हैं।	3		
	सी-2.2	कल्पना और रचनात्मकता	8. वस्तुओं, प्रकृति और लोगों की सूक्ष्मताओं का सूक्ष्म अवलोकन करते हैं।	1, 2, 3		
			9. विभिन्न जेंडर के लोगों और भूमिकाओं में वेशभूषा को दर्शाते हैं।	3		
			10. कागज, शिल्प और मुहरों से स्वयं के लिए समानाकृति और विन्यास बनाते हैं।	4, 5		

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	दृश्य कला में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 3	सी-3.1	सामग्री, उपकरण और तकनीक का उपयोग	11. पेंसिल से प्रकाश और छाया बनाते हैं।	1, 2		
			12. प्रतिदिन की वस्तुओं का चित्र बनाते समय परिप्रेक्ष्य का प्रयोग करते हैं।	1		
			13. किसी भी चुने गए माध्यम से रंग आभा और छाया बनाते हैं।	2		
			14. कलाकृति के लिए विभिन्न सामग्रियों और सतहों का प्रयोग करते हैं।	2		
			15. स्वयं के टिकटों और मुहरों का उपयोग करके चित्राकृति बनाते हैं।	5		
	सी-3.2	तैयारी से लेकर प्रस्तुतीकरण तक की कार्य प्रक्रिया	16. फ्लिपबुक, पेपर शिल्प या प्राकृतिक रंग तैयार करते समय अनुक्रमिक चरणों का पालन करते हैं।	1, 2, 4		
			17. मुहरें बनाते समय विचारों को संशोधित कर प्रयोग करते हैं।	5		
सी.जी. 4	सी-4.1 और सी-4.2	स्थानीय और क्षेत्रीय कला रूप और कलाकारों का ज्ञान	18. विभिन्न शैलियों में बुद्ध के चेहरे की विशेषताओं की तुलना करते हैं।	3		
			19. परंपरागत रूप से प्रयुक्त सामग्री, उपकरण और सतहों का वर्णन करते हैं।	2		
			20. कलाकारों और कला परंपराओं का नाम स्मरण रखते हुए, उनके कार्यों का वर्णन करते हैं।	सभी		
दृश्य कला में मध्यावधि रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						
दृश्य कला में वार्षिक रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	संगीत कला में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 1	सी-1.1	प्रतिदिन के अनुभवों की अभिव्यक्ति	1. ध्वनि और शरीर की थाप का उपयोग करके भावनाओं, (जैसे— चिंता, भय, आश्चर्य, प्रसन्नता, क्रोध आदि से संबंधित भावनाओं) का वर्णन करते हैं।	6		
			2. विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करने वाले गीतों को पहचानते है।	6		
			3. ध्वनि का उतार-चढ़ाव, गतिशीलता, लय और भावनाओं के बीच संबंध पर चर्चा करते हैं।	6		
	सी-1.2	सहभागिता और दल भावना	4. परिस्थिति को व्यक्त करने के लिए सीखे गए गीतों और संगीत तत्वों का उपयोग कर सरल कथानक बनाने के लिए साथियों के साथ सहयोग करते हैं।	6		
			5. विभिन्न भावनाओं के लिए गीतों के साथ एक विषय आधारित गीत शृंखला बनाते हैं।	6, 7		
सी.जी. 2	सी-2.1	रूढ़िबद्धता को पहचानना	6. संगीत में रूढ़िबद्धता के उदाहरण देते हैं।	10		
			7. देश की सांस्कृतिक विविधता का उत्सव मनाने वाले सीखे और सुने हुए गीतों पर चर्चा करते और गाते हैं।	10		
			8. व्यक्तिगत रूप से प्रेरित करने वाले गीतों पर चर्चा करते हैं।	11		
	सी-2.2	कल्पना और रचनात्मकता	9. एक विषय पर आधारित सरल गीत लिखने का प्रयास करते हैं।	10		
			10. किसी भी गीत में प्रमुख भाव की पहचानकर, उनके कारणों पर चर्चा करते हैं।	10		
			11. सरल उपकरण बनाने के लिए साथियों के साथ कार्य करते हैं और इसकी सामूहिक प्रस्तुति देते हैं।	7		

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	संगीत कला में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 3	सी-3.1	सामग्री, उपकरण और तकनीक का उपयोग	12. लकड़ी, धातु, तार, मिट्टी के बर्तन, जैसी सामग्रियों पर आधारित संगीत वाद्ययंत्रों की पहचान करते हैं और जब संभव हो, तो बनाते हैं।	7		
			13. कक्षा में निर्मित या उपस्थित उपकरणों को उपयोगिता (लय या संगीत माधुर्य) के आधार पर वर्गीकृत करते हैं।	7		
			14. उपलब्ध बैकिंग ट्रैक का उपयोग करने और सीखे हुए गीत गाने का प्रयास करते हैं।	9		
	सी-3.2	तैयारी से लेकर प्रस्तुतीकरण तक की कार्य प्रक्रिया	15. विभिन्न धार्मिक परंपराओं से सीखे गए गीत प्रस्तुत करते हैं।	9		
			16. स्थानीय गीत या पूरे भारत से गीत चुनने के लिए साथियों के साथ कार्य करते हैं।	9		
			17. दर्शकों के समक्ष गीत प्रस्तुत करते हुए अपनी रुचि की व्याख्या करते हुए परिचय देते हैं।	9		
सी.जी. 4	सी-4.1 और सी-4.2	स्थानीय और क्षेत्रीय कला रूप और कलाकारों का ज्ञान	18. उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय संगीत में विभिन्नताओं की पहचान करते हैं।	8		
			19. कर्नाटक और हिंदुस्तानी परंपराओं के गीत गाने का प्रयास करते हैं।	8		
			20. स्थानीय या राष्ट्रीय कलाकारों के नाम स्मरण करते हुए, उनके कार्यों का वर्णन करते हैं।	8		
संगीत में मध्यावधि रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						
संगीत में वार्षिक रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	नृत्य और चाल में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 1	सी-1.1	साधारण दैनिक अनुभवों की अभिव्यक्ति	1. दैनिक दिनचर्या की क्रियाओं को शारीरिक संचलनों से दर्शाते हैं।	12		
			2. दैनिक गतिविधियों को दर्शाने के लिए लय और मुद्राओं का संयोजन करते हैं।	12		
			3. अपने परिवेश में नृत्य रूपों की पहचान करते हैं।	14		
	सी-1.2	सहयोग और सामूहिक गतिविधि	4. कोरियोग्राफ संचलन क्रम को संरचित करने के लिए साथियों के साथ सहयोग करते हैं।	12		
			5. गति और लय के साथ विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ बनाते हैं।	13		
सी.जी. 2	सी-2.1	रूढ़िबद्धता की पहचान करना	6. नृत्य में जेंडर रूढ़िबद्धता का वर्णन करते हैं।	13		
			7. सभी नृत्यों और संचलनों को करने में खुलापन दर्शाते हैं।	13		
			8. नृत्य बाधाओं को तोड़ने पर आधारित एक परियोजना प्रस्तुत करते हैं।	13		
	सी-2.2	कल्पना और रचनात्मकता	9. सरल संदेश देने के लिए हाथों का उपयोग करते हैं।	12		
			10. नृत्य मुद्राओं में विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की कल्पना करते हैं।	13		
			11. नृत्य के लिए सामग्री और आभूषण बनाते और डिजाइन करते हैं।	14		

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	नृत्य और चाल में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 3	सी-3.1	सामग्री, उपकरण और तकनीक का उपयोग	12. रीढ़ की हड्डी के झुकाव इत्यादि शारीरिक मुद्रा का प्रदर्शन करते हैं।	12		
			13. नवरस के आधार पर चेहरे के भावों के लिए भावनाओं को दर्शाते हैं।	12		
			14. सामग्री के प्रवेश और निकास के लिए प्रदर्शन स्थान की पहचान करते हैं।	13		
			15. विभिन्न नृत्य शैलियों में संचलन, मुद्राओं और संकेतों में समानता की पहचान करते हैं।	14		
	सी-3.2	तैयारी से लेकर प्रस्तुतीकरण तक की कार्य प्रक्रिया	16. नृत्य प्रदर्शन के लिए सांगीतिक उपकरणों, संचलन और सामग्री को एक साथ लाते हैं।	14		
			17. दिए गए प्रसंग के लिए एक सरल नाट्य तैयार करते हैं।	14		
			18. संगीत के साथ मुद्राओं, संचलन और चेहरे के भावों का अभ्यास करते हैं।	14		
सी.जी. 4	सी-4.1 और सी-4.2	स्थानीय या क्षेत्रीय कलारूपों और कलाकारों का ज्ञान	19. भारत के कुछ शास्त्रीय नृत्य शैलियों के नाम बताते हैं।	12		
			20. विभिन्न लोक नृत्यों में जेंडर मानदंडों का विश्लेषण करते हैं।	13		
			21. विभिन्न भारतीय राज्यों के नृत्य रूपों की चर्चा करते हैं।	15		
नृत्य में मध्यावधि रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						
नृत्य में वार्षिक रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	रंगमंच में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 1	सी-1.1	दैनिक अनुभवों की अभिव्यक्ति	1. अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए शब्द खोजने का प्रयास करते हैं।	16, 17		
			2. दैनिक जीवन के द्वंद्व की स्थितियों को पहचानते हैं।	16, 17		
			3. नवरसों को उनके दैनिक अनुभवों से जोड़ते हैं।	16		
	सी-1.2	सहयोग और सामूहिक गतिविधि	4. प्रस्तुति देने के लिए साथियों के साथ सहयोग करते हैं।	17, 19		
			5. दो या दो से अधिक पात्रों का कठपुतली प्रदर्शन बनाते हैं।	19, 20		
सी.जी. 2	सी-2.1	रूढ़िबद्धता की पहचान करना	6. किसी कहानी में पात्रों की विशिष्ट विशेषताओं की पहचान कराते हैं।	17		
			7. सभी जेंडर के पात्रों के लिए पोशाक और शृंगार की कल्पना करते हैं।	17		
	सी-2.2	कल्पना और रचनात्मकता	8. स्थितियों, दृश्यों और पात्रों का सूक्ष्म विवरण की कल्पना करते हैं।	17		
			9. स्थितियों और सरल कहानियों की कल्पना करते हैं और उन पर प्रतिक्रिया देते हैं।	16		
			10. स्थानीय संस्कृति और अपनी भावनाओं के आधार पर मुखौटे बनाते हैं।	16		

सी.जी.	सी	सामान्य मानदंड	रंगमंच में विशिष्ट अधिगम परिणाम	अध्याय	शिक्षक	स्वयं
सी.जी. 3	सी-3.1	सामग्री, उपकरण और तकनीकी का उपयोग	11. विभिन्न प्रकार की कठपुतलियाँ (अँगुली, जुर्राब, छड़ी और छाया) बनाते हैं।	19		
			12. पोशाक, शृंगार और मंच सज्जा तैयार करते हैं और उन्हें एक प्रस्तुति के लिए जोड़ते हैं।	17, 19, 20		
			13. कागज और गत्ते का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के मुखौटे बनाते है।	16		
			14. पात्रों के लिए आवाज को बदलकर प्रयोग करते हैं।	19		
			15. चेहरे के भाव, आवाज और क्रिया के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करते हैं।	16		
	सी-3.2	तैयारी से प्रस्तुति तक कार्य प्रक्रिया	16. कहानियों को संवादों और वार्तालापों में संशोधित करते हैं।	17, 19 ,20		
			17. एक कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के रूप में संरचित करते हैं।	17, 19, 20		
			18. संचलनों और संवाद बोलने का पूर्वाभ्यास करते हैं।	19, 20		
			19. दर्शकों के लिए एक संपूर्ण प्रस्तुतीकरण करते हैं।	19, 20		
सी.जी. 4	सी-4.1 और सी-4.2	स्थानीय या क्षेत्रीय कला रूपों और कलाकारों का ज्ञान	20. कहानियों और वेशभूषा के प्रकारों में अंतर की पहचान करते हैं।	18, 19		
			21. लोकप्रिय रंगमंच कंपनियों के नाम स्मरण रखते हैं।	18		
			22. आज के रंगमंच की तुलना कंपनी रंगमंच या पारंपरिक कठपुतली से करते हैं।	18, 19		
रंगमंच में मध्यावधि रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						
रंगमंच में वार्षिक रचनात्मक मूल्यांकन समुच्चय						

संकलनात्मक मूल्यांकन

दृश्य कला	संकलनात्मक मूल्यांकन के उदाहरण	मूल्यांकन के लिए मानदंड
वैयक्तिक	• आपके लिए पतंग का क्या अर्थ है? • अपनी पसंद के किसी भी आकार में एक पतंग की रचना कीजिए (नियमित या अनियमित)। • पतंग को बनाने के लिए अपने आस-पास उपलब्ध सामग्री का प्रयोग कीजिए। • इसे अपनी पसंद के चित्रों, रंगों या कोलाज से सजाएँ। • इसे लटकाने या हवा में उड़ाने के लिए एक धागे से बाँधें।	प्रतिदिन के अनुभव की व्यक्तिगत रूप से अभिव्यक्ति। कल्पनाशीलता और रचनात्मकता। किसी अवधारणा के लिए उपयुक्त सामग्रियों का चयन करना। उपयुक्त तकनीकों का प्रयोग कर समस्याओं का समाधान। प्रस्तुतीकरण
समूह (3 – 4)	• अपनी सभी पतंगों को प्रदर्शित करने के लिए किसी उपयुक्त स्थान का चयन कीजिए। • अपने मित्रों से कहिए कि वे प्रदर्शित पतंगों में से आपकी पतंग पहचानें और उस पर चर्चा कीजिए।	सहभागिता और समूह कार्य। आलोचनात्मक चिंतन।
संगीत	**संकलनात्मक मूल्यांकन के उदाहरण**	**मूल्यांकन के लिए मानदंड**
वैयक्तिक	• जब कोई गाना बजाया जाता है, तो विद्यार्थी मुख्य भाव की पहचान करते हैं। • बजाए जा रहे गीत में नाद, गतिशीलता, स्वर, बोल और वाद्ययंत्र किस प्रकार मुख्य भाव को व्यक्त करने में सहायता करते हैं, चर्चा कीजिए। • गीत में लय चक्र को पहचानिए और शरीर के अंगों से ताल देते हुए एक सरल लय बनाने का प्रयास कीजिए।	विभिन्न रसों या भावों का ज्ञान। संगीत के तत्वों एवं भावों के बीच का संबंध। पैरों की थाप या ताली से लय का निर्माण करना। सरल लय पैटर्न बनाना।
समूह (3 – 4)	विद्यार्थी एक कहानी चुनते हैं और उसे जीवंत रूप से प्रस्तुत करने के लिए गीतों का उपयोग करते हैं।	संगीत के चयन में सक्रिय रूप से भाग लेना। अंततः दर्शकों के सामने प्रदर्शन प्रस्तुति देना।

नृत्य	संकलनात्मक मूल्यांकन के उदाहरण	मूल्यांकन के लिए मानदंड
वैयक्तिक	• कोई एक भाव दिखाओ और उससे संबंधित रस का नाम बताओ। • दिए गए दो या तीन हस्त मुद्रा का प्रदर्शन कीजिए। • किसी एक कल्पनाशील हस्त मुद्रा का निर्माण कीजिए। • परियोजना कार्य।	संचलन के शरीर का कल्पनाशील प्रयोग। रीढ़ की हड्डी में मोड़ का उपयोग। पैरों की लयबद्ध थाप देना। भुजाओं और पैरों का समन्वय।
समूह (3 – 4)	• नृत्य और लय के तारतम्य। • हस्त के साथ संवाद या वार्तालाप कीजिए।	समूह के साथ लय स्थापित करना। कोरियोग्राफी में सहभागिता का प्रयास।
रंगमंच	**संकलनात्मक मूल्यांकन के उदाहरण**	**मूल्यांकन के लिए मानदंड**
वैयक्तिक	• शिक्षक द्वारा एक भाव या रस दिया जाता है। • बच्चे नाम के साथ एक पात्र का निर्माण करते हैं। • संबंधित भाव में दो परिस्थितियों का वर्णन कीजिए। • उस पात्र के लिए वस्त्र-विन्यास व रूप-सज्जा कीजिए।	भाव और रस का ज्ञान। जीवन से इसका संबंध और इसके अनुप्रयोग को समझता है। इसे प्रस्तुत करने का आत्मविश्वास (मौखिक या लिखित)।
समूह (3 – 4)	• संवाद के साथ एक साधारण कहानी का निर्माण कीजिए जिसमें आरंभ-मध्य-अंत स्पष्ट हो। • कहानी में दो पात्रों को प्रतिनिधित्व करने वाले दो मुखौटों का निर्माण कीजिए।	सहजता समस्या समाधान। समूह कार्य और नेतृत्व कौशल। कथानक और मुखौटों की समझ।

मध्यावधि अंक	रचनात्मक समुच्चय अंक	योगात्मक समुच्चय अंक	कुल
दृश्य कला			
संगीत			
नृत्य			
रंगमंच			
कला शिक्षा में कुल			
विद्यार्थी की शक्तियों पर टिप्पणियाँ			
सुधार के क्षेत्रों पर टिप्पणियाँ			

वार्षिक अंक	रचनात्मक समुच्चय अंक	योगात्मक समुच्चय अंक	कुल
दृश्य कला			
संगीत			
नृत्य			
रंगमंच			
कला शिक्षा में कुल			
विद्यार्थी की शक्तियों पर टिप्पणियाँ			
सुधार के क्षेत्रों पर टिप्पणियाँ			

टिप्पणी

टिप्पणी

टिप्पणी